
₹25
हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका
कादम्बिनी
अक्टूबर 2019

With Best Compliments From :

DILKUSHA NURSING HOME PVT. LTD

94A, Dilkusha Street, Kolkata-700 017
Phone : (033) 2287 4318, 22803639, 2290 1971
Fax : (033) 2290 1970
E-mail : ddilkusha@gmail.com

- This is a 36 bedded Modern Nursing Home including 6 bedded Elegant INTENSIVE CARE UNIT general surgery LAPAROSCOPIC, GALL BLADDER, APPENDEX AND ORTHOPAEDIC Surgery with latest C-ARM IMAGE INTENSIFIER and also provision for all categories of patients including Maternity and Modern Nursery attached with full fledged DIAGNOSTIC DIVISION equipped with latest U.S.G., X-Ray machines and PATHOLOGY UNIT etc.
- Maxillofacial & Microvascular Reconstruction of the Oro-Facial Region with Radial Forearm Flap. Plastic and Cosmetic Surgery Piles Removal by imported IRC etc. are regularly done. Specialists in all streams including Oncolgy, Urology, Gastroenterology etc.
- Polyclinic, In-house Medicine Shop, 24-hours expert Doctors, RMOs, Matrons, Trained Nursing Staff.
- charges moderate.

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

वर्ष 29 अंक 04 अक्तूबर 2019

क्या ये लोग देखते नहीं हैं कि हम इस भू-भाग पर चले आ रहे हैं और इसकी परिधी को हर ओर से सिकोड़ते चले आते हैं ? अल्लाह शासन कर रहा है, कोई उसके फ़ैसलों का पुनरावलोकन करने वाला नहीं । –क़ुरआन

संपादक

डॉ० मुहम्मद अहमद

अपने विचार, लेख, रचनाएं भेजने एवं संपादकीय मामलों के लिए लिखें–

संपादक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल editorkanti@yahoo.com

* * *

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए लिखें–

प्रबंधक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल managerkantidelhi@gmail.com

* * *

फ़ोन संपादकीय एवं प्रबंधकीय

011-26949430, 09818799223

सहयोग राशि

एक प्रति रु० 25/- विशेषांक रु० 60/-

वार्षिक रु० 270/-, दो वर्ष 500/-

पांच वर्ष 1100/-, आजीवन रु० 6000/-

सऊदी अरब और खाड़ी के देशों से–110 रियाल

यूरोप व अमेरिका से–40 US डॉलर

वेब : **www.kanti.in**

चेक / ड्राफ्ट **'कान्ति'** के नाम से बनवाएं

वैचारिकी

सदक़ा

(सदक़ा बलाओं को टालता और बुरी मौत से बचाता है। –हदीस)

एक था व्यावसायी फैला था उसका कारोबार
फिर अचानक एक दिन वह पड़ गया बीमार
समझा उसने होगा यूं ही मौसमी बुख़ार
दवा लेने से भी मगर नहीं हुआ उपचार
डॉक्टरों ने फिर करायी तरह-तरह की जांच
उसे है घातक रोग एक, कहने लगी यह जांच
था नहीं जिस रोग अब कोई भी उपचार
धन सम्पत्ति सब थी अब उसके लिए बेकार
याद आने लगे उसे 'मिली' और 'आनन्द'
वह घबराया देखकर सारे रास्ते बन्द
बैठा था वह एक दिन एक सज्जन के पास
उसकी व्यथा सुनकर भी नहीं हुए वे निराश
बोले सज्जन अब तुम अपने गांव लौट कर जाओ
गांव वालों के साथ ही अपना पूरा समय बिताओ
उनकी सेवा को बना लो अब तुम अपना कर्म
ईश्वर से मांगो क्षमा और निभाओ धर्म
बनवादो छप्पड़ किसी का और किसी का हाल
बीज किसी का मंगवा दो और किसी का खल
किसी के बच्चे को स्कूल का रास्ता दिखला दो
शादी किसी ग़रीब की बच्ची की करवा दो
उसके मन को भ गया सज्जन का यह सुझाव
आ गया वह लौट कर शहर से अपने गांव
गांव वालों ने दिया उसे प्रेम और प्यार
रहते उसके साथ ही अक्सर वे दो-चार
वह भी रहता हर मुद्दे पर ग्रामीणों के साथ
सबकी सेवा के लिए बढ़ा के रखता हाथ
सबका प्यारा हो गया, देते उसको सब दुआ
ग्रामीणों की सेवा में उसको आने लगा मज़ा
कई महीने बीत गये, सीमा हो गयी पार
पिछले दो हफ़्तों से उसको आया नहीं बुख़ार
एक दिन आकर शहर डॉक्टरों से वह मिला
डॉक्टर को जांच में रोग न कोई अब मिला
रब के बन्दों के हक़, वह था करने लगा अदा
गिड़गिड़ाया रब के आगे, हो गयी रब की दया ।

● मुशर्रफ़ अली



कहां क्या है ?

सदक़ा (वैचारिकी)	–मुशर्रफ़ अली	3
क़ुरआन ज्योति		5
हदीस मंजरी		6
परिवार नियोजन के नारे का सच (संपादकीय)		7
सृष्टि की रचना : ईश्वर के अस्तित्व का प्रदर्शन (आस्था)	–जलालुद्दीन एम॰ ज़ाराबोज़ो	9
हज़रत सईद बिन आमिर जुमही रज़ि॰ (नेकी के सिपाही)	– अब्दुर्रहमान राफ़त पाशा	13
बढ़ती जनसंख्या : वरदान या अभिशाप?	–संपादन प्रभाग	17
निपूते (कहानी)	–प्रवीण कुमार सहगल	21
बढ़ती जनसंख्या के लाभ (विचारार्थ)	–डॉ॰ भरत झुनझुनवाला	24
मुहम्मद (सल्ल॰) की नुबूवत के स्पष्ट प्रमाण (विशेष आयोजन)	–मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ां	26–27
शराब से समाज में हर स्तर पर तबाही (स्वास्थ्य-चर्चा)	–भारत डोगरा	33
यूरोप में विरान होते गिरजाघर		35
कन्या भ्रूण-हत्या : एक सामाजिक अभिशाप (महिला जगत)	–नुज़हत यासमीन	37
'हे राम !' 'जय श्रीराम' तक (सामयिक)	–वेदव्यास	39
भारतीय उपमहाद्वीप पर संभावित ख़तरे (पर्यावरण)	–मुहम्मद असलम ख़ान	41
सत्तावादी पूंजीवाद की लोकप्रियता (विचार)	–मुज़फ़्फ़र एजाज़	43
सुहागन (कहानी)	–अबू इबराहीम	45
जो तटस्थ हैं समय लिखेगा उनका भी अपराध (गांधी स्मृति)	–सुभाष गाताडे	47
बालवीथी		49

कुरआन ज्योति

(5) देखो, ये लोग अपने सीनों को मोड़ते हैं ताकि उससे छिप जाएं।[5] ख़बरदार ! जब ये कपड़ों से अपने आपको ढांपते हैं, अल्लाह इनके छिपे को भी जानता है और खुले को भी। वह तो उन भेदों को भी जानता है जो सीनों में हैं। (6) धरती में चलने वाला कोई जीव ऐसा नहीं है जिसकी रोज़ी अल्लाह के ज़िम्मे न हो और जिसके बारे में वह न जानता हो कि कहां वह रहता है और कहां वह सौंपा जाता है[6], सब कुछ एक साफ़ दफ़्तर में अंकित है।

(7) और वही है जिसने आसमानों और ज़मीन को छह दिनों में पैदा किया–जबकि इससे पहले उसका अर्श (सिंहासन) पानी पर था[7]–ताकि तुमको आज़माकर देखे कि तुममें कौन भले कर्म करने वाला है।[8] अब अगर ऐ नबी ! तुम कहते हो कि लोगो ! मरने के बाद तुम दोबारा उठाये जाओगे, तो इन्कारी तुरंत बोल उठते हैं कि यह तो खुली जादूगरी है।[9] –क़ुरआन, 11:5-7

---

5. मक्के में जब नबी (सल्ल०) की दावत (सन्देश) की चर्चा हुई तो बहुत से लोग वहां ऐसे थे जो विरोध में तो कुछ बहुत अधिक सक्रिय न थे, मगर आपकी दावत से सख़्त बेज़ार थे। उन लोगों का रवैया यह था कि आपसे कतराते थे, आपकी किसी बात को सुनने के लिए तैयार न थे, कहीं आपको बैठे देखते तो उलटे पांव फिर जाते, दूर से आपको आते देख लेते तो दिशा बदल देते या कपड़ों की ओट में मुंह छिपा लेते, ताकि उनसे आपका आमना-सामना न हो जाए और आप उन्हें संबोधित करके कुछ अपनी बातें न कहने लगें। इसी प्रकार के लोगों की ओर यहां संकेत किया गया है कि ये लोग सत्य का सामना करने से घबराते हैं और शुतुरमुर्ग़ की तरह मुंह छिपाकर समझते हैं कि वह वास्तविकता ही ग़ायब हो गयी जिससे उन्होंने मुंह छिपाया है। हालांकि तथ्य अपनी जगह मौजूद है और वह यह भी देख रहा है कि ये मूर्ख इससे बचने के लिए मुंह छिपाये बैठे हैं।

6. अर्थात जिस अल्लाह के ज्ञान का हाल यह है कि एक-एक चिड़िया का घोंसला और एक-एक कीड़े का बिल उसको मालूम है और वह उसी की जगह पर उसको जीवन-सामग्री पहुंचा रहा है और जिसको हर क्षण इसकी ख़बर है कि कौन-सा जीव कहां रहता है और कहां अपनी जान दे देता है, उसके बारे में अगर तुम यह विचार करते हो कि इस तरह मुंह छिपा-छिपाकर या कानों में उंगलियां ठूंसकर या आंखों पर परदा डालकर तुम उसकी पकड़ से बच जाओगे तो बड़े नासमझ हो। सत्य की ओर बुलाने वाले से तुमने मुंह छिपा भी लिया तो आख़िर इससे क्या मिलने वाला ? क्या अल्लाह से भी तुम छिप गये ? क्या अल्लाह यह नहीं देख रहा है कि एक आदमी तुम्हें सच्ची बात बताने में लगा हुआ है और तुम यह यत्न कर रहे हो कि किसी तरह उसकी कोई बात तुम्हारे कान में न पड़ने पाये ?

(शेष पृष्ठ 20 पर)

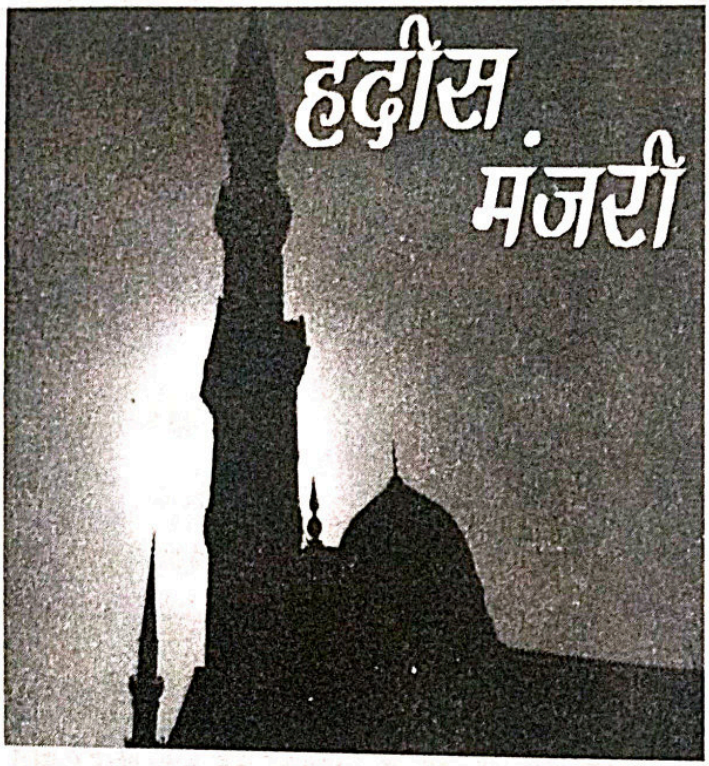

प्रात:काल और संध्या समय का स्मरण

● हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "जिस व्यक्ति ने प्रात:काल भी और संध्या-समय भी 'सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही' (महिमावान है अल्लाह और प्रशंसा उसी के लिए है) सौ बार कहा, तो क़ियामत के दिन कोई व्यक्ति उससे उत्तम कर्म लेकर नहीं आएगा सिवाय उस व्यक्ति के जिसने उसी की तरह इसे पढ़ा या इससे ज़्यादा पढ़ा ।" –मुस्लिम

● हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) से रिवायत है । वे कहते हैं कि एक व्यक्ति नबी (सल्ल॰) के पास आया और उसने कहा : "ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰), मुझे बिच्छू से कितनी तकलीफ़ पहुंची जिसने मुझे विगत रात्रि में डंक मारा । आपने कहा : "यदि तुम संध्या-समय यह पढ़ लेते 'अउज़ु बिकलिमतिल्लाहि-ताम-मति मिन शर्रि मा ख़लक़' (मैं अल्लाह के पूर्ण शब्दों की पनाह मांगता हूं हर उस चीज़ की बुराई से बचने के लिए जिसे उसने पैदा किया है, तो यह तुमको नुक़सान न पहुंचाता ।" –मुस्लिम

● हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) से रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) प्रात:काल यह पढ़ते : "ऐ अल्लाह, हमने तेरे साथ सुबह की, और तेरे साथ शाम की, और हम तेरे साथ ज़िन्दा हैं, और तेरे नाम के साथ मरेंगे और (मरने के बाद) तेरी ही तरफ़ उठकर जाएंगे ।" और जब शाम होती, तो यह कहते : "ऐ अल्लाह, हमने तेरे साथ शाम की, हम तेरे साथ ज़िन्दा हैं, हम तेरे नाम के साथ मरेंगे और (मरने के बाद) तेरी ही तरफ़ उठकर जाएंगे ।" –अबू दाऊद, तिरमिज़ी

● हज़रत इब्न मसऊद (रज़ि॰) से रिवायत है । वे कहते हैं कि संध्या-समय नबी (सल्ल॰) यह पढ़ते : "हमने शाम की और अल्लाह की सारी बादशाही ने शाम की, और प्रशंसा अल्लाह के लिए है, अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं, वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं ।" रावी कहते हैं : मेरा ख़्याल है कि आपने इनके साथ यह भी पढ़ा : "उसी की बादशाही है और उसी की प्रशंसा है और उसे हर चीज़ पर पूर्ण सामर्थ्य प्राप्त है । मेरे रब, मैं तुझसे इस रात की भलाई और इसके पश्चात की भलाई की याचना करता हूं । और मैं इस रात की बुराई और इसके पश्चात की बुराई से बचने के लिए तेरी पनाह मांगता हूं ।" मेरे रब, मैं आलस से और निकृष्ट वृद्धावस्था से बचाव के लिए तेरी पनाह मांगता हूं, मेरे रब, मैं दोज़ख़ की यातना और क़ब्र की यातना से बचने के लिए तेरी पनाह मांगता हूं ।" और जब प्रात:काल होता, तो उस समय भी आप यही पढ़ते : "हमने सुबह की और अल्लाह की बादशाही ने सुबह की ।" –मुस्लिम

● हज़रत अब्दुल्लाह बिन ख़ुबैब (रज़ि॰) से रिवायत है । वे कहते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने मुझसे कहा : "संध्या समय और प्रात:काल सूरह अल-इख़्लास, सूरह अल-फ़लक़ और सूरह अन-नास तीन-तीन बार पढ़ लिया करो, यह हर मामले में तुम्हारे लिए काफ़ी होंगी ।" –अबू दाऊद, तिरमिज़ी

('रियाज़ुस्सालिहीन' से)

इस्लाम-परिचय : हिन्दी वेबसाइटें

www.islamdharma.org
www.islamic videos.com
www.islamicwebdunia.com
www.quranhindi.com

संपादकीय

परिवार नियोजन के नारे का सच

परिवार नियोजन की विचारधारा को 1958 में अमेरिका द्वारा स्थापित की गयी । स्थापना से पहले सुरक्षा परिषद में इस पर कम से कम तीन दर्जन सम्मेलन, सभाएं और गोष्ठियां आयोजित की गयीं । परिवार नियोजन बड़ा ही सुन्दर और लुभावना शब्द मालूम होता है । हर व्यक्ति अपने परिवार को नियोजित रखना चाहता है और यह उचित और तार्किक भी है । लेकिन इसका नकारात्मक पहलू यह है कि यह ब्रिटिश अर्थशास्त्री रॉबर्ट माल्थस के इस सिद्धांत पर आधारित है कि संसार में संसाधन सीमित हैं और जनसंख्या असीम । जनसंख्या अगर इसी रफ़्तार से बढ़ती रही तो कम संसाधन अधिक लोगों में विभाजित हो जाएगा । इसके नतीजे में स्पष्ट है कि हर व्यक्ति का हिस्सा कम से कम होता जाएगा । अत: जनसंख्या को नियंत्रित करना ज़रूरी है ।

सच्चाई यह है कि यह एक स्वार्थपूर्ण और भ्रामक मान्यता है । दुनिया में जनसंख्या के पोषण के लिए संसाधनों की कमी की समस्या नहीं है, समस्या है संसाधनों के अन्यायपूर्ण वितरण की । दूसरी ओर यह भी सच है कि आज ज़मीन पहले की तुलना में 20 गुना अधिक फ़सल उगा रही है । इसके अलावा दुनिया में उपजाऊ भूमि का एक बड़ा भाग अभी भी इस्तेमाल में नहीं आया है, उसे इस्तेमाल किया जाना बाक़ी है । 1961 ई॰ में अमेरिका की एक थिंक टैंक संस्था, 'जॉन हापकिंस इंस्टीट्यूट' को यह ज़िम्मेदारी सौंपी गयी कि वह जनसंख्या नियंत्रण के उपायों की खोज करें । संस्था ने कंटोम, गर्भनिरोधक गोलियां, नसबंदी, कापर टी, आदि कई उपाय खोज निकाले । अनचाहे गर्भ से छुटकारा पाने के लिए गर्भपात के भी कई तरीक़े ढूंढ़ निकाले गये । यूरोप और अमेरिका में इन तरीक़ों का ज़बरदस्त स्वागत हुआ और दुनिया भर में ये तरीक़े अपनाए जाने लगे । अलबत्ता मुस्लिम देशों में इन तरीक़ों पर विशेष ध्यान नहीं दिया गया । यहां तक कि भारत जैसे देशों में रहने वाली मुस्लिम आबादी भी इनसे दूर ही रही । 20-25 वर्षों में ही इसके परिणाम दिखायी पड़ने लगे । पश्चिमी और विकसित कहे जाने वाले देशों की जनसंख्या बहुत तेज़ी से कम होने लगी । पांच दशक बीतने के बाद आज स्थिति यह है कि परिवार नियोजन अपनाने वाले देश ख़ुद को विनाश की कगार पर खड़ा महसूस कर रहे हैं । जापान, जर्मनी, फ्रांस, स्वीडन, स्पेन, आदि देशों में तो स्थिति बहुत ही गंभीर है । जापान, जिसे अब बूढ़ों का देश भी कहा जाने लगा, वहां शहर के शहर वीरान हो चुके हैं । सरकारी तौर पर 900 टाउन को 'घोस्ट टाउन' (प्रेतों का क़स्बा) घोषित किया जा चुका है ।

घटती आबादी से परेशान यूरोपीय देश अब आबादी बढ़ाने के उपायों पर विचार करने को मजबूर हैं । वहां की सरकारें अपने नागरिकों को मातृत्व अवकाश (मेटरनिटी लीव) की तर्ज पर पितृत्व अवकाश (पैटरनिटी लीव) दे रही हैं । पुरुषों को उनके सेवाकाल में 2 वर्षों का पितृत्व अवकाश दिया जाता है, सरकारी तौर पर उन्हें हर तरह की सुविधाएं उपलब्ध करायी जाती हैं और उनसे अपेक्षा की जाती है कि वे अपने घरों पर रहे और अधिक से अधिक बच्चे पैदा करें । ज़्यादा बच्चों की पैदाइश को प्रोत्साहित करने के लिए पश्चिमी देशों में तरह-तरह के उपाय अपनाए जा रहे हैं । अमेरिका में जिसके जितने अधिक बच्चे होते हैं उसे टैक्स में उतनी ही अधिक छूट दी जाती है । इसे ख़ूब प्रचारित भी किया जाता है । जिस परिवार में अधिक बच्चे होते हैं वहां बच्चों की टी शर्ट पर यह लिखा हुआ भी देखा गया है । "I am the tax saver of my father". इसी तरह ऑस्ट्रेलिया में जिस नागरिक के जितने अधिक बच्चे होते हैं, उसे उतनी ही अधिक सरकारी सुविधाएं दी जाती

हैं । पश्चिम जगत को अब यह बात समझ में आ गयी है कि जनसंख्या नियंत्रण की नीति ने उन्हें विनाश के रास्ते पर डाल दिया है । आज स्थिति यह है कि वे अपने देश को चलाने के लिए मानव संसाधन आयात करने पर मजबूर हैं । इसके लिए उन्हें चाहे अनचाहे मुस्लिम देशों की ओर ही देखना पड़ता है । उन्हें यह भी लगने लगा है कि अगर यही स्थिति रही तो मुस्लिम मानव संसाधन दुनिया पर छा जाएगा और दुनिया से उनका वर्चस्व ख़त्म हो जाएगा । इसलिए वे अपनी आबादी को बढ़ाने के उपायों के साथ- साथ मुस्लिम आबादी को रोकने के उपायों में भी लग गये हैं । सी॰आई॰ए॰ की फैक्ट बुक में स्पष्ट किया गया है कि मुस्लिम आबादी को हर हाल में रोकना होगा, नहीं तो वह दिन दूर नहीं जब पश्चिम की शक्ति समाप्त हो जाएगी और मुसलमान फ्रंट सीट पर आ जाएंगे । इसलिए वे विकासशील और अविकसित देशों पर परिवार नियोजन को ज़बरदस्ती थोपने में लग गये हैं । वे परिवार नियोजन को सुन्दर और आकर्षक बनाकर पेश करते हैं और लोग उसकी ओर लपक भी रहे हैं । तरह-तरह के भ्रामक विज्ञापनों के माध्यम से जनता को ग़रीबी से डराया जा रहा है और संसाधनों की कमी का हौवा खड़ा किया जा रहा है । बहुत से देश, जिसमें मुस्लिम देश भी शामिल हैं, पश्चिमी शक्तियों के दबाव में आकर या उनकी धमकी के आगे विवश होकर परिवार नियोजन को अपना भी रहे हैं । उसकी एक मिसाल इंडोनेशिया है, जहां किसी दंपत्ति के तीसरे बच्चे को स्कूलों में दाख़िला नहीं दिया जाता है । यानी उन्हें मजबूर किया जाता है कि वे दो से ज़्यादा बच्चे पैदा न करें । अमेरिका की ओर से अफ़ग़ानिस्तान, इराक़, सीरिया और दूसरे मुस्लिम देशों की तबाही का मक़सद जहां एक और संसाधनों को हड़पना है, वहीं दूसरी ओर मुस्लिम जनसंख्या ह्रास Depopulation भी है ।

अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया, "जो अल्लाह के डर से रोता है वह दोज़ख़ में नहीं जाएगा, जब तक कि थन में दूध वापस नहीं आता । जिसके पैर अल्लाह के काम में सने हों, उसे दोज़ख़ की आग कभी छू नहीं सकती ।"

(तिरमिज़ी)

A WELL WISHER

PUNJAB

सृष्टि की रचना : ईश्वर के अस्तित्व का प्रदर्शन

■ जमालुद्दीन एम॰ ज़ाराबोज़ो

हमारी सृष्टि विभिन्न तत्वों का मिश्रण है और विभिन्न तत्वों से मिलकर बनी है । इसमें एक आकाश गंगा है जिसमें अनगिनत तारे और ग्रह हैं, इनमें सूर्य एक तारा है, इसकी अपनी एक व्यवस्था है जिसको सौर मंडल कहते हैं । जिस धरती पर हम रहते हैं वह भी अनगिनत निर्जीव पदार्थों पर आधारित हैं जैसे पहाड़, जल और थल के भाग । अनगिनत जीवित प्राणी भी यहां पाये जाते हैं, इनमें वनस्पति भी हैं जिनकी अनगिनत प्रजातियां हैं । यह एक पूरा संसार है, और भी न जाने कितनी चीज़ें होंगी जिनकी इन्सान आज भी खोज में लगा हुआ है । यह सब अल्लाह की कारीगरी का नमूना है ।

क़ुरआन दो टूक शब्दों में कहता है कि यह अल्लाह ही है जिसने यह धरती बनायी और आकाशों को पैदा किया । कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं–"उसने आकाश और धरती को सत्यानुकूल पैदा किया है, वह बहुत उच्च है उससे जो ये लोग साझी ठहराते हैं ।" (अन-नह्ल : 3), "उसने आकाशों और धरती को हक़ के साथ पैदा किया । वही दिन पर रात और रात पर दिन को लपेटता है । उसी ने सूर्य और चन्द्रमा को इस प्रकार वशीभूत कर रखा है कि प्रत्येक, एक नियत समय तक चले जा रहा है । जान रखो, वह प्रभुत्वशाली और क्षमा करने वाला है ।" (अज़-ज़ुमर : 5), "अल्लाह हर चीज़ का स्रष्टा है और वही हर चीज़ का निगहबान है ।" (अज़-ज़ुमर : 62)

उसने इस सृष्टि की रचना किस प्रकार की इन्सान इसकी कल्पना भी नहीं कर सकता, उसने जो इसके बारे में जो कुछ फ़रमाया है, वह यह है कि उसके लिए यह कुछ कठिन कार्य नहीं है, उसका तो हाल यह है कि वह जो चाहता है कर गुज़रता है क़ुरआन ने इसका हाल भी बयान कर दिया है–"वह आकाशों और धरती का आविष्कारक है, और जिस बात का वह निर्णय करता है, उसके लिए बस वह आदेश देता है कि "हो जा" और वह हो जाती है ।" (अल-बक़रा : 117)

इसी प्रकार की बातें क़ुरआन में दूसरे स्थान पर भी आयी हैं । जैसे–सूरह यासीन, आयत-82, और सूरह अल-मोमिन, आयत-68, उसने सृष्टि को केवल पैदा ही नहीं किया, बल्कि उसको बनाया संवारा, हर चीज़ का स्थान व मर्तबा और हैसियत मुक़र्रर किया उसका भाग्य बनाया और इन सबकी हर समय निगरानी कर रहा है, अल्लाह ने कहा है–जिसने पैदा किया और साम्य एवं संतुलन स्थापित किया, "जिसने नियति (तक़दीर) बनाई फिर राह दिखायी ।" (अल-आला : 1-3)

अल्लाह फ़रमाता है कि उसने धरती और आकाशों को छह दिनों में पैदा किया, यह बात भी एक से ज़्यादा स्थान पर बयान की गयी है जैसे–"वह अल्लाह ही है जिसने आकाशों और धरती को और उन सारी चीज़ों को जो उनके बीच हैं छह दिनों में पैदा किया और उसके पश्चात कुर्सी पर विराजमान हुआ, उसके सिवा न तुम्हारा कोई समर्थक और सहायक है और न कोई उसके आगे सिफ़ारिश करने वाला, फिर क्या तुम होश में न आओगे ।" (अस-सजदा : 4) यही बात सूरह अल-आराफ़ आयत-54, यूनुस-3, हूद-7 और अल-फ़ुरक़ान-59 में भी बयान की गयी है ।

पिछले पृष्ठों में यह बात पूरी व्याख्या के साथ बयान की जा चुकी है कि इस सृष्टि का स्रष्टा, मालिक और निगहबान एक अल्लाह की ज़ात है इसमें उसका कोई साझी नहीं है, उसको यहां दुहराने की ज़रूरत नहीं है फिर भी कुछ मुख्य बातों की ओर इशारा ज़रूरी महसूस होता है जिन पर चिंतन-मनन लाभदायक होगा । उदाहरण के लिए क़ुरआन

में जहां कहीं भी सृष्टि की उत्पत्ति की बात आयी है उससे पता चलता है कि यह प्रक्रिया विभिन्न कर्मों से होकर गुज़री है ।

क़ुरआन कहता है कि सोचने-समझने वालों के लिए इसमें निशानियां मौजूद हैं, अल्लाह का फ़रमान है–"और वही है जिसने यह धरती फैला रखी है, इसमें पहाड़ों के खूंटे गाड़ रखे हैं और नदियां बहा दी हैं । उसी प्रकार के फलों के जोड़े पैदा किये हैं, और वही दिन को रात से छिपाता है । और सारी चीज़ों में बड़ी निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो सोच-विचार से काम लेते हैं ।" (अर-रअ्द : 3)

"वही है जिसने आकाश से तुम्हारे लिए पानी बरसाया जिससे तुम्हें स्वयं पीने को मिलता है और तुम्हारे जानवरों के लिए भी चारा पैदा होता है । वह उस पानी के द्वारा खेतियां उगाता है और ज़ैतून और खजूर और अंगूर और भिन्न-भिन्न प्रकार के दूसरे फल पैदा करता है । इसमें एक बड़ी निशानी है उन लोगों के लिए जो सोच-विचार करते हैं । उसने तुम्हारी भलाई के लिए रात और दिन को और सूरज और चांद को वशीभूत कर रखा है और सब तारे भी उसी के आदेश से वशीभूत हैं । इसमें बहुत निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो बुद्धि से काम लेते हैं । और ये जो बहुत-सी रंग-बिरंग की चीज़ें उसने तुम्हारे लिए धरती में पैदा कर रखी हैं इनमें भी अवश्य निशानी है उन लोगों के लिए जो शिक्षा लेने वाले हैं ।" (अन-नह्ल : 10-13)

(यहां यह पहलू सामने लाना अनुचित नहीं होगा कि विज्ञान के ध्वजावाहकों को इससे भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है जैसा कि पश्चिम में माना जाता है, वहां आस्था को विज्ञान के विपरीत समझा जाता है । अस्ल में यह बुद्धि का दोष है । पश्चिम में दीन (धर्म) को समझा ही नहीं गया है, इसका बुद्धि विवेक से कोई टकराव नहीं है ।

"जो लोग बुद्धि से काम नहीं लेते हैं उनके लिए आकाशों और धरती की संरचना में, रात और दिन के निरंतर एक-दूसरे के पीछे आने में, उन नौकाओं में जो लाभ की चीज़ें लिए हुए नदियों और समुद्रों में चलती-फिरती हैं, वर्षा के उस जल में जिसे अल्लाह ऊपर से बरसाता है फिर उसके द्वारा धरती को जीवन प्रदान करता है, और (अपनी) इसी व्यवस्था के कारण) धरती में हर प्रकार के जीवधारियों को फैलाता है, हवाओं के चलने में और उन बादलों में जो आकाश और धरती के बीच आज्ञा के वशीभूत बनाकर रखे गये हैं, अनगिनत निशानियां हैं ।" (अल-बक़रा : 164)

आज की तेज़ रफ़्तार ज़िन्दगी में लोगों को इसकी सुध कहां कि वह सृष्टि पर, उसकी संरचना पर, उसके आकार पर, सबसे बड़ी बात यह है कि इसकी उत्पत्ति के उद्देश्यों पर ठहरकर ग़ौर करें, मगर इन्सान को इसके लिए समय निकालना चाहिए । अगर वह सोच-विचार से काम ले तो इस सृष्टि में और ख़ुद उसके अन्दर इतनी निशानियां मिलेंगी जो अल्लाह के वजूद की गवाही देंगी उसकी बड़ाई व महानता की गवाही देंगी । संपूर्ण ब्रह्मांड में चारों ओर निशानियां बिखरी पड़ी हैं । जैसा कि अल्लाह का फ़रमान है–"शीघ्र ही हम इनको अपनी निशानियां वाह्य जगत में भी दिखाएंगे और इनके अपने आपमें भी यहां तक कि इन पर यह बात खुल जाएगी कि यह आदेश वास्तव में सत्य है । क्या यह बात पर्याप्त नहीं है कि तेरा प्रभु हर चीज़ का साक्षी है ?" (फ़ुस्सिलत : 53)

इन्सान सृष्टि पर ग़ौर करे तो वहां एक विशेष प्रकार की व्यवस्था पाएगा, हर चीज़ उसे पूर्ण नज़र आएगी । हर चीज़ में एकरूपता व नियमबद्धता नज़र आएगी । क्या यह सब अकारथ है । (भौतिकतावादियों का दावा तो यही है, इनका कहना है कि प्रत्येक वस्तु एक आकस्मिक घटना के परिणामस्वरूप अस्तित्व में आयी है । आकस्मिक रूप से तत्वों के मिश्रण का यह परिणाम है इसलिए इसमें किसी उद्देश्य का तलाश करना व्यर्थ है)। अल्लाह ने क़ुरआन में जगह-जगह इस पहलू को उजागर किया है कुछ उदाहरण देखें–"हमने इस आकाश और धरती को और जो कुछ इनमें है कुछ खेल के तौर पर नहीं बनाया है ।"

(अल-अंबिया : 16)

"धरती और आकाशों की रचना में और रात-दिन के बारी-बारी से आने में उन बुद्धिमानों के लिए बहुत पते की बात हैं जो उठते-बैठते और लेटते, प्रत्येक दशा में अल्लाह को याद करते हैं और आकाश और धरती की संरचना में सोच-विचार करते हैं । (वे स्वत: बोल उठते हैं) "हमारे प्रभु, यह सब कुछ तूने व्यर्थ और निरुद्देश्य नहीं बनाया है, तू पाक है इससे कि निरर्थक कार्य करे । अत: हे प्रभु, हमें नरक-यातना से बचा ले ।" (आले-इमरान : 190)

"क्या उन्होंने कभी अपने आपमें सोच-विचार नहीं किया ? अल्लाह ने धरती और आकाशों को और उन सभी चीज़ों को जो उनके बीच हैं सत्यानुकूल और एक नियत

समय ही के लिए पैदा किया है । किन्तु बहुत से लोग अपने प्रभु के मिलन का इन्कार करते हैं ।" (अर-रूम : 8)

"क्या तुमने यह समझ रखा है कि हमने तुम्हें व्यर्थ ही पैदा किया और तुम्हें हमारी ओर पलटना ही नहीं है ।"

(अल-मोमिनून : 115)

कुरआन का यह दावा है जो कोई भी खुले मन से इन पर ग़ौर करेगा वह इसके अलावा किसी दूसरे परिणाम पर पहुंच ही नहीं सकता है कि इतनी सुन्दर चीज़ें किसी उद्देश्य के बिना ही पैदा हो गयी हैं । यह सृष्टि और इसका कण-कण एक विशेष अन्दाज़ और तरीक़े पर गतिशील है । यह मानना कि ये सारी चीज़ें बेकार पैदा की गयी हैं इस हालत में कि यह भी माना जा रहा हो कि उनका बनाने वाला कोई है बुद्धि से परे है । हर चीज़ अल्लाह की बड़ाई का सुबूत है वहीं इसकी गवाही दे रही है कि इनकी रचना का एक उद्देश्य है ।

इतनी बड़ी सृष्टि का बनाना जब कोई खेल नहीं है तो इसके बनाए जाने को खेल तमाशा समझना भी अनुचित बात है । इस सृष्टि का कण-कण यह गवाही दे रहा है कि इसका एक ख़ास अन्दाज़ में रहना और गतिमान रहना जहां यह बता रहा है कि इसके पीछे कोई शक्ति है वहीं यह भी घोषणा कर रहा है कि इनको नियंत्रित करना किसी एक शक्तिशाली हाथ में है अन्यथा एक क्षण वह इस हालत पर स्थापित नहीं रह सकती ।

"अगर आकाश और धरती में एक अल्लाह के सिवा दूसरे ईष्ट पूज्य भी होते तो (धरती और आकाश) दोनों की व्यवस्था बिगड़ जाती अतः पाक है अल्लाह, सिंहासन का स्वामी उन बातों से जो ये लोग बना रहे हैं ।"

(अल-अंबिया : 22)

इससे दूसरी जो बात निकलती है वह यह है कि जिस हस्ती ने इस सृष्टि और इसमें मौजूद चीज़ों को एक बार बनाया है वह उसे दोबारा बनाने पर भी सक्षम है चाहे इनका अंत ही क्यों न हो गया हो, वह मुर्दों को दोबारा ज़िन्दा कर सकता है । एक इन्सान अगर इस हक़ीक़त को पा ले तो उसकी दुनिया ही बदलकर रह जाएगी । उसकी सोच पूरी तरह बदल जाएगी, कुरआन में जगह-जगह इसकी ओर ध्यान दिलाया गया है–

"क्या उनको यह न सूझा कि जिस अल्लाह ने धरती और आकाशों को पैदा किया है वह इन जैसों को पैदा करने की अवश्य सामर्थ्य रखता है ? उसने मृत्यु के उपरांत इनके उठाए जाने के लिए एक समय निश्चित कर रखा है जिसका आना अनिवार्य है, किन्तु ज़ालिमों को ज़िद है कि वे उसका इन्कार ही करेंगे ।" (बनी इसराईल : 99)

दूसरी आयत में फ़रमाता है–"अब वह हम पर मिसालें चस्पां करता है और अपनी पैदाइश को भूल जाता है, कौन इन हड्डियों को जीवित करेगा जबकि ये जीर्ण हो चुकी हों ? उससे कहो, इन्हें वही जीवित करेगा जिसने पहले इन्हें पैदा किया था, और वह पैदा करने का हर काम जानता है, वही जिसने तुम्हारे लिए हरे-भरे वृक्ष से आग पैदा कर दी और तुम उससे अपने चूल्हे प्रज्वलित करते हो । क्या वह जिसने आकाशों और धरती को पैदा किया इसकी सामर्थ्य नहीं रखता है कि इन जैसों को पैदा कर सके ? क्यों नहीं, जबकि वह कुशल महा-स्रष्टा है । वह तो जब किसी चीज़ का इरादा करता है तो उसका काम बस यह है कि उसे आदेश दे कि हो जा और वह हो जाती है । पवित्र है वह जिसके हाथ में हर चीज़ का पूर्ण आधिपत्य है, और उसी की ओर तुम पलटाए जाने वाले हो ।"

(या॰सीन॰ : 78-83)

"देखो अल्लाह की दयालुता के प्रभाव कि मुर्दा पड़ी हुई भूमि को किस प्रकार जिला उठाता है, निश्चय ही वह मुर्दों को जीवन प्रदान करने वाला है और वह हर चीज़ की सामर्थ्य रखता है ।" (अर-रूम : 50)

"उसकी निशानियों में से है यह धरती और आकाशों की रचना, और ये जीवधारी जो उसने दोनों जगह फैला रखे हैं । वह जब चाहे उन्हें इकट्ठा कर सकता है ।"

(अश-शुरा : 29)

"और उसकी निशानियों में से यह है कि आकाश और धरती उसके आदेश से क़ायम हैं । फिर ज्यों ही उसने तुम्हें धरती से पुकारा, बस एक ही पुकार में सहसा तुम निकल आओगे । आकाशों और धरती में जो भी हैं उसके बन्दे हैं । सबके सब उसकी आज्ञा के अधीन हैं । वही है जो सृष्टि का आरंभ करता है, फिर वही उसकी पुनरावृत्ति करेगा और यह उसके लिए अधिक सरल है । आकाशों और धरती में उसका गुण सर्वोच्च है और प्रभुत्वशाली और तत्वदर्शी है ।" (अर-रूम : 27)

"और क्या इन लोगों को यह सुझाई नहीं देता कि जिस अल्लाह ने ये धरती और आकाश पैदा किये और इनको

बनाते हुए वह न थका, उसे अनिवार्यत: इसकी सामर्थ्य प्राप्त है कि मुर्दों को जिला उठाए, क्यों नहीं, निश्चय ही उसे हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है ।'' (अल-अहक़ाफ़ : 33)

अतएव रचना इस पर स्वयं दलीलें देती हैं कि इसका एक उद्देश्य है और इसे दोबारा जीवन मिलने वाला है, मृत्यु के बाद दोबारा जीवित होना बुद्धि के विपरीत नहीं है, बल्कि यह प्रकृति की पुकार है । निम्न आयत में इस पहलू को स्पष्ट किया गया है–

''लोगो यदि तुम्हें मृत्यु के उपरांत जीवन के विषय में कुछ संदेह है तो तुम्हें मालूम हो कि हमने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया है, फिर वीर्य से, फिर रक्त के लोथड़े से, फिर मांस की बोटी से जो रूप वाली भी होती है और रूपहीन भी । (यह हम इसलिए बता रहे हैं) ताकि तुम पर सच्चाई व्यक्त करें । हम जिस (वीर्य) को चाहते हैं निश्चित समय तक गर्भाशयों में ठहराए रखते हैं, फिर तुमको एक बच्चे के रूप में निकाल लाते हैं (फिर तुम्हारा पालन-पोषण करते हैं) ताकि तुम अपनी युवावस्था को प्राप्त हो और तुममें से कोई पहले ही वापस बुला लिया जाता है और कोई निकृष्टतम आयु की ओर फेर दिया जाता है ताकि सब कुछ जानने के पश्चात फिर कुछ न जाने और तुम देखते हो कि भूमि सूखी पड़ी है, फिर जहां हमने उस पर मेंह बरसाया कि सहसा वह फबक उठी और फूल गयी और हर प्रकार की सुदृश्य वनस्पतियां उगलनी आरंभ कर दी । ये सब कुछ इसलिए है कि अल्लाह ही सत्य है, और वह मुरदों को जीवित करता है, और उसे हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है, और यह (इस बात का प्रमाण है) कि पुनरुज्जीवन की घड़ी आकर रहेगी, इसमें कोई संदेह नहीं, और अल्लाह अवश्य उन लोगों को उठाएगा जो क़ब्रों में जा चुके हैं । कुछ और लोग ऐसे हैं जो किसी ज्ञान और मार्गदर्शन और प्रकाश प्रदान करने वाले ग्रंथ के बिना गरदन अकड़ाए हुए, अल्लाह के विषय में झगड़ते हैं ताकि लोगों को अल्लाह के मार्ग से भटका दें ऐसे व्यक्ति के लिए संसार में अपयश है और पुनरुज्जीवन के दिन उसको हम आग की यातना का मज़ा चखाएंगे–यह है तेरा वह भविष्य जो तेरे अपने हाथों ने तेरे लिए तैयार किया है अन्यथा अल्लाह अपने बन्दों पर जुल्म करने वाला नहीं है ।'' (अल-हज : 5-10)

जो मृत्यु के बाद के जीवन का इन्कार करते हैं वे इस भुलावे में हैं अल्लाह बुरे कर्म करने वालों को अच्छे कर्म करने वालों में गिनेगा, ये अल्लाह से झूठी आशाएं बांधना है अल्लाह ने साफ़-साफ़ बता दिया है कि ऐसा हरगिज़ नहीं होगा । ऐसी बातें वही लोग बनाते हैं जो अल्लाह पर ईमान नहीं रखते अल्लाह का साफ़ एलान है–

''हमने आकाश और धरती को, और इस दुनिया को जो उनके बीच है, व्यर्थ पैदा नहीं कर दिया है । यह लोगों का अनुमान है जिन्होंने इन्कार किया है, और ऐसे इन्कार करने वालों के लिए विनाश है नरक की आग से । क्या हम उन लोगों को जो ईमान लाते हैं और अच्छे कर्म करते हैं और उनको जो धरती में बिगाड़ पैदा करते हैं समान कर दें ? क्या डर रखने वालों को हम दुराचारियों जैसा कर दें ?

(सॉद : 27-28)

इतनी सारी निशानियों, याद दिलाने और नसीहतों के बावजूद अगर कोई व्यक्ति अपना आचरण ठीक नहीं करता है और अपने को बदलता नहीं है तो उसका अंजाम क्या होगा या होना चाहिए इसका अन्दाज़ा आसानी से किया जा सकता है । क्या उसके पास बग़ावत और नाफ़रमानी के लिए कोई दलील है ? क्या ऐसा व्यक्ति अल्लाह की दया का अधिकारी है और क्या वह क्षमा कर देने योग्य है ?

0291-2658786

HOTEL Crown Plaza

A/C & Non A/C Air Cooled Rooms & Dormitory

Opp. Minerva Centre,
Railway Station Road, Jodhpur-342001 (Raj.)
Cell : 9784856007, 9414110345

½ km from the railway station

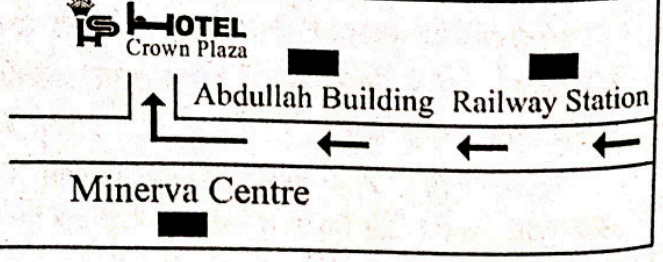

हज़रत सईद बिन आमिर जुमही (रज़ि०)

❖ अब्दुर्रहमान राफ़त पाशा

हज़रत सईद बिन आमिर जुमही (रज़ि०) उन हज़ारों युवकों में से एक थे जो मक्का के पास तनईम में क़ुरैश के नेताओं के बुलावे पर आये थे । हज़रत ख़ुबैब बिन अदी (रज़ि०) को क़ुरैश ने धोखे से बंदी बना लिया था । उन्हीं की हत्या का दृश्य देखने हेतु लोग एकत्रित हुए थे । हज़रत आमिर जुमही (रज़ि०) अपनी शानदार क़द-काठी के बलबूते पर अबू सुफ़ियान बिन हर्ब और सफ़वान बिन उमैया जैसे क़ुरैश के गणमान्य लोगों के बराबर अगली पंक्ति में जगह बनाने में सफल हो गये ।

इस तरह उन्हें यह अवसर मिल गया कि वह क़ुरैश के उस क़ैदी को ज़ंजीरों में जकड़े हुए अपनी आंखों से देख सकें । वे यह दृश्य देख रहे थे कि महिलाओं, बच्चों तथा जवानों के हाथ हज़रत ख़ुबैब (रज़ि०) को क़त्लगाह की ओर धकेल कर ला रहे हैं ताकि बद्र के युद्ध में मारे गये अपने लोगों का प्रतिशोध ले सकें ।

जब वह भीड़ क़ैदी को लेकर उस जगह पहुंची जहां उनकी हत्या की जानी थी, तो हज़रत सईद (रज़ि०) हज़रत ख़ुबैब (रज़ि०) को एकटक देखने लगे । उन्होंने सुना कि हज़रत ख़ुबैब (रज़ि०) कह रहे थे–"यदि तुम लोग चाहो तो मेरी हत्या से पहले मुझे केवल दो रकअत नमाज़ पढ़ लेने की अनुमति दे दो । फिर उन्होंने देखा कि वह क़ैदी काबे की ओर मुंह करके पूरी एकाग्रता के साथ नमाज़ पढ़ रहा है ।

नमाज़ के बाद हज़रत ख़ुबैब (रज़ि०) ने क़ुरैश के नेताओं को संबोधित करते हुए कहा–"अगर मुझे यह भय न होता कि तुम कहोगे कि मैं मौत के डर से लंबी नमाज़ पढ़ रहा हूं तो और ज़्यादा लंबी नमाज़ पढ़ता ।" फिर हज़रत सईद (रज़ि०) ने अपनी आंखों से अपनी क़ौम को हज़रत ख़ुबैब (रज़ि०) को आख़िरी ज़ख़्म लगाते हुए देखा तथा उन्हें यह कहते हुए सुना–"क्या तुम यह पसन्द करोगे कि तुम्हारे स्थान पर मुहम्मद (सल्ल०) हों और तुम्हें छोड़ दिया जाए ?"

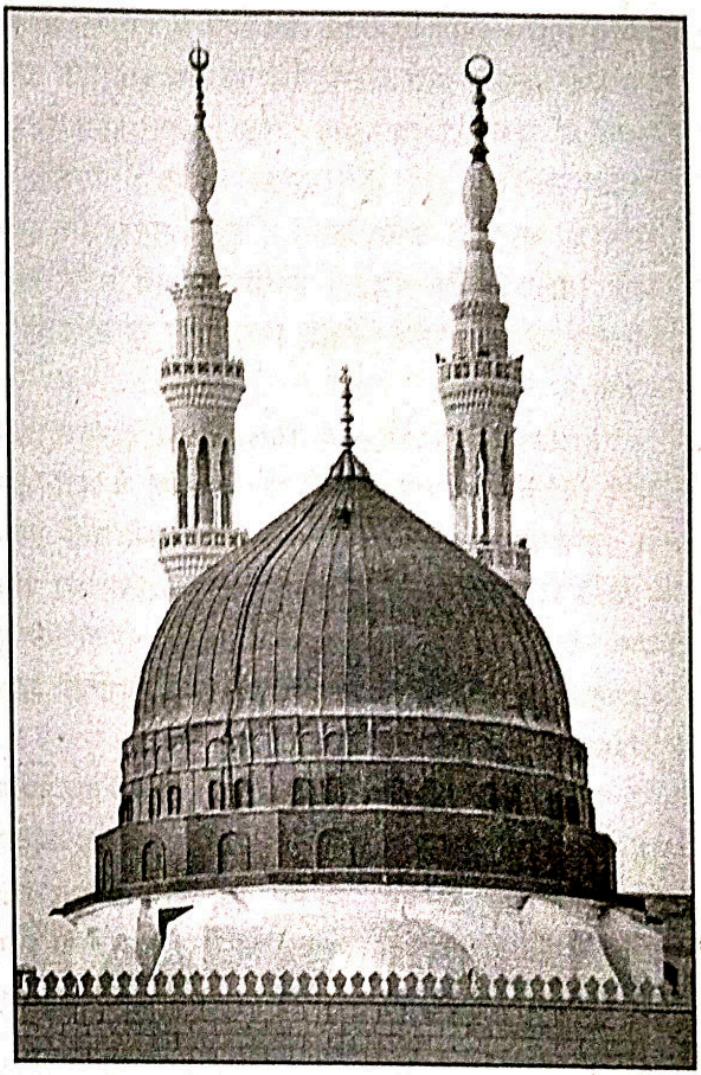

यद्यपि उनके शरीर से रक्त के फव्वारे फूट रहे थे, उन्होंने कहा–"अल्लाह की क़सम ! मुझे तो यह भी गवारा नहीं कि मैं अपने बाल-बच्चों के साथ अपने घर में सुख-चैन से रहूं और नबी करीम (सल्ल०) के पैर में एक कांटा भी चुभे !" यह सुनकर लोगों ने हवा में हाथ लहरा-लहरा कर कहना शुरू कर दिया–"इसे मार डालो, इसे मार डालो ।"

फिर हज़रत सईद (रज़ि०) ने हज़रत ख़ुबैब (रज़ि०) को देखा । वे आकाश की ओर अपनी नज़रें उठाये कह रहे थे–"ऐ अल्लाह ! इन्हें गिन ले, इनमें से एक-एक को मार डाल । इनमें से किसी एक को भी मत छोड़ ।" यह कहते हुए उन्होंने प्राण त्याग दिये । उनके शरीर पर तलवार एवं नेज़े

की इतनी खरोचें थीं जिनका गिनना असंभव था ।

क़ुरैश के लोग मक्का लौट आये और हज़रत ख़ुबैब (रज़ि॰) की शहादत वाली घटना को भुला दिया । परन्तु उस नवयुवक के मानस पटल से वह घटना और उसके दृश्य एक क्षण के लिए भी दूर नहीं हुए । जब वे सोते तो उन्हें स्वप्न में देखते और जब जागे रहते तो ख़यालों के परदे पर उन्हें महसूस करते । उन्हें ऐसा आभास होता कि उनकी आंखों के सामने हज़रत ख़ुबैब (रज़ि॰) बड़ी शान्ति के साथ नमाज़ पढ़ने में लीन हैं । उनकी ज़ुबान से निकले हुए अभिशाप के शब्द उनके कानों में गूंजने लगते और हज़रत सईद (रज़ि॰) चौंक पड़ते । उनको यह भय सताने लगता कि उन पर अभी कोई बिजली गिर पड़ेगी या आकाश टूट पड़ेगा ।

हज़रत ख़ुबैब (रज़ि॰) के साथ हुई उस घटना ने हज़रत सईद (रज़ि॰) को वह कुछ सिखा दिया जो वे नहीं जानते थे । उन्हें मालूम हो गया कि जीवन का अस्ली मज़ा आस्था (अक़ीदा) तथा उसके संरक्षण के लिए जीवन भर संघर्ष करने में है । उस घटना ने उन्हें यह सीख भी दी कि दृढ़ विश्वास नाना प्रकार के आश्चर्यजनक कार्य करने की क्षमता उत्पन्न कर देता है ।

एक दूसरी सीख उन्हें यह भी मिली कि जिस व्यक्ति से उसका मानने वाला इतना प्रेम करता हो वह अवश्य ईशदूत (नबी) ही होगा । परिणामस्वरूप हज़रत सईद (रज़ि॰) के हृदय का द्वार इस्लाम के लिए खुल गया । वह लोगों के बीच खड़े हुए और क़ुरैश के रीति-रिवाजों एवं मूर्ति पुजा से अलग रहने की घोषण कर दी ।

वे मदीना चले गये और नबी (सल्ल॰) का दामन थाम लिया । आप (सल्ल॰) के साथ ख़ैबर और दूसरे धर्म युद्धों में शामिल हुए । नबी (सल्ल॰) की मृत्यु के बाद वह हज़रत अबू बक्र (रज़ि॰) तथा हज़रत उमर (रज़ि॰) के साथ रहे और एक ऐसे मुसलमान की भूमिका निभाई जिसने परलोक (आख़िरत) को दुनिया के बदले ख़रीद लिया हो और अपनी अभिलाषाओं पर अल्लाह की मर्ज़ी को प्राथमिकता दे दी हो । वह दोनों भी सईद (रज़ि॰) की सच्चाई एवं भक्ति को सम्मान की दृष्टि से देखते और उनकी नसीहतों को सुनते थे ।

हज़रत सईद (रज़ि॰) उस समय हज़रत उमर (रज़ि॰) के पास आए जब वे ख़लीफ़ा (मुस्लिम शासक) बने थे और कहा–"ऐ उमर (रज़ि॰)! मैं आपको जनता के संबंध में अल्लाह से डरने की तथा अल्लाह के मामले में किसी से न डरने की वसीयत करता हूं । आपको यह भी वसीयत करता हूं कि आपकी कथनी तथा करनी में अंतर न हो । ऐ उमर (रज़ि॰)! जिन निकटतम तथा दूरस्थ मुसलमानों के अमीर आप बनाए गये हैं उनका पूरा-पूरा ख़याल रखिए । उनके लिए वही कुछ पसंद कीजिए जो आप स्वयं के लिए पसंद करते हैं । सत्य की राह में आने वाली कठिनइयों से कभी मत घबराइए तथा अल्लाह के लिए किसी भर्त्सना करने वाले की भर्त्सना से भयभीत मत होइए । हज़रत उमर (रज़ि॰) ने कहा–ऐ सईद (रज़ि॰)! ऐसा भला कौन कर सकता है ? हज़रत सईद (रज़ि॰) ने उत्तर दिया : आप जैसा व्यक्ति जिसे अल्लाह ने नबी (सल्ल॰) की उम्मत (अनुयायी) की बागडोर सौंपी है अर्थात जिसके तथा अल्लाह के बीच कोई दूसरा नहीं है ।

यह सुनकर हज़रत फ़ारूक़ (रज़ि॰) ने हज़रत सईद (रज़ि॰) से कहा कि मैं आपको हम्स वालों का अमीर बनाना चाहता हूं । आपने कहा : "ऐ उमर (रज़ि॰)! आपको अल्लाह का वास्ता, मुझे इस परीक्षा में मत डालिए ।" यह सुनकर हज़रत उमर (रज़ि॰) ने ज़रा क्रोधित मुद्रा में कहा– "आश्चर्य है, आप लोगों ने यह ज़िम्मेदारी मुझ पर डाल दी और अलग बैठ गये ? अल्लाह की क़सम ! मैं आपको छोड़ूंगा नहीं ।" फिर उन्हें हम्स का अमीर बना दिया और कहा कि क्यों न आपका वेतन निर्धारित कर दिया जाए ? आपने कहा : ऐ अमीरुल मोमिनीन (मुसलमानों के सरदार)! मुझे उसकी ज़रूरत नहीं । सरकारी भंडार से जो कुछ मिलता है वही मेरे लिए काफ़ी है । उसके बाद आप हम्स चले गये ।

कुछ ही दिन बीते थे कि हम्स के विश्वसनीय लोगों का एक प्रतिनिधिमंडल हज़रत उमर (रज़ि॰) के पास आया । प्रतिनिधिमंडल ने हम्स के दरिद्रतम लोगों की सूची हज़रत उमर (रज़ि॰) को सौंपी । उस सूची में दूसरों के साथ हज़रत सईद (रज़ि॰) का नाम भी शामिल था । हज़रत उमर (रज़ि॰) ने पूछा : यह कौन सईद है ? जवाब मिला : वह हमारे अमीर हैं । आपने पूछा : क्या तुम्हारा अमीर भी दरिद्र है ? उत्तर दिया गया : हां ! ख़ुदा की क़सम ! कई-कई दिनों तक उनके घर चूल्हा भी नहीं जलता । यह सुनकर हज़रत उमर (रज़ि॰) रो पड़े और इतना रोए कि उनकी दाढ़ी

भीग गयी । फिर आपने एक हज़ार दीनारों को एक थैली में रखकर प्रतिनिधिमंडल को सौंपते हुए कहा : सईद (रज़ि॰) को मेरा सलाम कहना और कह देना कि यह धनराशि तुम्हरे लिए उमर (रज़ि॰) ने भेजी है, ताकि तुम अपनी आवश्यकताओं पर इसे ख़र्च करो ।

जब प्रतिनिधिमंडल हज़रत सईद (रज़ि॰) के पास दीनारों से भरी हुई थैली लेकर पहुंचा तो वे उससे इस प्रकार दूर हट गये कि मानो उन पर कोई आपदा आ पड़ी हो । उनकी पत्नी घबराकर दौड़ती हुई आयी और पूछा : सईद! क्या बात है, क्या उमर (रज़ि॰) परलोक सिधार गये ?

उन्होंने कहा कि इससे भी बड़ी समस्या आ पड़ी है । तो क्या मुसलमानों को किसी धर्मयुद्ध में पराजय का सामना करना पड़ा है ?

आपने कहा : मामला इससे ज़्यादा गंभीर है, दुनिया मेरे घर में मेरी आख़िरत को बिगाड़ने के लिए आ धमकी है । बहुत बड़ी आपदा का सामना है । फिर अपने तमाम दीनारों को छोटे-छोटे बटुवों में रखकर ग़रीब मुसलमानों में बांट दिया ।

ज़्यादा समय नहीं बीता था कि हज़रत उमर (रज़ि॰) परिस्थितियों का नीरीक्षण करने सीरिया गये तो हम्स भी आये । आपके वहां पहुंचने पर हम्स के निवासी आपके साक्षात्कार के लिए जमा हुए तो आपने उनसे पूछा कि तुमने अपने अमीर को कैसा पाया ? जवाब में उन्होंने सईद (रज़ि॰) के चार ऐसे कार्य गिनाए जो उनकी दृष्टि में दोषपूर्ण थे ।

हज़रत उमर (रज़ि॰) कहते हैं कि मैंने हज़रत सईद (रज़ि॰) तथा हम्स वालों को एकत्रित किया और अल्लाह से प्रार्थना की कि वह हज़रत सईद (रज़ि॰) के बारे में मेरे विश्वास की लाज रख ले ।

वे कहते हैं कि जब दोनों पक्ष मेरे सामने उपस्थित हो गये तो मैंने उनसे पूछा : तुम्हें अपने अमीर से क्या शिकायत है ? उन्होंने कहा : वह दिन चढ़े तक घर से बाहर नहीं निकलते । मैंने सईद (रज़ि॰) से पूछा : आप इस संबंध में क्या कहना चाहेंगे ? वह थोड़ी देर चुप रहे फिर कहा कि अल्लाह की क़सम ! मैं कदापि इसे बताना नहीं चाहता था लेकिन बताए बिना अब कोई चारा भी नहीं । देखिए, मेरे पास कोई नौकर नहीं । अत: सवेरे उठकर नमाज़ पढ़ने के बाद स्वयं आटा गूंधता हूं, फिर स्वयं ही रोटी पकाता हूं और फिर वुज़ू करके इनकी सेवा में जुट जाता हूं ।

तुम्हारी दूसरी शिकायत क्या है ? हज़रत उमर (रज़ि॰) ने पूछा : हम्स वालों ने कहा : वे रात में किसी के प्रश्न का उत्तर नहीं देते । मैंने कहा कि सईद (रज़ि॰)! इसका आपके पास क्या जवाब है ? उन्होंने कहा : यह रहस्योद्घाटन भी मैं नहीं करना चाहता था लेकिन मजबूर हूं । बात यह है कि मैंने दिन इनके लिए तथा रात को अल्लाह के लिए ख़ास कर लिया है । मैंने पूछा कि तुम्हें सईद से और क्या शिकायत है ? उन्होंने कहा कि वे महीने में एक दिन घर से निकलते ही नहीं ? मैंने सईद (रज़ि॰) से पूछा : क्या बात है ? हज़रत सईद (रज़ि॰) ने कहा : मेरे पास कोई नौकर-चाकर नहीं है और मेरे शरीर पर अभी जो कपड़े हैं उनके सिवा कोई और कपड़ा मेरे पास नहीं है । मैं इन्हें प्रतिमाह एक बार साफ़ करता हूं । इनके सूखने की प्रतीक्षा मुझे करनी पड़ती है । जब ये सूख जाते हैं तो शाम को इन्हें ही पहनकर निकलता हूं ।

हज़रत उमर (रज़ि॰) ने हम्सवासियों से फिर वही सवाल किया । उन्होंने कहा कि वे समय-समय पर बेहोश हो जाते हैं । मैं हज़रत सईद (रज़ि॰) से इसका कारण बतलाने को कहा । हज़रत सईद (रज़ि॰) ने उत्तर दिया कि मैंने हज़रत ख़ुबैब (रज़ि॰) की निर्मम हत्या का तमाशा अपनी आंखों से देखा है । मैं उस समय मुसलमान नहीं हुआ था । जब वह घटना मुझे याद आती है, मैं सोचने लगता हूं कि मैंने उनकी मदद क्यों नहीं की ? मुझे लगता है कि अल्लाह मुझे क्षमा नहीं करेगा । यही सोचकर मैं बेहोश हो जाता हूं । यह सुनकर हज़रत उमर (रज़ि॰) ने कहा कि अल्लाह का शुक्र है कि उसने हज़रत सईद (रज़ि॰) के बारे में मेरी ख़ुशगुमानी की लाज रख ली । फिर एक हज़ार दीनार देकर हज़रत सईद (रज़ि॰) से कहा कि अल्लाह की कृपा से हम अब आपकी सेवा लेने से मुक्त हो गये हैं । आप एक नौकर रख लीजिए ।

लेकिन आपने उन तमाम दीनारों को कई भागों में बांटकर एक व्यक्ति को देते हुए कहा : यह उन विधवाओं को, यह उन यतीम बच्चों को और यह उन दरिद्रों एवं अधीनों को दे दो ।

अल्लाह हज़रत सईद (रज़ि॰) से राज़ी हो कि वे उन महान व्यक्तियों में से एक थे जो अपनी आवश्यकताओं पर दूसरों की आवश्यकताओं को सदैव प्राथमिकता देते थे ।

मेयारी तालीम ही बेहतर मुस्तक़बिल की ज़मानत है

वच्चों की वेहतर तालीम व तरबियत के पेशे-नज़र स्कूलों और मदरसों के लिए

इस्लामी तर्ज़ पर तैयार निसाबी किताबें

उर्दू, हिन्दी, अंग्रेज़ी, गणित, सामान्य ज्ञान, कंप्यूटर, इस्लामियात और अन्य विषयों की पाठ्य-पुस्तकें अंग्रेज़ी, उर्दू और हिन्दी तीनों भाषाओं में उम्दा काग़ज़, बेहतरीन प्रकाशन, मतन से हम आहंग दीदाज़ेब तस्वीरों के साथ पाठ्य-पुस्तकें प्रकाशित करने वाला

हिन्दुस्तान भर में मशहूर पहला इशाअती इदारा

भारत सरकार के क़ौमी दर्सियात (C.B.S.E & N.C.E.R.T) के ख़ाके के तहत बच्चों के स्वभाव और दिलचस्पी को ध्यान में रखते हुए मुसलसल जांच (C.C.E) के नये तक़ाज़ों के मुताबिक़ नामवर शिक्षण-संस्थाओं से जुड़े अनुभवी शिक्षकों के द्वारा तैयार की गयी पाठ्य-पुस्तकों के लिए संपर्क करें।

हम सारे तालीमी इदारों से भरपूर तआवुन की अपील करते हैं और अल्लाह तआला से दुआ करते हैं कि हम सवकी इस कोशिश को क़ुबूल फ़रमाए। आमीन!

इस्लामी पाठ्य-पुस्तकों का पहला इशाअती इदारा। उर्दू, हिन्दी मीडियम स्कूलों और मदरसों के लिए

Pioneer in Islamic Oriented Books for Urdu/Hindi Medium Schools & Madarsas

AL QALAM
Publications Pvt.Ltd.

Al Qalam

اَلْقَلَمْ پبلیکیشنز
پرائیویٹ لمیٹڈ

Regd. Office : 344, Gali Garhaiyya, Bazar Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110 006.
Phone : (Off.) 011-2324 1481, 2326 1481 (Godown) 011- 23631481
website : alqalampublications.com e-mail : alqalambooks@gmail.com



To place orders please e-mail us on : alqalambooks@gmail.com or WhatsApp : 9136393030

बढ़ती जनसंख्या : वरदान या अभिशाप?

● संपादन प्रभाग

देश की जनसंख्या इस समय 137 करोड़ के लगभग है और चीन के बाद भारत विश्व में दूसरे स्थान पर है । 2011 की जनगणना में वृद्धि-दर में 3.84 प्रतिशत की कमी देखी गयी परन्तु फिर भी अनुमान है कि 2024 तक भारत चीन को पीछे छोड़ता हुआ सर्वाधिक जनसंख्या वाला देश बनने का गौरव प्राप्त कर लेगा । भारत का क्षेत्रफल पूरे विश्व का मात्र 2.4 प्रतिशत है, परन्तु इस पर विश्व की लगभग 18 प्रतिशत जनसंख्या आबाद है । यही कारण है कि लोगों में सदा यह आशंका बनी रहती है कि तेज़ी से बढ़ती हुई जनसंख्या से ग़रीबी में वृद्धि होगी, देश के सकल घरेलू उत्पाद (जी॰डी॰पी॰) में कमी आएगी, विकास-दर भी धीरी रहेगी और देश एक बेहतर कल से वंचित रह जाएगा ।

इधर पिछले एक-दो वर्षों से देश में बढ़ती हुई जनसंख्या फिर से चर्चा का विषय बन गयी है और चारों ओर से आवाज़ें उठने लगी हैं कि सरकार इसको रोकने के लिए प्रभावशाली क़दम उठाए । इसी को देखते हुए अप्रैल 2017 में असम सरकार की ओर से एक ऐसा क़ानून लाने की घोषणा की गयी जिसमें दो से अधिक संतान वाले लोगों को सरकारी नौकरी से दूर और अन्य सभी सरकारी योजनाओं और सुविधाओं से वंचित रखे जाने की बात की गयी है । इसी वर्ष दो-संतान पॉलिसी का क़ानून बनाने के लिए एक बिल संसद में भी पेश किया गया पर उस पर अभी बहस होना बाक़ी है । कुछ लोगों ने सरकार से इस बिल को तुरन्त पास करने का निर्देश देने के लिए सर्वोच्च न्यायालय में याचिका भी दी थी पर मार्च 2018 में वह ख़ारिज कर दी गयी । दिसम्बर 2018 में कुछ सांसदों ने अपनी ओर से इसी संबंध में एक निजी बिल लाने की बात भी की तो दूसरी ओर यह आवाज़ें भी सुनाई दे रही हैं कि दो से अधिक बच्चे पैदा करने वालों से वोट का अधिकार छीन लेना चाहिए तथा दो के बाद पैदा होने वाले बच्चों को भी इन अधिकारों से वंचित रखा जाना चाहिए । जनसंख्या पर चल रही इस चर्चा में स्वतंत्रता दिवस पर दिल्ली के लाल क़िले से दिये गये प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के भाषण ने आग में घी डालने का काम किया जब उन्होंने बड़े परिवार वालों को एक प्रकार से दीवार से लगाते हुए छोटे परिवार वालों को 'देशप्रेमी' कह डाला और बढ़ती हुई जनसंख्या को 'जनसंख्या विस्फोट' की संज्ञा दे डाली । उसके बाद से इस विषय पर बयानबाज़ी ने तेज़ी पकड़ ली है और हर कोई इस पर नियंत्रण करने की बात करने लगा है ।



पूर्व में किये गये प्रयत्न

बढ़ती हुई जनसंख्या को लेकर देश में उठने वाली यह आवाज़ें नयी नहीं हैं । पिछले पचास वर्षों पर यदि दृष्टि डाली जाए तो इस विषय पर चर्चा भी होती रही है और पूर्व की सरकारों ने आबादी पर नियंत्रण के प्रयत्न भी किये हैं । 1976 में उस समय पूरे देश में अशांति और भय की स्थिति उत्पन्न हो गयी जब आपातकाल के समय में तेज़ी से बढ़ती हुई जनसंख्या को रोकने के लिए नसबन्दी का देशव्यापी अभियान चलाया गया । कहा जाता है कि उस समय 60 लाख से भी अधिक स्त्री-पुरुष की नसबन्दी की गयी और इसके लिए लालच अथवा बल का उपयोग भी किया गया। गांव-गांव, शहर-शहर पोस्टर्स लगाए गये जिन पर नसबन्दी के फ़ायदे बताते हुए लिखा होता था ''बस एक या दो बच्चे, होते हैं घर में अच्छे'', ''एक, दो या तीन बच्चों के साथ, आपका घर होगा खुशहाल'', ''अधिक बच्चे यानी अधिक भोजन । संख्या अधिक, तो भूख भी अधिक आदि ।'' बढ़ती हुई जनसंख्या को रोकने के प्रयत्न आपातकाल से पूर्व भी होते रहे हैं । 1971 और 1973 में भी नसबन्दी अभियान चलाए गये थे परन्तु उनमें बल प्रयोग नहीं हुआ था । उसके उपरांत भी जनसंख्या नियंत्रण के प्रयत्न जारी रहे हैं और आज भी जारी हैं । परन्तु देश की जनसंख्या है कि बढ़ती ही जा रही है और यही कारण है कि पिछले कुछ वर्षों से इस पर नियंत्रण की आवाज़ें फिर से तेज़ होने लगी हैं ।

अन्य देशों की स्थिति

चीन भी, जो इस समय विश्व में जनसंख्या में सर्वप्रथम है, इस समस्या से जूझता रहा है । जिस समय भारत आपातकाल के नसबन्दी अभियान से बाहर आ रहा था, चीन अपनी आबादी पर नियंत्रण करने के प्रयत्नों पर विचार कर रहा था । अंततः 1979 में चीन में ''प्रति परिवार सिर्फ़ एक बच्चा'' की पालिसी लागू कर दी गयी । एक से अधिक संतान होने पर परिवार पर न सिर्फ़ जुर्माना लगाया जाता था, उसे विभिन्न सरकारी सुविधाओं से वंचित भी कर दिया जाता था । परन्तु कुछ ही वर्षों में चीन में युवाओं की संख्या घटना शुरू हो गयी और कार्यबल का संकट उत्पन्न होने लगा । 2015 तक यह संकट इतना गंभीर हो गया की सरकार अपनी इस पालिसी को बदलने पर बाध्य हो गयी और उसे एक के बजाय दो संतानों की अनुमति देने का निर्णय करना पड़ा । चार वर्ष बाद भी अभी कार्यबल का यह संकट पूरी तरह समाप्त नहीं हो पाया है और वर्तमान सरकार संतान की संख्या में और छूट देने पर विचार कर रही है ।

पड़ोसी देश पाकिस्तान ने भी अपनी 20 करोड़ की आबादी में वृद्धि को रोकने का प्रयत्न करते हुए 2010 में राष्ट्रीय जनसंख्या नीति बनायी और 2025 तक प्रजनन दर (Fertility Rate) को 2.1 तक घटाने का लक्ष्य निर्धारित किया है । सरकार लोगों को प्रोत्साहित कर रही है कि वह संतानों में तीन वर्षों का अन्तर रखें और इसके लिए गर्भ-निरोधक साधनों का उपयोग करें ।

1960 के दशक में वियतनाम (Vietnam) में दो-संतान की पालिसी लागू की गयी थी, परन्तु अक्तूबर 2017 में उसने अपनी इस नीति में परिवर्तन कर संतानों की संख्या पर नियंत्रण को समाप्त कर दिया ।

पाठकों को यह जान कर आश्चर्य होगा की हमारे देश में जनसंख्या नियंत्रण के प्रयत्नों के विपरीत ऐसे भी देश हैं जो अपनी जनसंख्या को तेज़ी से बढ़ाने के इच्छुक हैं और इसके लिए प्रयत्न भी कर रहे हैं । रूस एक ऐसा देश है जो अपनी तेज़ी से घटती जनसंख्या को रोकने का प्रयत्न कर रहा है । 15 करोड़ की आबादी वाले रूस को संकट का सामना है कि 2050 तक उसकी आबादी में एक करोड़ की कमी आ सकती है और इसको रोकने के प्रयत्न में वहां की सरकार युवाओं को अधिक संतान पैदा करने के लिए विभिन्न तरीक़ों से प्रोत्साहित कर रही है ।

दक्षिण कोरिया में, अनुमान है कि यदि जनसंख्या इसी रफ़्तार से घटती रही तो सन 2750 तक वहां की आबादी ही समाप्त हो जाएगी । आबादी को तेज़ी से बढ़ाने के लिए संरकार कई तरह के प्रोत्साहन दे रही है जिनमें नक़द इनाम के साथ ही अस्पतालों में होने वाले सारा ख़र्च दिया जाना भी शामिल है । इसी प्रकार जापान भी एक वृद्ध-लोगों वाला देश बन गया है और सरकार इस प्रयत्न में है कि युवाओं को अधिक बच्चे पैदा करने पर उभारा जा सके ।

यूरोप के लगभग सभी देशों में जनसंख्या में कमी देखी जा रही है और इसे बढ़ाने के साथ ही वह दूसरे देशों से भाग कर आने वाले शरणार्थियों को कार्यबल में वृद्धि के लालच में अपने यहां प्रवेश की अनुमति भी दे रहे हैं । फ्रांस, जर्मनी आदि इसके कुछ उदाहरण हैं ।

जनसंख्या और ग़रीबी

एक आम धारणा है कि बढ़ती हुई जनसंख्या एक ऐसा

दुष्चक्र है जो ग़रीबी को बढ़ाता है और फिर यही ग़रीबी जनसंख्या में वृद्धि का कारण बनती है और यह देश के विकास में सबसे बड़ी बाधा है । ऐसा माना जाता है कि यदि जनसंख्या को नियंत्रित कर लिया जाए तो देश में बहुमुखी विकास होगा, ग़रीबी में भी कमी आएगी और लोगों का जीवन-स्तर बेहतर होगा ।

परन्तु जून 2018 में जारी की गयी विश्व असमानता रिपोर्ट (World Inequality Report) का अध्ययन इस दावे को पूरी तरह से नकार देता है । इस रिपोर्ट में विश्व में संसाधान और दौलत के वितरण पर जो आंकड़े प्रस्तुत किये गये हैं उनसे स्पष्ट हो जाता है कि ग़रीबी का मुख्य कारण जनसंख्या नहीं बल्कि संसाधनों का असमान वितरण है । आइये ज़रा इसे निम्नलिखित आंकड़ों से समझने का प्रयत्न करते हैं–

- विश्व के एक प्रतिशत सबसे अमीर, दुनिया की दौलत का 50 प्रतिशत कंट्रोल करते हैं ।
- विश्व के 10 प्रतिशत चोटी के अमीरों का विश्व की कुल दौलत के 85 प्रतिशत पर क़ब्ज़ा है । बचे हुए 90 प्रतिशत लोग मात्र 15 प्रतिशत संसाधन से जीवन चलाते हैं ।
- विश्व के 30 प्रतिशत सबसे अमीर, विश्व की कुल दौलत के 97 प्रतिशत पर कंट्रोल रखते हैं । अतार्थ विश्व की 70 प्रतिशत जनसंख्या मात्र 3 प्रतिशत संसाधन में जीवन व्यतीत करने पर मजबूर है ।
- अमेरिका दुनिया का सबसे अधिक असमान वितरण वाला देश है ।
- भारत की 73 प्रतिशत दौलत पर मात्र एक प्रतिशत अमीरों का क़ब्ज़ा है ।
- भारत की 27.5 प्रतिशत आबादी ग़रीब और 8.6 प्रतिशत अत्यंत ग़रीब की श्रेणी में आती है ।

यह आंकड़े चौकाने वाले हैं और इनका एक सरसरी-सा अध्ययन यह स्पष्ट कर देता है कि समस्या कहीं और है और उंगली कहीं और उठायी जा रही है । यह आंकड़े स्पष्ट रूप से बता रहे हैं कि ग़रीबी की समस्या का सरल-सा समाधान है कि संसाधन के वितरण में हो रही असमानता को समाप्त किया जाए । अथार्त दोष पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में है जो अमीर को अमीर और ग़रीब को अधिक ग़रीब बना रही है । विश्व की अर्थव्यवस्था के साथ-साथ लगभग सारी संस्थाओं और समितिओं पर भी इन्हीं पूंजीवादियों का कंट्रोल है और यदि यह कहा जाए तो सत्य से बहुत दूर नहीं होगा की दौलत पर अपनी इस पकड़ को बनाए रखने के लिए ग़रीबों के ध्यान को जनसंख्या वृद्धि की ओर मोड़ दिया गया है । लगभग सभी देशों की सरकारों पर भी इन्ही पूंजीपतियों का कंट्रोल है, इसलिए वह भी इन्हीं की भाषा बोलती हैं । और निशाने पर होता है ग़रीब जो न कुछ समझने की स्थिति में होता है न कुछ कहने की ।

सन 2009 में अमेरिका से प्रकाशित पुस्तक "द स्पिरिट लेवेल : समानता बढ़ने से समाज में मज़बूती क्यों उत्पन्न होती है ?" ने इस विषय को गंभीरता से लेते हुए यह बात उजागर करने का प्रयत्न किया कि विश्व की 90 प्रतिशत समस्याओं का सबसे बड़ा कारण असमानता है, न की जनसंख्या । रिचर्ड विलकिंसन और केट पिक्केट ने अपनी इस पुस्तक में चौंका देने वाले निष्कर्ष प्रस्तुत किये हैं । वह कहते हैं कि देश चाहे अमीर हो या ग़रीब, यदि वहां असमानता का वर्चस्व है, तो उस समाज में ग्यारह विभिन्न प्रकार की स्वास्थ्य और सामाजिक समस्याएं उत्पन्न हो जाती हैं, जैसे–शारीरिक व मानसिक अस्वस्थ, नशीली दवाओं का सेवन, शिक्षा में कमी, हिंसा व अपराध की अधिकता, सामाजिक अविश्वास व सामुदायिकता में गिरावट आदि । यह इसी पुस्तक का प्रभाव था कि 2010 में होने वाले चुनाव में इंग्लैंड के 75 सांसदों ने 'समानता संकल्प' पर अपने हस्ताक्षर करते हुए यह घोषणा की कि वह ऐसी पॉलिसी को प्रोत्साहित करेंगे जिनसे समाज में अमीर और ग़रीब के बीच की खायी को कम किया जा सके ।

समाधान

वर्तमान जीवन व्यवस्था की सबसे बड़ी समस्या यह है कि वह हर चीज़ को मात्र आर्थिक दृष्टिकोण से देखती है और उसी में हल तलाशने का प्रयत्न करती है हालांकि इस क्षेत्र से बाहर आध्यात्मिक, नैतिक, सामाजिक व धार्मिक क्षेत्रों में समस्या का समाधान पहले से मौजूद होता है । जनसंख्या और उससे संबंधित समस्त समस्याओं का ऐसा ही एक हल इस्लाम भी प्रस्तुत करता है जो कि बिल्कुल प्राकृतिक, स्वीकार्य, तर्कसंगत और सरल है और यदि विश्व की व्यवस्था को उसके अनुसार चलाया जाए तो यह समस्याएं, जो आज इतना विकराल रूप धारण कर चुकी हैं और जिनका समाधान लोगों पर जुल्म करने में ही नज़र आता है, बड़ी सरलता से इनका निदान किया जा सकता है । निम्नलिखित बिन्दुओं से इस्लाम के इस समाधान को सरलता से समझा जा सकता है–

1. संसाधन व दौलत का वितरण

संसाधन और दौलत के संबंध में इस्लाम चाहता है कि इसका वितरण इस प्रकार हो कि हर व्यक्ति को इससे लाभ उठाने का पूरा अवसर प्राप्त हो और यह मात्र कुछ अमीरों के हाथों में ही सिमट कर न रह जाए ।

इस्लाम इस प्रकार अमीरों और ग़रीबों में अन्तर को कम करता है और संसाधनों पर मात्र कुछ लोगों के एकाधिकार को रोकता है । इसके लिए इस्लाम किसी बल के प्रयोग की वकालत नहीं करता, बल्कि एक ऐसी अर्थव्यवस्था की स्थापना करना चाहता है जिसमें हर व्यक्ति को उसकी क्षमता, उसकी योग्यता, उसकी अपनी पसंद और नापसंद के अनुसार सामान्य तरीक़े से काम करने का अवसर मिले, ताकि उसकी गतिविधियां अधिक फलदायी, स्वस्थ और उपयोगी हो सकें । एक ओर इस्लाम जहां कार्ल मार्क्स के सरकार द्वारा बलपूर्वक समानता थोपने के सिद्धांत को अस्वीकार करता है, वहीं दूसरी ओर वह पूंजीवादी अर्थव्यवस्था का भी इन्कार करता है । वह अमीर और ग़रीब को एक दूसरे का सहायक और पूरक मानता है और उनमें स्वस्थ और मधुर संबंध स्थापित करने का प्रयत्न करता है ।

इन्सान की यह सबसे बड़ी भूल है कि वह स्वयं को अपने जीवन और संसार का मालिक समझ बैठा है और अपने सारे फ़ैसले करते समय वह अपने अस्ल मालिक के अस्तित्व को ही भुला देता है । न तो इन्सान इस संसार को चला रहा है और न ही उसमें इतना सामर्थ्य है कि वह इसे चला सके । उसका और उसके द्वारा बनाए गये सभी संगठनों और संस्थाओं, जिसमें शासन-व्यवस्था के लिए सरकारें भी शामिल हैं, का कार्य अस्ल मालिक द्वारा प्रदान किये गये संसाधनों की खोज करना और सुनियोजित ढंग से उनके वितरण की व्यवस्था करना है । किसी भी व्यक्ति, समुदाय या सरकार के लिए यह निर्णय लेना असंभव है कि जनसंख्या को किस स्तर तक घटाया जाए या संसाधनों को किस स्तर तक बढ़ाया जाए कि यह दोनों एक संतुलित स्तर पर आ जाएं । और जब भी यह प्रयत्न किया गया है लोगों पर अत्याचार और अन्याय हुआ है । रेलगाड़ी में बैठे हुए यात्री को जिस प्रकार यह अधिकार नहीं है कि वह अपने बाद किसी अन्य यात्री को प्रवेश से रोक सके, उसी प्रकार यह अधिकार किसी को भी नहीं दिया जा सकता कि वह लोगों के जीवन के बारे में निर्णय ले ।

क़ुरआन ज्योति

(पृष्ठ 5 का शेष)

7. यह मूल विषय से हटकर बीच में आ गया एक वाक्य है जो शायद लोगों के इस प्रश्न के उत्तर में फ़रमाया गया है कि आसमान व ज़मीन अगर पहले न थे और बाद में पैदा किये गये, तो पहले क्या था ? इस प्रश्न को यहां नक़ल किये बिना इसका उत्तर इस संक्षिप्त वाक्य में दिया गया है कि पहले पानी था । हम नहीं कह सकते कि इस पानी से तात्पर्य क्या है ? यही पानी जिसे हम इस नाम से जानते हैं ? या यह शब्द रूपक के रूप में द्रव्य (Matter) की उस तरलता (Fluid) के लिए प्रयुक्त किया गया है जो वर्तमान रूप में ढाले जाने से पहले थी ? रहा यह कथन कि अल्लाह का अर्श (सिंहासन) पहले पानी पर था, तो इसका अर्थ हमारी समझ में यह आता है कि अल्लाह का साम्राज्य पानी पर था ।

8. इस कथन का अर्थ यह है कि अल्लाह ने ज़मीन व आसमान को इसलिए पैदा किया कि तुमको (अर्थात इन्सान को) पैदा करना अभिप्रेत था और तुम्हें इसलिए पैदा किया कि तुम पर नैतिक दायित्व का बोझ डाला जाए, तुम्हें ख़िलाफ़त के अधिकार दिए जाएं और फिर देखा जाए कि तुममें से कौन इन अधिकारों को और इस नैतिक दायित्व के भार को किस तरह संभालता है । अगर इस पैदाइश की तह में यह उद्देश्य न होता, अगर अधिकारों के सौंपे जाने के बाद भी किसी परीक्षा का, किसी पूछताछ और हिसाब-किताब का और किसी बदले या सज़ा का कोई प्रश्न पैदा न होता और अगर मनुष्य को नैतिक दायित्व उठाने वाला होने के बावजूद यूं ही व्यर्थ मर-मिटकर मिट्टी हो जाना ही होता, तो फिर पैदा करने का यह पूरा कार्य एक व्यर्थ का खेल था और अस्तित्व के इस तमाम हंगामे की कोई हैसियत व्यर्थ के काम के सिवा कुछ न थी ।

9. अर्थात इन लोगों की नासमझी का यह हाल है कि सृष्टि को एक खिलंडरे का घरौंदा और अपने आपको उसके मन बहलावे का खिलौना समझे बैठे हैं, और इस मूर्खता भरे विचार में इतना मगन है कि जब तुम उन्हें ज़िन्दगी के इस कारख़ाने का गंभीर उद्देश्य और स्वयं उनके अस्तित्व का तर्कसंगत उद्देश्य समझाते हो तो ठहाके लगाते हैं और तुम पर फ़बती कसते हैं कि यह व्यक्ति तो जादू की-सी बातें करता है।

निपूते

❖ प्रवीण कुमार सहगल

आज आई॰ए॰एस॰ का परीक्षाफल निकला था । सुधीर का चयन हो गया था । उसका आठवां स्थान था । हर्ष से उसका और उसके परिवार वालों का हृदय बल्लियों उछल रहा था । उसने मां के चरण स्पर्श करते हुए कहा, "मां, तुम भगवान से यही दुआ मांगो कि मैं इतना कामयाब हो जाऊं कि ईमानदारी और निष्ठा से जनता की सेवा कर सकूं ।" मां ने अत्यंत गर्व के साथ सुधीर को देखा और गले लगा लिया ।

जब बड़ा बेटा रणधीर इंजीनियर बना था तो वह कितनी बेचैन रहती थी कि सुधीर पढ़ाई में न मालूम कैसा निकलेगा । सुधीर मां से कहता, "तुम मेरी क्यों चिंता करती हो । देखना, मैं एक दिन प्रदेश का बहुत बड़ा अधिकारी बनूंगा । जिधर से भी निकलूंगा, लोग इज़्ज़त करेंगे ।" मां हंस पड़ती । वह जानती थी कि सुधीर की तो आदत ही है डींग मारने की । वह उसकी पढ़ाई और उसके भविष्य को लेकर बड़ी चिंतित रहती थी, लेकिन उस पर कोई असर नहीं पड़ता । वह अपने ही ढंग से पढ़ता-लिखता और अपने ही मन के अनुसार कोई कार्य करता । हारकर मां-बाप भी चुप हो गये । उन्होंने यह सोचकर संतोष कर लिया कि इन्सान की हर इच्छा तो पूरी होती नहीं है ।

लेकिन सुधीर ने ज्यों ही इंटर की परीक्षा उत्तीर्ण कर बी॰ए॰ में दाख़िला लिया तो उसमें अचानक भारी परिवर्तन आ गया । वह घूमने-फिरने, खेलने-कूदने, यारी-दोस्ती के बाद भी बड़े मनोयोग से पढ़ाई में जुट गया । परिणाम यह हुआ कि बी॰ए॰ और एम॰ए॰ की डिग्री उसने प्रथम श्रेणी में हासिल की । सबको बड़ी हैरत हुई ।

और जब आज वह आई॰ए॰एस॰ की परीक्षा में उत्तीर्ण हुआ तो घर-परिवार से लेकर मोहल्ले तक के लोगों के चेहरों पर ख़ुशी की लहर दौड़ गयी । इस आश्चर्यजनक सफलता पर जब सुधीर के अंतरंग दोस्त विनय ने उससे पूछा कि ऐसे कैसे हुआ तो सुधीर ने कहा, "यार, मैं रोज़-रोज़ मां-बाप के ताने सुनते-सुनते तंग आ गया था । एक दिन मैंने आत्ममंथन किया कि क्या वास्तव में मैं इतना नाकारा और निकम्मा हूं कि लोग मुझे हेय दृष्टि से देखते हैं, मेरी अध्ययन क्षमता पर संदेह करते हैं । मैंने भी सोचा कि ऐसा कार्य करूंगा कि लोग दांतों तले उंगली दबा लेंगे ।" सुधीर के आत्मविश्वास की हद यह थी कि उसने कोई अन्य परीक्षा दी ही नहीं । पहली बार में ही वह आई॰पी॰एस॰ में चुन लिया गया । मां-बाप अब उसकी तरफ़ से निश्चिंत हो गये । उन्होंने सोचा चलो सब ग्रह कटे । सुधीर धीरे-धीरे बड़ा आदमी बनता जाएगा और उनका बुढ़ापा भी सुख से कट जाएगा ।

सब कुछ जीवन में सोचे हुए नक़्शे के मुताबिक़ चल रहा था कि अचानक भूचाल आ गया । सुधीर कार से दौरे से लौट रहा था । ड्राइवर ने बच्चे को बचाने की ख़ातिर बड़े ज़ोर से ब्रेक लगाया, तभी पीछे से तेज रफ़्तार से आ रहे ट्रक ने कार को ज़बरदस्त टक्कर मारी । बच्चा तो बच गया लेकिन कार बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गयी । एक्सीडेंट इतना भयानक और अप्रत्याशित था कि सुधीर कार में ही बेहोश हो गया । सड़क पर भगदड़ मच गयी । कार में नीली बत्ती लगी थी, कलेक्टर का बोर्ड भी लगा था । आनन-फानन में भीड़ जुट गयी । पुलिस से लेकर ज़िले के अन्य अधिकारी वहां पहुंच गये । कार में से कलेक्टर साहब को किसी तरह खींचकर बाहर निकाला गया और तुरंत मेडिकल कॉलेज ले जाया गया । घर के लोग भी पहुंच गये । सभी डॉक्टर जी-जान से उपचार में लगे हुए थे । डॉक्टरों ने अत्यंत उदास मन से बताया कि ब्रेन हेमरेज के कारण डीप कोमा का केस है ।

दो दिन, चार दिन, आठ दिन बीत गये । सुधीर कोमा में ही पड़ा रहा । सुबह से शाम तक अधिकारियों, मित्रों एवं अन्य सहयोगियों की भीड़ लगी रहती । पिता रामशंकर और माता कौशल्या ने हिम्मत नहीं हारी । उन्हें हर समय यही लगता था कि अपने इस कोमा में पड़े बेटे को शीघ्र ही

जगाने में कामयाब हो जाएंगे । मां हर रोज़ मंदिर में जाकर प्रार्थना करती, यह अपने पैरों पर उठ खड़ा हो, भले ही मैं पड़ जाऊं । लगभग दो महीने तक कोमा में रहने के बाद उसकी हालत में सुधार हुआ कि उसकी आंखें खुल गयीं । वह दिन में आंखें खुली रखता और रात में नींद आने पर मूंद लेता । भूख लगने पर छोटे बच्चे की तरह आं-आं करके मचलता । खिचड़ी या दूध का चम्मच दांत से छुआने पर मुंह थोड़ा-सा खोल देता । उसकी शेव करने, उसका बिस्तरा बदलने, उसे कपड़ा पहनाने आदि का काम पिता के ज़िम्मे था ।

दफ़्तर, शहर और परिवार के लोग शुरू-शुरू में नियमित रूप से आकर बेटे का हाल पूछते, लेकिन जब यथास्थिति को लगभग एक वर्ष हो गया तो सबका आना-जाना कम हो गया । मां-बाप तो कहीं निकल ही नहीं पाते थे । किसी तरह पिता दफ़्तर हो आते । कुछ ही दिन की नौकरी शेष थी । मां घंटों कपड़े धोती और दिन में कई बार फिनायल का पोंछा लगाती । सुधीर के कमरे को देखकर कोई यह नहीं कह सकता था कि यह रोगी का कक्ष है । अंदर के कमरों में चीज़ें बेतरतीब पड़ी रहती थीं लेकिन उसका कमरा एकदम साफ़-सुथरा रहता । पिता की आदत हर चीज़ को बिखेरकर रखने की थी । सुधीर कहा करता था, "पिताजी चीज़ों को बिखेरकर रखने की आपकी आदत बहुत ख़राब है ।" अब तो वह बेटे की बात सुनने को भी तरस गये थे ।

आज पिता का रिटायरमेंट था । कार्यालय से विदाई लेकर घर आये । काफ़ी थके-मांदे थे । पत्नी ने उनके हाथ से थैला लेकर आंचल से उनका ललाट पोंछा और कहा, "चलो, थोड़ा आराम कर लो । बहुत काम कर लिया जीवन भर ।" पिताजी कहने लगे, "सरकार ने तो मुझे रिटायर कर दिया, लेकिन घर के मोर्चे पर तो मुझे सचेत रहना है । सुधीर उठेगा तो क्या कहेगा, "लो बाबूजी, तुम भी हारकर बैठ गये ।" जल्दी ही घर का नया रूटीन बन गया । सुबह सैर पर जाना, वापसी में दूध-सब्ज़ी लेते आना, अख़बार पढ़ना, चाय पीना और फिर सुधीर की सेवा में लग जाना । सुधीर उनके जीवन में ठाकुरजी का स्थान लेता जा रहा था । जब वे डॉक्टरों से सुधीर के क्रिया-कलापों के बारे में बातचीत करते तो उनका जवाब यही रहता सब रिफलेक्स मूवमेंट है । वे पत्नी से कहते, "डॉक्टर क्या जानता है, ख़ाली डिग्री लेने से कोई स्पेशलिस्ट नहीं बन जाता । हमसे पूछो, सुधीर का रोम-रोम मुझसे बतियाता रहता है ।"

अचानक एक दिन सुधीर ने खाने के लिए मुंह खोलना बंद कर दिया । मां ने घबराकर पिताजी को आवाज़ दी, "सुनो जी, आज सुधीर का जी अच्छा नहीं है ।" उस दिन मां-बाप दोनों में से किसी ने खाना नहीं खाया । दूसरे दिन सुधीर के हलक में पानी जाना भी बंद हो गया और तीसरे दिन उसने हमेशा के लिए आंखें मूंद लीं । मां-बाप का रूदन आस-पास की दीवारें हिला गया । बड़ी संख्या में लोग एकत्रित हुए । कई लोगों ने कहा कि चल अच्छा हुआ जो भगवान ने उठा लिया, बेचारे को बीमारी से मुक्ति मिल गयी ।

मां-बाप ने इन लोगों को लाल-लाल आंखों से देखा, मानो खा जाएंगे, लेकिन जब बड़े भाई ने भी अगले दिन अंतयेष्टि के बाद यही कहा तो उनसे रहा नहीं गया । उन्होंने डपटकर उससे कहा, "यह कह रहा है तू । लक्ष्मण जैसा भाई था तेरा । तूने कैसे कहा कि वह बोझ था । अरे, उसके रहने से हमारा घर हरा-भरा था । कैसी रौनक़ थी उसकी, कैसा जलवा था उसका । वो हमारा बेटा ही नहीं बल्कि दिल की धड़कन था । तू एक दिन बाद ही वापस जा रहा है । तेरी आंखें तक गीली नहीं हुईं । क्या यही बताने आया था हमें । जा, चला जा अभी हमारी आंखों के सामने से । हम सोच लेंगे कि हम निपूते ही रहे ।"

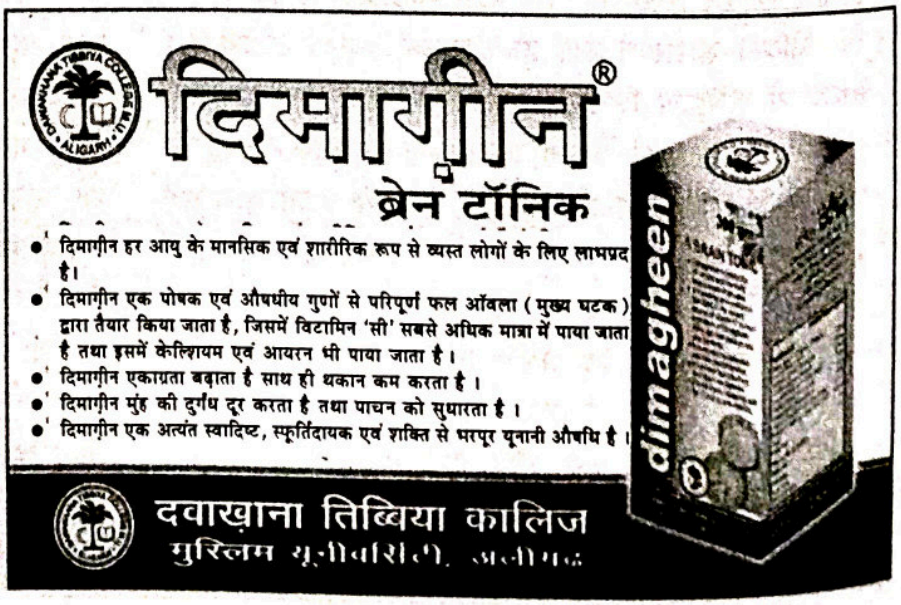

ڈائریاں اور کیلنڈر 2020

شب وروز (ڈائری) عام اور ڈیلکس ایڈیشن

• ہر صفحے پر قرآنی آیات واحادیث رسولؐ، انبیاء کرام، صحابۂ عظام اور بزرگان سلف کے سبق آموز اقوال • شروع وآخر کے ۳۸ صفحات پر اہم ودل چسپ معلومات • مسنون دعائیں • خطبات جمعہ و نکاح، قربانی، عقیقے، نماز جنازہ اور استخارے کی ماثورات • نقشہ اوقات نماز • اہم سفارت خانے • جماعت اسلامی ہند کے مرکزی وصوبائی دفاتر • لوک سبھا اور راجیہ سبھا کے مسلم ممبران کے پتوں کے علاوہ بہت ساری دوسری معلومات سے مزین ایک دل چسپ ومفید ڈائری۔

• صفحات ۳۲۸، نفیس کاغذ، PVC کور۔

نوٹ: شب وروز ڈائری حسب معمول انگریزی میں بھی شائع ہو رہی ہے۔

اسلامی ڈائری (پاکٹ سائز)

• ہر صفحہ قرآنی آیات، احادیث رسولؐ، بزرگوں کے اقوال سے مزین • ۲۵ صفحات پر مشتمل اہم اور ضروری معلومات • کل صفحات: ۲۲۴ نفیس اور عمدہ کاغذ۔

کیلنڈر

• چار رنگوں پر مشتمل سفید آرٹ پیپر پر نفیس طباعت
• اردو ہندی اور انگریزی تراجم کے ساتھ ایک دیدہ زیب کیلنڈر
• 15x20 سائز میں ۳ ورقی دوطرفہ طباعت، ماحولیات کے تحفظ پر دیدہ زیب ڈیزائن اور ہر مہینے کی تاریخیں نمایاں حروف میں۔

نوٹ

اسلامی کیلنڈر اور شب وروز ڈائری پر اپنے ادارے کا نام چھپوانے کے لیے ۱۵/اکتوبر ۲۰۱۹ تک تفصیلات لازماً ارسال فرمادیں۔
شب وروز اور کیلنڈر کے لیے کم از کم مطلوبہ تعداد بالترتیب 100 اور 1000 ہے۔

مرکزی مکتبہ اسلامی پبلشرز، نئی دہلی ۲۵ | **MMI PUBLISHERS**

D-307, Dawat Nagar, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi - 110025
Phone: 26981652,26984347 Mob: 7290092401
E-mail: info@mmipublishers.net Website: www.mmipublishers.net

آرڈر کے لیے رابطہ کریں: E-mail: info@mmipublishers.net Customer Care No : 7290092403

बढ़ती जनसंख्या के लाभ

◆ डॉ॰ भरत झुनझुनवाला

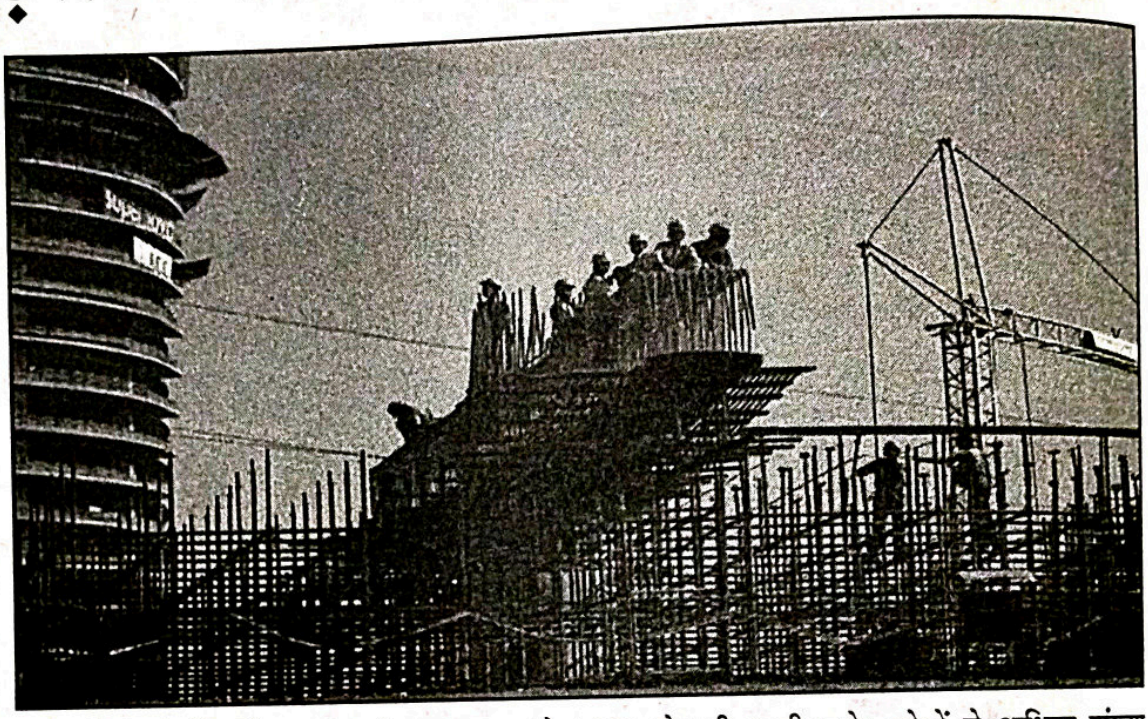

शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए जनसंख्या घटाने के स्थान पर दूसरी अनावश्यक खपत पर नियंत्रण किया जा सकता है। जैसे राजा साहब के महल में स्कूल चलाया जा सकता है। यह भी याद रखना चाहिए कि अर्थव्यवस्था में शिक्षित लोगों की संख्या की ज़रूरत तकनीकों द्वारा निर्धारित हो जाती है। ट्रैक्टर चलाने के लिए पांच ड्राइवर नहीं चाहिए होते हैं। ड्राइवर का एम॰ए॰ होना ज़रूरी नहीं होता है। देश में शिक्षित बेरोज़गारों की बढ़ती संख्या इस बात का प्रमाण है कि शिक्षा मात्र से उत्पादन में वृद्धि नहीं होती है। संयुक्त राष्ट्र का दूसरा तर्क है कि बढ़ती जनसंख्या से जीवन स्तर गिरता है। मैं इससे सहमत नहीं हूं। बढ़ती जनसंख्या यदि उत्पादन में लगी रहे तो जीवन स्तर में सुधार होता है। अतः समस्या लोगों को रोज़गार दिलाने की है न कि जनसंख्या की अधिकता की।

1979 में डेंग जाओपिंग के नेतृत्व में चीन ने एक संतान की नीति लागू की थी। एक से अधिक संतान उत्पन्न करने पर दम्पति को भारी फाइन अदा करना पड़ता था। फाइन न चुका पाने की स्थिति में जबरन गर्भपात करा दिया जाता था। इस कठोर पॉलिसी के कारण चीन की जनसंख्या वृद्धि नियंत्रण में आ गयी। वर्तमान में चीन में दम्पत्तियों के औसत 1.8 संतान हो रही है। दो व्यक्तियों-मां एवं पिता द्वारा 2 से कम संतान उत्पन्न करने के कारण जनसंख्या का पुनर्नवीनीकरण नहीं हो रहा है और जनसंख्या कम हो रही है।

एक संतान पॉलिसी का चीन को लाभ मिला है। 1950 से 1980 के बीच चीन के लोगों ने अधिक संख्या में संतान उत्पन्न की थी। माओ जेडांग ने लोगों को अधिक संख्या में संतान पैदा करने को प्रेरित किया था। 1990 के लगभग ये संतान कार्य करने लायक़ हो गयी। परन्तु ये लोग कम संख्या में संतान उत्पन्न कर रहे थे चूंकि एक संतान की पॉलिसी लागू कर दी गयी थी। इनकी ऊर्जा संतानोत्पत्ति के स्थान पर धनोपार्जन करने में लग गयी। इस कारण 1990 से 2010 के बीच चीन को आर्थिक विकास दर 10 प्रतिशत की अप्रत्याशित दर पर रही।

2010 के बाद परिस्थिति ने पलटा खाया। 1950 से 1980 के बीच भारी संख्या में जो संतान उत्पन्न हुई थी वे अब वृद्धि होने लगीं। परन्तु 1980 के बाद संतान कम उत्पन्न होने के कारण 2010 के बाद कार्य क्षेत्र में प्रवेश करने वाले वयस्कों की संख्या घटने लगी। उत्पादन में पूर्व में हो रही वृद्धि में ठहराव आ गया चूंकि उत्पादन करने वाले लोगों की संख्या घटने लगी। साथ-साथ वृद्धों की सम्हाल का बोझ बढ़ता गया जबकि उस बोझ को वहन करने वाले लोगों की संख्या घटने लगी। वर्तमान में चीन में वृद्धों की संख्या की तुलना में पांच गुणा कार्यरत वयस्क है। अनुमान है कि इस दशक के अंत तक कार्यरत वयस्कों की संख्या

केवल दो गुना रह जाएगी ।

कई ऐसे परिवार होंगे जिसमे एक कार्यरत व्यक्ति को दो पेरेंट्स और चार ग्रेंडपेरेंट्स की सम्हाल करनी होगी । देश के नागरिकों की ऊर्जा उत्पादन के स्थान पर वृद्धों की देख भाल में लगने लगी । कई विश्लेषकों का आकलन है कि 2010 के बाद चीन की विकास दर में आ रही गिरावट का कारण कार्यरत वयस्कों की यह घटती जनसंख्या है ।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि जनसंख्या नियंत्रण का लाभ अल्पकालिक होता है । संतान कम उत्पन्न होने पर कुछ दशक तक संतानोत्पत्ति का बोझ घटता है और विकास दर बढ़ती है । परन्तु कुछ समय बाद कार्यरत श्रमिकों की संख्या में गिरावट आती है और उत्पादन घटता है । साथ-साथ वृद्धों का बोझ बढ़ता है और आर्थिक विकास दर घटती है । बहरहाल स्पष्ट होता है कि आर्थिक विकास की कुंजी कार्यरत वयस्कों की संख्या है । इनकी संख्या अधिक होने से आर्थिक विकास में गति आती है ।

ऐसा ही परिणाम दूसरे देशों के अनुभव से सत्यापित होता है । युनिवर्सिटी ऑफ़ मेरीलेंड के प्रोफ़ेसर जुलियन साइमन बताते हैं कि हांगकांग, सिंगापुर, हॉलैंड एवं जापान जैसे जनसंख्या-सघन देशों की आर्थिक विकास दर अधिक है जबकि जनसंख्या न्यून अफ़्रीक़ा में विकास दर धीमी है ।

पापूलेशन रिसर्च इंस्टीट्यूट के अनुसार 1900 एवं 2000 के बीच अमेरिका की जनसंख्या 7.6 करोड़ से बढ़कर 27 करोड़ हो गयी है । इस अवधि में औसत आयु 47 वर्ष से बढ़कर 77 वर्ष हो गयी है और शेयर बाज़ार का स्टेंडर्ड एंड पूरे इंडेक्स 6.2 से बढ़कर 1430 हो गया है । सिंगापुर के प्रधानमंत्री के अनुसार देश की जनता को अधिक संख्या में संतान उत्पन्न करने को प्रेरित करना देश के सामने सबसे बड़ी चुनौती है ।

इस आशय से उनकी सरकार ने फर्टिलिटी ट्रीटमेंट, हाउसिंग अलाउंस तथा पैटर्निटी लीव में सुविधाएं बढ़ाई है । दक्षिणी कोरिया ने दूसरे देशों से इमिग्रेशन को प्रोत्साहन दिया है । इमिग्रेंट्स की संख्या वर्तमान में आबादी का 2.8 प्रतिशत से बढ़कर 2030 तक 6 प्रतिशत हो जाने का अनुमान है । इंग्लैंड के सांसद केविन रूड ने कहा है कि द्वितीय विश्व युद्ध के बाद यदि इमिग्रेशन को प्रोत्साहन दिया होता तो इंग्लैंड की विकास दर न्यून रहती ।

स्पष्ट होता है कि जनसंख्या का आर्थिक विकास पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है । बात सीधी-सी है । उत्पादन मनुष्य द्वारा किया जाता है । जितने मनुष्य होंगे उतना उत्पादन हो सकेगा और आर्थिक विकास दर बढ़ेगी ।

उपरोक्त तर्क के विरुद्ध संयुक्त राष्ट्र पापुलेशन फंड का कहना है कि जनसंख्या अधिक होने से बच्चों को शिक्षा उपलब्ध नहीं हो पाती है और उनकी उत्पादन करने की क्षमता का विकास नहीं होता है । मेरी समझ से यह तर्क सही नहीं है । शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए जनसंख्या घटाने के स्थान पर दूसरी अनावश्यक खपत पर नियंत्रण किया जा सकता है । जैसे राजा साहब के महल में स्कूल चलाया जा सकता है । यह भी याद रखना चाहिए कि अर्थव्यवस्था में शिक्षित लोगों की संख्या की ज़रूरत तकनीकों द्वारा निर्धारित हो जाती है । ट्रैक्टर चलाने के लिए पांच ड्राइवर नहीं चाहिए होते हैं । ड्राइवर का एम०ए० होना ज़रूरी नहीं होता है । देश में शिक्षित बेरोज़गारों की बढ़ती संख्या इस बात का प्रमाण है कि शिक्षा मात्र से उत्पादन में वृद्धि नहीं होती है ।

संयुक्त राष्ट्र का दूसरा तर्क है कि बढ़ती जनसंख्या से जीवन स्तर गिरता है । मैं इससे सहमत नहीं हूं । बढ़ती जनसंख्या यदि उत्पादन में रत रहे तो जीवन स्तर में सुधार होता है । अत: समस्या लोगों को रोज़गार दिलाने की है न कि जनसंख्या की अधिकता की ।

जनसंख्या के आर्थिक विकास पर उपरोक्त सकारात्मक प्रभाव को देखते हुए चीन की सरकार ने एक संतान पॉलिसी में परिवर्तन किया है । अब तक केवल वे दम्पत्ति दूसरी संतान उत्पन्न कर सकते थे जिनमें पति और पत्नी दोनों ही अपने पेरेंट्स के अकेली संतान थे । अब इसमें छूट दी गयी है । वे दम्पत्ति भी दूसरी संतान पैदा कर सकेंगे जिनमें पति अथवा पत्नी में कोई एक अपने पेरेंट्स की अकेली संतान थी । यह सही दिशा में क़दम है । लेकिन बहुत आगे जाने की ज़रूरत है ।

चीन समेत भारत को समझना चाहिए कि जनसंख्या सीमित करने से आर्थिक विकास मंद पड़ेगा । ज़रूरत ऐसी आर्थिक नीतियों को लागू करने की है जिससे लोगों को रोज़गार मिले और वे उत्पादन कर सकें । पर्यावरण पर बढ़ते बोझ को सादा जीवन अपना कर मैनेज करना चाहिए न कि जनसंख्या में कटौती करके ।

मुहम्मद (सल्ल॰) की नुबूवत के स्पष्ट प्रमाण

■ मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ां

हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ईश्वर के नबी थे और आप (सल्ल॰) नबियों की शृंखला की अंतिम कड़ी थे। आप (सल्ल॰) पर नुबूवत का सिलसिला समाप्त हो गया। आप (सल्ल॰) के नबी होने के अगणित प्रमाण हैं। आपके जीवन का हर क्षण और आपका अस्तित्व सर्वथा गवाही देता है कि यदि आपने नुबूवत की घोषणा की है तो इस घोषणा में आप अनिवार्यत: सच्चे हैं।

कोई कह सकता है कि संभव है कि आप (सल्ल॰) को नबी होने का भ्रम हो गया हो और वास्तव में आप (सल्ल॰) को नुबूवत प्रदान न की गयी हो। तो इस संबंध में यह जान लेना आवश्यक है कि नुबूवत अपनी सच्चाई का स्वयं प्रमाण होती है। प्रमाण की आवश्यकता तो वहां पेश आती है जहां किसी प्रकार का संदेह होता हो, या किसी चीज़ के ग़लत होने की संभावना पायी जाती हो। जिन शक्तियों एवं क्षमताओं से हम काम लेते हैं उन पर विश्वास करने के लिए स्वयं वे क्षमताएं ही पर्याप्त होती हैं। उन्हें मानने के लिए किसी अन्य प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती, क्योंकि वे अपना प्रमाण स्वयं हैं। ठीक यही स्थिति नबी की होती है। जो चीज़ उसे पेश आती है और जिसका उसे अनुभव होता है उस पर विश्वास करने के लिए किसी बाह्य प्रमाण की आवश्यकता नहीं। वह्य (प्रकाशना) चाहे स्वप्न के रूप में हो या जागृत अवस्था में उस पर अवतरित हो, वह किसी संदेह के बिना पहचान लेता है। वह उस स्वप्न को भी जानता है जो मात्र ख़याल होता है, प्रकाशना नहीं होती। स्वप्न के माध्यम से किसी परोक्ष बात की सूचना का द्वार उसके लिए भी खुला हुआ है जो नबी नहीं है। और यह इसलिए कि जानने वाले जान लें कि भौतिक संसाधनों के अतिरिक्त भी ज्ञान का कोई साधन संभव है। इसलिए नबियों की प्रकाशना पर विश्वास न करने का कोई उचित कारण नहीं।

नबी (सल्ल॰) का जीवन

नबियों का जीवन चरित्र की दृष्टि से निष्कलंक होता है। उनके जीवन में झूठ, मक्कारी, छल-कपट और इसी प्रकार की कोई दूसरी चीज़ नहीं पायी जाती। ईश्वर के अंतिम दूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) को 40 वर्ष की अवस्था में पैग़म्बरी मिली। 40 वर्ष का आपका यह जीवन खुली किताब की तरह लोगों के सामने रहा है। लोगों को आप (सल्ल॰) पर पूरा भरोसा था। वे जानते थे कि इस व्यक्ति ने किसी भी मामले में, चाहे वह छोटा हो या बड़ा, छल-कपट से काम नहीं लिया और न कभी किसी को धोखा दिया, और न ही किसी षड्यंत्र में सम्मिलित हुआ। फिर यह कैसे हो सकता है कि ऐसा सच्चा व्यक्ति जिसने कभी कोई ग़लत बात ज़बान पर न आने दी हो, वह सहसा एक झूठ लेकर खड़ा हो जाए, और झूठ भी इतना बड़ा कि उससे बड़ा झूठ संभव नहीं कि वह ईश्वर के नबी होने का दावा कर दे, हालांकि वह ईश्वर का भेजा हुआ नबी न हो।

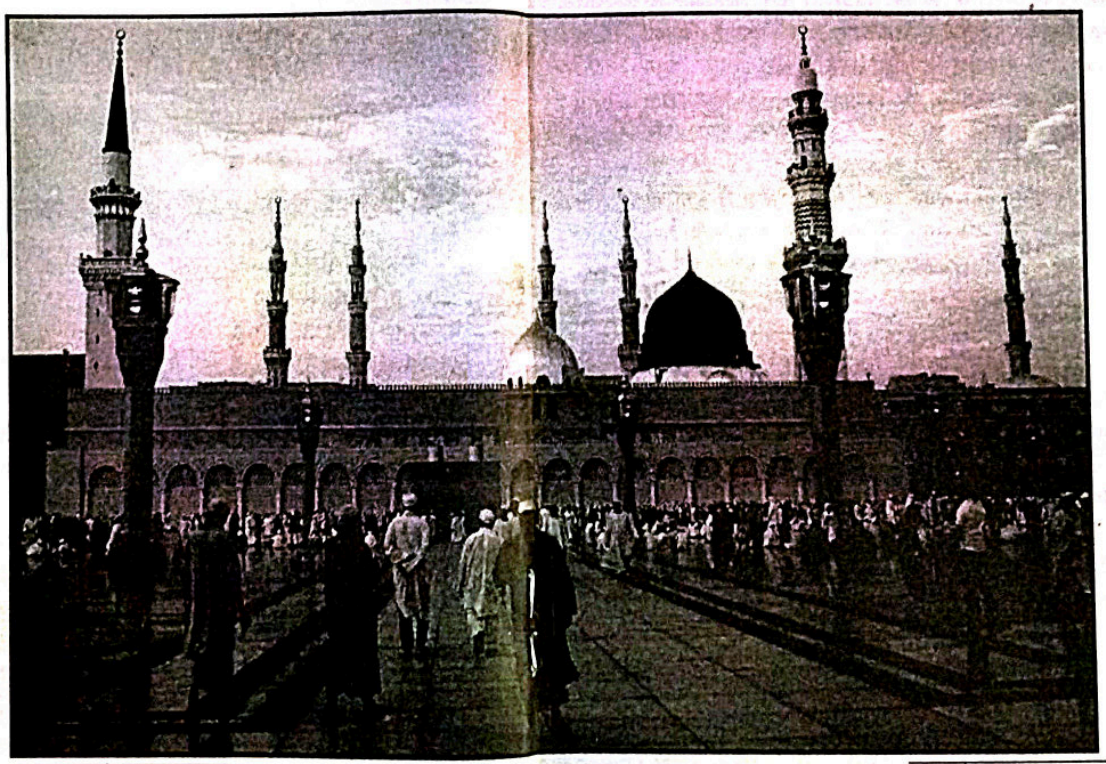

वह ईश्वर से संबद्ध करके लोगों को ज्ञान, सभ्यता आदि की शिक्षा देने लगे और यह कहे कि ये शिक्षाएं उसके मन की उपज नहीं, बल्कि ईश्वर की ओर से अवतरित हुई हैं।

फिर एक और पहलू से देखें, पूरे 40 वर्ष के जीवन में आपने कहीं से कोई शिक्षा नहीं पायी और न कहीं से कोई ऐतिहासिक जानकारियां प्राप्त कीं। फिर यह कैसे संभव हुआ कि सहसा ज्ञान और तत्वदर्शिता के स्रोत फूट पड़े और एक ऐसा अशिक्षित व्यक्ति जीवन की जटिल-से-जटिल समस्याओं की गुत्थियां सुलझाने लगता है और लोगों को आचार-विचार और नागरिकता आदि की शिक्षा देने लगता है। और कहता है कि मैं यह सारा काम ईश्वर की ओर से और उसके प्रदान किये हुए प्रकाश में कर रहा हूं। विरोधियों ने कहा : कोई है जो इस व्यक्ति को ये सारी बातें सिखाता है। लेकिन इस बात के झूठ होने में किसी को संदेह नहीं हो सकता, क्योंकि अरब में कोई ऐसी योग्यता का व्यक्ति था ही नहीं जिसके बारे में यह कहा जा सके कि जिस कलाम (वाणी) को मुहम्मद (सल्ल॰) ईश्वरीय वाणी कहकर प्रस्तुत कर रहे हैं वह उसी की कृति है। एक दीर्घकाल बीत गया लेकिन इस योग्यता का व्यक्ति आज तक अरब क्या पूरी दुनिया में पैदा न हो सका, जो मुहम्मद (सल्ल॰) के पेश किये हुए कलाम (क़ुरआन) के सदृश कोई कृति पेश कर सके।

नबी की नि:स्वार्थता

फिर आप जानते हैं कि छल-कपट करने वाले के समक्ष सदैव कोई सांसारिक लाभ होता है। उसी लाभ के लिए वह छलछंद करता और झूठा दावा करता है। लेकिन हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के जीवन में कहीं भी इसका कोई संकेत नहीं मिलता। बल्कि आप (सल्ल॰) ने अपने वारिसों के लिए भी कोई ऐसा उपाय करने का प्रयास नहीं किया जो उनके भौतिक हित के लिए लाभदायक हो। आप (सल्ल॰) हर पहलू से नि:स्वार्थ होकर उस काम में लगे रहे जिस काम पर ईश्वर ने आपको नियुक्त किया था।

विशेष आयोजन

आपने इसकी घोषणा भी कर दी थी कि "नबी का कोई वारिस नहीं होता। वह जो कुछ छोड़ता है, वह मुस्लिम ग़रीबों और मोहताजों में वितरित किया जाता है।"

(मुसनद अहमद)

क़ुरआन में भी इसका उल्लेख हुआ है कि हर पैग़म्बर ने अपनी क़ौम से स्पष्ट शब्दों में कहा था–

"मैं तुमसे कोई पारिश्रमिक नहीं मांगता, मेरा पारिश्रमिक तो केवल सम्पूर्ण संसार के प्रभु के ज़िम्मे है। बस ईश्वर का डर रखो और मेरी आज्ञा का पालन करो।"

(क़ुरआन, 26:109)

नबियों की निःस्वार्थता इतनी अधिक स्पष्ट है कि कोई उन पर यह इलज़ाम नहीं लगा सकता कि वे किसी स्वार्थ और व्यक्तिगत उद्देश्य के लिए परिश्रम करते और दुख उठाते रहे हैं। नुबूवत के दावे से पहले हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) को क़ौम आदर की दृष्टि से देखती थी। आप (सल्ल॰) अपने बाल-बच्चों में हंसी-ख़ुशी से दिन गुज़ार रहे थे। लेकिन नुबूवत की घोषणा के पश्चात अरब आपका शत्रु हो जाता है और आपको अपने ही लोग आपके ख़ून के प्यासे हो जाते हैं। एक व्यक्ति जो स्वार्थी और भौतिकवादी हो ऐसी ग़लती कभी नहीं कर सकता कि अकारण ही सबको अपना शत्रु बना ले और अपनी सुख-शांति को स्वयं ही नष्ट कर दे। झूठे और स्वार्थी व्यक्ति को सत्य-असत्य से कोई प्रयोजन नहीं होता, उसके समक्ष तो केवल अपना हित होता है। वह क़ौम की भावनाओं को आघात नहीं पहुंचा सकता, भले ही वे भावनाएं ग़लत ही क्यों न हों। उसे तो केवल अपना काम निकालना होता है। वह इसके लिए हर प्रकार के जोड़-तोड़ कर सकता है। यह नहीं हो सकता कि उसके समक्ष तो केवल सांसारिक लाभ और सुख हो और नीति ऐसी अपनाए जिससे कठिनाइयां और परेशानियां ही बढ़ती जाएं। सांसारिक लाभ तो अलग रहा, उसका अपना जीवन ही ख़तरे में पड़ जाए।

संसार की बड़ी-बड़ी विभूतियां साधारणतया उस वातावरण की देन होती हैं जिसमें वे जन्म लेती हैं। किसी व्यक्तित्व के बनाने या बिगाड़ने में वातावरण और परिस्थितियों का बड़ा हाथ होता है। किसी भी ऐतिहासिक व्यक्ति का सर्वेक्षण करके यह दिखाया जा सकता है कि उसके व्यक्तित्व के निर्माण में उसके वातावरण में अवस्थित किन-किन चीज़ों का कितना हिस्सा है। किन्तु हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के व्यक्तित्व का कमाल यह है कि वातावरण में हम उन तत्वों का स्रोत तलाश नहीं कर सकते जिन तत्वों से आपके व्यक्तित्व का निर्माण हुआ है और जो आपके व्यक्तित्व में परिलक्षित होती हैं। अरब ही नहीं, उन देशों और उनके समाज में से कहीं से भी वे तत्व खोजकर नहीं लाए जा सकते जिन देशों से अरबों के संबंध रहे हैं।

हज़रत नूह (अलैहि॰) का विस्तृत वृत्तांत प्रस्तुत करने के पश्चात कहा गया है–

"ये परोक्ष की ख़बरें हैं जिनकी प्रकाशना हम तुम्हारी ओर कर रहे हैं। इससे पहले न तुम्हें इनकी ख़बर थी, न तुम्हारी क़ौम को।" (क़ुरआन, 11:49)

इसी प्रकार अन्य बहुत से पैग़म्बरों और उनकी क़ौमों के वृत्तांत क़ुरआन में वर्णित हुए हैं। उन घटनाओं की वास्तविकता को भी पूर्णतः स्पष्ट किया गया है जिनका संबंध बनी-इसराईल के इतिहास से है और जिनके विषय में स्वयं बनी इसराईल के विद्वानों में मतभेद पाया जाता है। (देखें क़ुरआन की सूरा 27 का प्रारंभिक भाग) यदि क़ुरआन ईशवाणी नहीं है तो हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) को विभिन्न क़ौमों और उनके वृत्तांत का ज्ञान कहां से हुआ जो आपने क़ुरआन की सूरतों और आयतों में पेश किया है? ऐसी घटनाएं जिनको घटित हुए सैकड़ों और हज़ारों वर्ष हो चुके हैं, उनका ज्ञान आपको कहां से हुआ, जबकि आप पढ़े-लिखे भी न थे? क़ुरआन में इसका जवाब दिया गया है। उदाहरणार्थ हज़रत ईसा मसीह की माता मरियम और उनके पुत्र के जन्मदिन के वृत्तांत को प्रस्तुत करने के पश्चात कहा गया है–

"यह परोक्ष की सूचनाओं में से है जिसकी प्रकाशना हम तुम्हारी ओर कर रहे हैं। तुम तो उनके पास नहीं थे जब वे (उपासनागृह के सेवक) अपनी क़लमों को फेंक रहे थे कि उनमें से कौन मरियम का संरक्षक बने। और न तुम उस समय उनके पास थे जब वे झगड़ रहे थे।"

(क़ुरआन, 3:44)

क़ुरआन में पैग़म्बर हज़रत यूसुफ़ (अलैहि॰) के विस्तृत वृत्तांत को प्रस्तुत करने के पश्चात कहा गया है–

"ये परोक्ष की ख़बरें हैं जिनकी हम तुम्हारी ओर प्रकाशना कर रहे हैं। तुम तो (ऐ मुहम्मद!) उनके पास नहीं

थे, जब उन्होंने (यूसुफ़ के भाइयों ने) अपने मामले को पक्का करके षड्यंत्र किया था।'' (क़ुरआन, 12:102)

यह कैसे संभव हुआ

क़ुरआन में आसमानी किताबों (क़ुरआन से पूर्व के ईश्वरीय ग्रंथ) की शिक्षाओं, नबियों के वृत्तांत, विभिन्न जातियों के धर्मों और उनके विचारों का वर्णन और प्राचीन क़ौमों का इतिहास तो मिलता ही है, इसके अतिरिक्त इसमें नैतिकता, संस्कृति, अर्थ और राजनीति आदि की महत्वपूर्ण समस्याओं के संबंध में जिस व्यापक और गंभीर और गहरे ज्ञान का प्रदर्शन हुआ है, उसका स्रोत प्रकाशना के सिवा कुछ हो ही नहीं सकता। क़ुरआन में प्राचीन क़ौमों के जो वृत्तांत वर्णित हुए हैं, प्राच्यविदों ने उनकी खोज की है कि ये चीज़ें किन पुस्तकों या प्राचीन दस्तावेज़ों में मिलती हैं। उन्होंने जिन किताबों और स्रोत की खोज की है उन तक तो अरबों की पहुंच ही न थी। उन्होंने इस सिलसिले में जिन किताबों और स्रोतों का उल्लेख किया है उनमें इबरानी सुर्यानी और यूनानी पुस्तकें सम्मिलित हैं। अब सोचिए हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के पास अनुवादकों का दल कहां था जो उन किताबों के विभिन्न प्रकार के ऐतिहासिक तथ्यों से आप (सल्ल०) को अवगत कराता। मक्का नगर में ऐसा कोई पुस्तकालय भी न था जिससे इस सिलसिले में फ़ायदा उठाया जा सकता। इसमें संदेह नहीं कि आपने नुबूवत से पहले व्यापार के सिलसिले में अरब से बाहर का भी सफ़र किया था, किन्तु इसका कहीं कोई प्रमाण नहीं मिलता कि आपने बाहर जाकर विभिन्न पुस्तकालयों की सैर करने के लिए समय निकाला हो और वहां से ऐतिहासिक और धार्मिक जानकारियां प्राप्त की हों और उनके आधार पर अपनी नुबूवत का कारोबार चलाया हो।

फिर हम देखते हैं कि नुबूवत से एक पल भी पहले आपसे कोई ऐसी बात सुनने को नहीं मिली जिससे यह समझा जा सके कि आप पहले से ही विगत नबियों और विभिन्न जातियों के वृत्तांत से परिचित थे। अपने व्यापारिक सफ़रों में यदि आपने किसी ईसाई संत या यहूदी धर्माचारी से ऐतिहासिक एवं धार्मिक ज्ञान प्राप्त किया होता तो जिस समय आपने अपने नबी होने का दावा किया तो ईसाई और यहूदी दुनिया चुप नहीं रह सकती थी। वह तो यही कहती कि हज़रत मुहम्मद संपूर्ण ज्ञान हमारे यहां से बटोरकर ले गये हैं। फिर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की नुबूवत का यह भी खुला प्रमाण है कि आपने अशिक्षित होते हुए पिछली तमाम आसमानी किताबों का निचोड़ और सार संसार के समक्ष प्रस्तुत कर दिया। आप (सल्ल०) ने न केवल यह कि मानव के मार्गदर्शन के लिए जो कुछ भी सामग्री उन किताबों में थी सबको एकत्र कर दिया, बल्कि उनकी व्याख्या भी की। उन किताबों में जो क्षेपक पाया जाता था और उनमें स्वार्थवश लोगों ने जो अनुचित परिवर्तन कर दिये थे उन सब चीज़ों को आपने स्पष्ट किया। क्या यह किसी ऐसे व्यक्ति का कार्य हो सकता है जो एक मरुस्थल निवासी हो और संसार में पाये जाने वाले धर्मों और दर्शनों से उसका कोई नाता भी न रहा हो ? क़ुरआन में है कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के विरोधी कहते हैं–

''यह अपने रब की ओर से हमारे पास कोई निशानी क्यों नहीं लाता ?' क्या उनके पास अगली आसमानी किताबों की शिक्षाओं का स्पष्ट प्रमाण नहीं आ गया ?

(क़ुरआन, 20:133)

अर्थात क्या यह किसी प्रमाण और निशानी से कम है कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने लोगों के समक्ष पिछली किताबों की शिक्षाओं को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत कर दिया ! क्या यह काम किसी ऐसे व्यक्ति के लिए संभव था जो ईश्वरीय धर्मग्रंथों से अनभिज्ञ हो और जिसने कभी भी अपना समय धर्म-गुरुओं के साथ न गुज़ारा हो, फिर वह अचानक संसार को धर्म की उच्च शिक्षा देने लगा हो और पिछली धार्मिक किताबों और पिछले पैग़म्बरों के संबंध में ऐसी सूचनाएं देने लगा हो जो सत्य और हृदय-स्पर्शी प्रतीत होती हों ? हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने नबी होने के बाद जो महान कार्य करके दिखाया और जिस ज्ञान से दुनिया को परिचित कराया वह नुबूवत का पद-संबंधी कार्य भी है और अपने आप में आप (सल्ल०) की नुबूवत का खुला प्रमाण भी।

मुहम्मद (सल्ल०) की परीक्षा

फिर हम देखते हैं कि मक्का के कुछ विरोधियों ने यहूदियों के कहने पर नबी (सल्ल०) की परीक्षा लेने के लिए आप (सल्ल०) से पूछा कि बनी-इसराईल के मिस्र जाने का कारण क्या था ? अरब के लोग ऐसे इतिहास से बिल्कुल अपरिचित थे। इसीलिए उनके यहां कोई उल्लेख

नहीं पाया जाता था और स्वयं नबी (सल्ल॰) के मुख से भी इससे पहले यह क़िस्सा नहीं सुना गया था । वे समझते थे कि इस प्रश्न का उत्तर देना आपके लिए संभव नहीं और आप अपनी विवशता प्रकट करेंगे और फिर वे कह सकेंगे कि आप (सल्ल॰) ईश्वर के पैग़म्बर नहीं हैं । किन्तु हुआ यह कि यह प्रश्न करके वे अपने उद्देश्य में असफल ही रहे ।

ईश्वर ने उनके प्रश्न के उत्तर में एक पूरी सूरा, सूरा-12 यूसुफ़, अवतरित कर दी और हज़रत यूसुफ़ (अलैहि॰) के क़िस्से के माध्यम से मक्का वालों पर यह स्पष्ट कर दिया कि वे हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के साथ जो दुर्व्यवहार कर रहे हैं उसी प्रकार का दुर्व्यवहार हज़रत यूसुफ़ (अलैहि॰) के भाइयों ने भी हज़रत यूसुफ़ (अलैहि॰) के साथ किया था । हज़रत यूसुफ़ को ईश्वर ने उच्चता प्रदान की और अंततः उनके भाइयों को उनके समक्ष लज्जित होना पड़ा ।

इसी प्रकार क़ुरआन की सूरा-18 अल-कह्फ़ मक्का के बहुदेववादियों के तीन प्रश्नों के उत्तर में अवतरित हुई । नबी (सल्ल॰) की परीक्षा लेने के लिए मक्का के बहुदेववादियों ने यहूदियों और ईसाइयों के परामर्श से आप (सल्ल॰) से तीन प्रश्न किये । इन तीनों ही प्रश्नों का संबंध यहूदियों के इतिहास से था ।

उनके प्रश्न ये थे–

कह्फ़ (गुफा) वाले कौन थे ?

ज़ुलकरनैन कौन था ? उसका वृत्तांत क्या है ?

और ख़िज़्र का क़िस्सा क्या है ?

ये प्रश्न करके नबी (सल्ल॰) के विरोधी या यहूदी यह समझते थे कि आप (सल्ल॰) इन प्रश्नों के उत्तर नहीं दे सकते । इस प्रकार लोगों पर यह बात स्पष्ट हो जाएगी कि आप (सल्ल॰) के पास ज्ञान का कोई अलौकिक स्रोत नहीं है । इसलिए नबी होने का आपका दावा निराधार है । किन्तु उनकी आशा के विपरीत ईश्वर ने एक लम्बी सूरा-18 अल-कह्फ़ उतार दी और क़ुरैश के पूछे गये तीनों प्रश्नों के उत्तर दे दिये गये । और इस तरह आपके सच्चे पैग़म्बर होने का एक ज्वलंत प्रमाण विरोधियों के प्रश्न ने जुटा दिया ।

क़ुरआन में जो भविष्यवाणियां की गयी हैं वे भी इस बात की प्रमाण हैं कि ऐसी भविष्यवाणियां वही व्यक्ति कर सकता है जिसके पास ज्ञान का कोई विश्वसनीय स्रोत हो, अर्थात जिसे ईश्वर सत्य से अवगत करा रहा हो । केवल अटकल और अनुमान से भविष्य में घटित होने वाली घटनाओं के विषय में यक़ीन के साथ कुछ कहकर कोई भी समझदार व्यक्ति अपने सिर ख़तरा मोल नहीं ले सकता, इसलिए कि अगर अटकल और अनुमान के विपरीत बात सामने आती है तो फिर यह दावा ग़लत ठहरेगा कि जो कुछ कहा गया है वह पैग़म्बर ने ईश्वर की ओर से कहा है, और ईश्वर की ओर से दी गयी सूचना ग़लत कैसे हो सकती है । क़ुरआन ने जो भविष्यवाणियां की थीं, वे सब सत्य सिद्ध हुईं । उदाहरणार्थ– क़ुरआन ने कहा था रोम (रूम) जो ईरानियों के मुक़ाबले में परास्त हुआ है, वह कुछ ही वर्षों में प्रभुत्वशाली होकर रहेगा । यह भविष्यवाणी अक्षरशः पूरी हुई । हालांकि जिन परिस्थितियों में यह भविष्यवाणी की गयी थी, रोम के पुनः उभरने और विजयी होने के दूर-दूर तक कोई लक्षण दिखायी नहीं दे रहे थे । एडवर्ड गिब्बन जैसे प्रसिद्ध इतिहासकार ने भी अपनी किताब में इसे स्वीकार किया है ।

एक ख़ास पहलू

एक और पहलू से देखें । पैग़म्बर (सल्ल॰) को विभिन्न परिस्थितियों का सामना करना पड़ा । कठिन-से-कठिन परिस्थितियों से आप (सल्ल॰) गुज़रे । ऐसी परिस्थितियों में बड़े-से-बड़े व्यक्ति के यहां भी कुछ-न-कुछ कड़वाहट का प्रभाव अवश्य पाया जाता है, और यह स्वाभाविक बात है । ख़ुद अपनी इज़्ज़त और मर्यादाओं पर यदि आक्रमण हो रहा हो तो आदमी उससे प्रभावित हुए बिना नहीं रहता । किन्तु हम देखते हैं कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) जो क़ुरआन ईश्वरीय वाणी के रूप में पेश कर रहे थे, वह ऐसी कड़वाहटों और प्रतिक्रियाओं से मुक्त है । उसमें कहीं भी झुंझलाहट या किसी प्रकार की मानसिक दुर्बलता खोजी नहीं जा सकती । यह स्वयं अपने आप में खुला प्रमाण है कि क़ुरआन मानव की रचना नहीं हो सकता, बल्कि वह सारे संसार के प्रभु ईश्वर की वाणी है और यह (क़ुरआन) स्पष्ट प्रमाण है कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) एक सच्चे पैग़म्बर हैं, क्योंकि ईश्वरीय वाणी पैग़म्बर पर ही अवतरित होती है ।

नबियों की चेतावनी

नबियों की सच्चाई की एक महत्वपूर्ण दलील यह रही है कि जब क़ौमों की सरकशी हद से बढ़ गयी, यहां तक कि वे अपने नबियों से ईश्वरीय यातना की मांग करने लगीं तो नबियों ने उन्हें सूचित किया कि वे शीघ्र ही ईश्वरीय

यातना में ग्रस्त होने वाली हैं, बस थोड़ा और सुख भोग लें, वे ईश्वरीय प्रकोप से बच नहीं सकतीं । हम देखते हैं कि नबियों की सूचना के अनुसार वे क़ौमें तबाह कर दी गयीं । हालांकि जब नबियों ने किसी क़ौम को उसकी तबाही की सूचना दी तो उस समय उस क़ौम में दैवी आपदा के कोई चिह्न दिखायी नहीं दे रहे थे । क़ुरआन में इसके कई उदाहरण दिये गये हैं ।

यहां यह प्रश्न किया जा सकता है कि ईश्वर की अवज्ञा करने और सरकशी की नीति अपनाने पर आख़िर आज क्यों ख़ुदा का अज़ाब नहीं उतरता ? इसका जवाब यह है कि पैग़म्बर की मौजूदगी में उसके और उसके संदेश के इन्कार की संगीनी हद दर्जा बढ़ी हुई होती है । इसलिए कि सीधे उसका विरोध करने और उसके संदेश को रद्द करने, उसे सताने और उसके अस्तित्व को ही सहन न करने और उससे ईश्वरीय यातना की मांग करने के अपराध में और उस अपराध में मौलिक अंतर पाया जाता है जो उस समय किया जाए जब पैग़म्बर मौजूद न हो या सीधे क़ौम को संबोधित न कर रहा हो या प्रत्यक्षत: उसके व्यक्तित्व को निशाना न बनाया जा रहा हो । यही कारण है कि नबी के पश्चात् के लोगों को या उन क़ौमों को जिनसे प्रत्यक्षत: नबी ने संबोध न न किया हो, अधिक-से- अधिक मोहलत या संभलने का अवसर मिलता है । और वे संसार में यातना और दंड से बच भी जाती हैं, किन्तु इसका अर्थ यह कदापि नहीं होता कि उनकी कभी पकड़ ही न होगी । किसी व्यक्ति व जाति की सज़ा के लिए परलोक की यातना पर्याप्त है ।

फिर यातना या अज़ाब के विभिन्न रूप होते हैं । किसी क़ौम को जीवित तो रहने दिया जाए किन्तु उसकी हैसियत एक पतित क़ौम की बना दी जाए, क्या यह किसी अज़ाब से कम है ? कोई क़ौम सत्य के प्रकाश से वंचित रहकर जानवरों की तरह जी रही हो और वह जीवन के उच्चतम मूल्यों से अपरिचित ही रहे, क्या यह कोई साधारण दंड है ? फिर ऐसा भी नहीं है कि क़ौमों पर अज़ाब आना बंद हो गया है । अब भी क़ौमों पर अज़ाब आते ही रहते हैं । ये अज़ाब छोटे भी होते हैं, बड़े भी । छोटे अज़ाब साधारणतया चेतावनी के लिए होते हैं और बड़े अज़ाब निर्णायक होते हैं । किन्तु इसकी ओर ध्यान दिलाने वाले लोग नहीं हैं जो यह बताएं कि संसार में केवल प्राकृतिक नियम ही कार्यान्वित नहीं हैं, बल्कि यहां नैतिक क़ानून भी क्रियाशील है ।

यदि थोड़ा भी विचार किया जाए तो स्पष्ट: पाएंगे कि यहां दुख और आपदाओं के पीछे केवल प्राकृतिक नियम ही नहीं, बल्कि नैतिक नियम भी कार्यान्वित दिखायी देते हैं । दैविक आपदाओं और यातनाओं का सर्वेक्षण करने वाले उसके कारण की खोज सामान्यत: प्राकृतिक नियमों ही में करते हैं । वे यह नहीं सोचते कि कोई ईश्वर भी है जो अत्याचारी व्यक्तियों और ज़ालिम क़ौमों को विभिन्न तरीक़ों से चेतावनी देता है । कभी एड्स आदि असाध्य रोगों के रूप में, कभी अशांति और भयानक युद्धों के रूप में यह चेतावनी दी जाती है । और कभी तो चेतावनी ही नहीं, बल्कि नगर-के-नगर विनष्ट कर दिये जाते हैं और उनके नामो-निशान तक मिट जाते हैं यदि कुछ अवशेष रहते हैं तो केवल इसलिए कि लोग उनसे शिक्षा ग्रहण करें ।

रोम-राज्य का नगर पोम्पीआई लैंगिक दुराचार में ग्रस्त था । उसका परिणाम वही हुआ जो लूत (अलैहि०) की क़ौम का हुआ था । ज्वालामुखी पर्वत से निकलने वाले लावे और आग ने नगरवासियों को अपनी लपेट में ले लिया । यह तबाही दिन में अचानक उस समय आयी जब नगर में पूरी तरह चहल-पहल थी । यह नगर गुनाह और व्यभिचार का केन्द्र बना हुआ था । लोग मस्ती में इतने डूबे हुए थे कि ज्वालामुखी का शोर सुनकर भी किसी ने वहां से पलायन न किया । एक परिवार के लोग भोजन कर रहे थे, वे उसी दशा में पत्थर बन गये । लावे से पथरा जाने वाले अधिकतर जोड़े संभोग-क्रिया में व्यस्त थे और अधिकतर जोड़े समलैंगिक थे । उन जोड़ों में अधिसंख्या युवा और युवतियों की पायी गयी है । खुदाइयों में जो प्राप्त पथरा जाने वाले या अश्मिभूत चेहरे मिले हैं, उन चेहरों से घबराहट और बौखलाहट ज़ाहिर होती है । ऐसा लगता है कि वे लोग सहसा आपदा में ग्रस्त हुए हैं । इस तरह की तबाही को क़ुरआन ने अचानक आने वाली आपदा कहा है । क़ुरआन में एक जगह आया है-"उसके पश्चात उसकी (अत्याचारी) क़ौम पर हमने आकाश से कोई सेना नहीं उतारी, और हम इस तरह उतारा भी नहीं करते । वह तो केवल एक प्रचंड चिंघाड़ थी, तो सहसा क्या देखते हैं कि वे बुझकर रह गये ।" (क़ुरआन, 36:28-29)

''पूरब और पश्चिम सब अल्लाह के हैं । जिस ओर भी तुम रुख़ करोगे, उसी ओर अल्लाह का रुख़ है । अल्लाह सर्वव्यापी और सब कुछ जानने वाला है ।''

(क़ुरआन, 2:115)

A WELL WISHER

PATNA (BIHAR)

शराब से समाज में हर स्तर पर तबाही

❖ भारत डोगरा

प्राय: शराब के दुष्परिणाम का आकलन इस तरह किया जाता है कि शराबी को क्या नुक़सान हुआ, पर अब अनुसंधानकर्ता इस ओर ध्यान देने लगे हैं कि शराबी के संपर्क में आने वालों पर क्या, कितना और कैसा नुक़सान हुआ । न्यूज़ीलैंड के एक अध्ययन से पता लगा कि दूसरी तरह की क्षति पहली तरह की क्षति से अधिक है ।

इस तरह का सबसे चर्चित अध्ययन ऑस्ट्रेलिया में फाउंडेशन फॉर एल्कोहल रिसर्च एंड एजूकेशन की सहायता से किया गया । इस अध्ययन को विश्व स्वास्थ्य संगठन ने बहुत महत्वपूर्ण माना है ।

इस अध्ययन से पता चला कि एक वर्ष में किसी दूसरे के शराब पीने से अन्य लोगों की ऑस्ट्रेलिया में क्या क्षति हुई-367 व्यक्ति मारे गये, 13,660 अस्पताल में भर्ती हुए, 19,443 बच्चों के विशेष केयर की व्यवस्था करनी पड़ी, 25,481 परिवार के सदस्यों पर हमला हुआ तथा 44,852 अन्य व्यक्तियों पर हमला हुआ । किस स्तर पर अन्य लोग प्रभावित हुए उसके बारे में पता चला कि 73 प्रतिशत व्यक्तियों की कुछ न कुछ क्षति हुई ।

शराब के हिंसा, अपराध व नज़दीकी रिश्ते या संबंध टूटने के रूप में बहुत गंभीर सामाजिक दुष्परिणाम भी हैं । कुछ अध्ययनों ने शराब के इन सामाजिक दुष्परिणामों की आर्थिक क़ीमत लगाने का प्रयास किया है जिससे पता चलता है कि शराब के सामाजिक दुष्परिणाम कितने महंगे पड़ते हैं ।

(1) यूरोपीयन यूनियन के लिए वर्ष 2003 में लगाये गये अनुमान में शराब के सामाजिक दुष्परिणामों की क़ीमत 125 अरब यूरो लगायी गयी । (2) केवल एक देश यू॰के॰ के लिए वर्ष 2009 में लगाए गये अनुमान में शराब के सामाजिक दुष्परिणामों की क़ीमत 21 अरब पाउंड लगायी गयी । (3) संयुक्त राज्य अमेरिका के लिए वर्ष 2006 में शराब के सामाजिक दुष्परिणामों की क़ीमत 233 अरब डॉलर लगायी गयी । (4) दक्षिण अफ़्रीक़ा के लिए वर्ष 2009 में शराब के सामाजिक दुष्परिणामों की क़ीमत 300 अरब रैंड लगायी गयी जो कि सकल राष्ट्रीय उत्पाद के 10 से 12 प्रतिशत के बराबर थी ।

निश्चय ही यह आंकड़े अपने में बहुत महत्वपूर्ण तो हैं पर इसके आगे यह भी कहना चाहिए कि शराब से उत्पन्न हिंसा में जितने लोग मारे जाते हैं या नज़दीकी रिश्ते बिगड़ जाते हैं उससे उत्पन्न गहरे दुख-दर्द की तो शायद कोई क़ीमत लगायी ही नहीं जा सकती है । यह क्षति तो असहनीय हद तक गहरा दुख-दर्द देने वाली हैं ।

न्यूज़ीलैंड में किये गये चार वर्ष के अध्ययन में एल्कोहल की कम व अधिक उपलब्ध होने की भिन्न स्थितियों में अपराधों की दर की तुलना की गयी । इस अध्ययन से पता चला कि जहां एल्कोहल कम उपलब्ध हुई वहां अपराध भी कम हुए ।

संयुक्त राज्य अमेरिका में नेशनल काउंसिल ऑन एल्कोहलिस्म एंड ड्रग डिपेंडेंस को संक्षेप में नकैड कहा जाता है । नकैड की एक रिपोर्ट के अनुसार संयुक्त राज्य अमेरिका में घरेलू अपराध, नशे में कार चलाना, नशीली दवा अपराध व पब्लिक आर्डर अपराध प्राय: जेल जाने का कारण बनते हैं व जेल का कारण बने मामलों में से 80 प्रतिशत में शराब की भूमिका होती है ।

सभी हिंसक अपराधों में से 40 प्रतिशत में शराब की भूमिका होती है । सज़ा सुना दिये गये व जेल में रह रहे 20 लाख अपराधियों में से 37 प्रतिशत ने कहा कि वे अपराध वाली घटना के समय शराब पी रहे थे । किसी अवैध नशीली दवा की अपेक्षा शराब ही सबसे अधिक हिंसक अपराधों (जैसे हत्या, बलात्कार, हमले, बच्चों व पत्नी से दुर्व्यवहार) से जुड़ी पायी गयीं ।

संयुक्त राज्य अमेरिका में एक वर्ष में 30 लाख हिंसक अपराध ऐसे होते हैं जिनमें हिंसा का शिकार बने व्यक्ति कहते हैं कि हिंसा करने वाले शराब पी रहे थे या उसके नशे में थे । जब एक दूसरे को भली-भाँति जानने वाले व्यक्तियों के बीच हिंसा हुई तो इनमें से दो तिहाई मामलों में शराब की

भूमिका देखी गयी । संयुक्त राज्य अमेरिका में एक वर्ष में दस लाख से अधिक लोग नशे में ड्राइविंग के लिए गिरफ़्तार होते हैं । 21 वर्ष से कम आयु वर्ग में शराब व नशीली दवा के नशे में गाड़ी चलाना मृत्यु, घायल होने व अपंगता का सबसे बड़ा कारण है । इसके अतिरिक्त शराब उद्योग के बढ़ने से पर्यावरण और खाद्य सुरक्षा पर भी बहुत प्रतिकूल असर पड़ता है ।

कुछ समय पहले जब महाराष्ट्र के मराठवाड़ा क्षेत्र से गंभीर जल संकट के समाचार प्राप्त हुए, तो इसके साथ यह समाचार भी प्राप्त हुए कि यहां केवल औरंगाबाद में ही शराब के लगभग दो सौ कारख़ाने हैं जिनमें पीने योग्य पानी का भरपूर उपयोग होता है । जल संकट के इस क्षेत्र में विशाल जल राशि गन्ने की खेती और शराब के कारख़ानों को उपलब्ध करवायी जाती है । इन दोनों का आपस में संबंध भी है, क्योंकि गन्ने से शराब के कारख़ानों को अपने उत्पाद का कच्चा माल प्राप्त होता है । कुछ अन्य जल संकट के स्थानों में वाइन के उत्पादन को तेज़ी से बढ़ाने के लिए अंगूरों की खेती की तेज़ी से बढ़ाया जा रहा है । ब्रिटेन की प्रतिष्ठित इकलाजिस्ट पत्रिका में कुछ समय पूर्व यह प्रकाशित हुआ था कि एक लिटर वाइन में 960 लिटर पानी ख़र्च होता है ।

इसके अतिरिक्त पंजाब व अन्य राज्यों से इस विषय में गंभीर समाचार मिलते रहे हैं कि शराब के कारख़ानों ने नदियों व अन्य जल-स्रोतों को बहुत बुरी तरह प्रदूषित किया है । शराब के कारख़ानों में कितना पानी लगता है और इसके अवशेषों से कितने जल-स्रोत प्रदूषित होते हैं, इनका ऑडिट होना चाहिए । तभी इस बारे में पूरी जानकारी सामने आ सकेगी । पर अनेक रिपोर्टों से जो जानकारी अभी तक सामने आयी वह इस ओर स्पष्ट संकेत करती है कि शराब की बढ़ती खपत के साथ जल संकट पर भी बहुत प्रतिकूल असर पड़ता है ।

भारत में वर्ष 2005 और 2016 के बीच शराब की खपत दोगुनी से भी अधिक हो गयी है । वर्ष 2025 तक की वृद्धि के जो अनुमान है उससे 2005 और 2025 के बीच यह वृद्धि तीन और चार गुणा के बीच होगी । शराब के उपभोग से इतनी वृद्धि का जल-संकट से कितना गंभीर परिणाम पड़ रहा है, इसकी सही समझ बनाना व इस समझ से आधार पर समुचित उठाना ज़रूरी है । इसके अतिरिक्त शराब के उत्पादन से ग्रीन हाऊस गैसों का अत्यधिक उत्सर्जन भी जुड़ा है । शराब के कारख़ानों के आसपास रहने वाले लोगों को बहुत दुर्गंध झेलनी पड़ती है ।

पर्यावरण के लिए यह हर दृष्टि से यह तबाही का उद्योग है । शराब के उद्योग का कच्चा माल प्राप्त करने के लिए बहुत-सी उपजाऊ भूमि को ज़रूरी खाद्यों के उत्पादन से हटाया जाता है व बहुत से सिंचाई के पानी को भी इस तरह हटाया जाता है । कुछ खाद्यों का उपयोग पोषण की जगह नशे के लिए किया जाता है, क्योंकि उससे ज़्यादा मुनाफ़ा मिलता है ।

विश्व स्वास्थ्य संगठन की स्टेटस रिपोर्ट में बताया गया है कि विश्व में प्रति व्यक्ति एल्कोहल उपयोग बढ़ रहा है तथा यह वृद्धि मुख्य रूप से चीन व भारत में शराब के उपयोग में वृद्धि के कारण हो रही है । इसके लिए एक कारण यह है कि शराब उद्योग द्वारा शराब की बिक्री बढ़ाने के लिए अधिक ज़ोर लगाया जा रहा है । इस समय भी प्रति व्यक्ति शराब की खपत संयुक्त राज्य अमेरिका व यूरोप के धनी देशों में सबसे अधिक है, पर वृद्धि की दर चीन व भारत में अधिक है ।

हाल के समय में इस तरह की वारदातें बढ़ती जा रही हैं जिनमें शराब के नशे में बहुत गंभीर अपराध किये जा रहे हैं । दूसरी ओर शराब के विरुद्ध जन-अभियान या आंदोलन जैसे प्रयास पहले से कमज़ोर पड़ गये हैं । इसके बावजूद यदि हम दूर-दूर के गांवों में जाएं तो पता चलता है कि ग्रामीण महिलाओं में आज भी शराब के विरुद्ध ज़बरदस्त आक्रोश है और वे शराब की बुराई को कम करने के लिए बहुत कुछ करना चाहती है । गांव के कई अन्य भले लोग भी उनके साथ हैं । पर महिलाओं की इस समाज सुधार की गहरी चाह को अधिकांश स्थानों पर उत्साहवर्धक अभिव्यक्ति नहीं मिल पा रही है ।

अब यह समय आ गया है कि देश भर में बहुत स्पष्ट शराब विरोधी नीति बनायी जाए । इसका आधार यह होना चाहिए कि शराब के व्यापक व गहरे स्वास्थ्य व सामाजिक दुष्परिणाम भली-भाँति प्रमाणित हैं व शराब की खपत को जितना हो सके उतना कम करना है । शराब के गंभीर दुष्परिणामों के बारे में सरकार को निरंतरता से व्यापक अभियान चलाना चाहिए व ऐसे अन्य सामाजिक अभियानों को प्रोत्साहित करना चाहिए । (विविधा फ़ीचर्स)

यूरोप में वीरान होते गिरजाघर



यूरोप और अमेरिका में लंबे समय से गिरजाघर बंद होते जा रहे हैं । मीडिया में आयी ख़बरों के अनुसार यूरोपीय देशों में हज़ारों गिरजाघर स्थानीय आबादी की लापरवाही का शिकार हैं । समाज में फैल चुकी धर्मविमुखता के कारण ईसाई नागरिकों ने संडे प्रेयर करना भी छोड़ दिया है । उन देशों के मुस्लिम नागरिक ऐसे गिरजाघरों को ख़रीद कर उन्हें मस्जिदों के तौर पर इस्तेमाल कर रहे हैं ।

रिपोर्ट के अनुसार अमेरिका में प्रतिवर्ष 20 गिरजाघर बंद किये जा रहे हैं । डेनमार्क की सरकार की ओर से जारी किये गये आंकड़ों में बताया गया है कि 2015 ईसवी के बाद एक साल में 200 चर्च बंद हुए थे । जर्मनी में पिछले कुछ वर्षों के दौरान 515 गिरजाघरों को ताले लगाए गये । हॉलैंड के कैथोलिक ईसाई संप्रदाय के लोगों का विचार है कि अगले 10 साल में उनके 1600 गिरजाघरों में से दो तिहाई बंद हो जाएंगे, जबकि प्रोटेस्टेंट वर्ग का कहना है कि 4 वर्षों में 700 गिरजाघर बंद किये गये हैं ।

अमेरिका के जार्ज टाउन यूनीवर्सिटी के एक अध्ययन के अनुसार यूरोप महादेश में अधार्मिता के बढ़ते प्रभाव ने गिरजाघरों को वीरान कर दिया है । फ्रांस के जनरल व्यू इंस्टीट्यूट की रिपोर्ट के अनुसार केवल 29 प्रतिशत लोग गिरजाघरों में प्रेयर के लिए जाते हैं, जबकि 71 प्रतिशत लोग धार्मिक शिक्षाओं पर विश्वास नहीं रखते । फ्रांसीसी ईसाई की तुलना में आयरिश ईसाई ज़्यादा धार्मिक हैं जो 49 प्रतिशत लोग चर्च में साप्ताहिक हाज़िरी देते हैं । उनकी तुलना में इटालियन कम धार्मिक हैं, मगर इसके बावजूद इटली में 39 प्रतिशत ईसाई गिरजाघरों में जाते हैं । इसी तरह स्पेन में 25 प्रतिशत, ब्रिटेन में 21 प्रतिशत, जर्मनी में 11 प्रतिशत, डेनमार्क में 6 प्रतिशत लोग चर्चों में जाते हैं । सोशल साइंस केन्द्र की रिपोर्ट के अनुसार 2030 तक यूरोप में मुसलमानों की आबादी में 8 प्रतिशत तक की वृद्धि हो जाएगी ।

ए॰एफ॰डी॰ की पूर्व ज्वाइंट चेयर पर्सन फ्रॉउके पेट्री ने कहा है कि मुसलमान जर्मनी को अपना घर बना सकते हैं लेकिन इसके लिए उन्हें अपने धार्मिक मान्यताओं और राजनीतिक उद्देश्य में अन्तर करना पड़ेगा । उन्होंने कहा कि जर्मनी ने लाखों प्रवासियों को शरण दी है और मुसलमानों को भी इस मौक़े का फ़ायदा उठाना चाहिए ।

यह बात महत्वपूर्ण है कि प्रवासियों के संकट के बाद यूरोप और विशेष रूप से जर्मनी में होने वाले अनगिनत आतंकवादी हमलों के नतीजे में जर्मनी में भी यह बहस जारी है कि अतिवादी सोच को किस तरह बदला जाए । ऐसी स्थिति में दक्षिणपंथी और कट्टर विचारधारा रखने वाली राजनीतिक पार्टियों ने इस्लाम और प्रवासी विरोध की राजनीति करते हुए अपने वोट बैंक को बढ़ाया है । 2015 ई॰ के आंकड़ों के अनुसार जर्मनी की कुल 82.3 मिलियन आबादी में मुसलमानों की संख्या 4.5 मिलियन है ।

"ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, अगर तुम वास्तव में अल्लाह ही की बन्दगी करने वाले हो तो जो स्वच्छ अच्छी चीज़ें हमने तुम्हें प्रदान की हैं उन्हें बेझिझक खाओ और अल्लाह का शुक्र अदा करो ।"

(क़ुरआन, 2:172)

A WELL WISHER

PATNA (BIHAR)

कन्या भ्रूण हत्या : एक सामाजिक अभिशाप

❖ नुज़हत यासमीन

आज के भारतीय समाज की ज्वलंत समस्याओं में निर्मम कन्या भ्रूण हत्याओं का सिलसिला निरंतर जारी है । इन हत्याओं की शृखला में उन मासूम बच्चियों को नहीं भुलाया जा सकता, जो मां की कोख में मृत्यु के घाट उतार दी जाती है । यह अपरिपक्व काया जो मानव स्वरूप में आने से पहले ही मौत की नींद सुला दी जाती है, इसका अपराध बस यह है कि वह एक कन्या के रूप में इस दुनिया में आंख खोलने वाली थी ।

बच्चियों की हत्या नयी नहीं है, इसका संबंध प्राचीनकाल से है । प्राचीनकाल में कन्या भ्रूण हत्या (Female Foeticide) प्रचलित नहीं थी, बल्कि कन्या शिशु हत्या (Female Infanticide) का चलन था । नवजात कन्या शिशु को गला दबाकर, पानी में डुबा कर या धतूरे का रस पिला कर मार दिया जाता था । आज भी इस प्रथा के नमूने हमें प्राय: ख़बरों में मिलते रहते हैं ।

जैसे मां या पिता ने नवजात कन्या का गला दबाकर या उसे छत से नीचे फेंक कर हत्या कर दी । कभी कोई नवजात कन्या कचरे के ढेर में जीवित या मृत अवस्था में पायी जाती है । कभी अस्पताल में नवजात कन्या को छोड़कर माता-पिता फ़रार हो जाते हैं ।

आज आधुनिक टेकनोलॉजी के आ जाने से इस कुप्रथा ने एक नया रूप धारण कर लिया है । उन्नत संसाधनों की सहायता से बच्चियों की हत्या सुरक्षित और गोपनीय हो गयी है । यह कितनी दुखद विडंबना है कि इन मासूम ज़िन्दगियों की हत्या में माता-पिता (जो कि अधिकतर मामलों में शिक्षित होते हैं । डाक्टर्स, नर्सें और पूरा अस्पताल या नर्सिंग होम शामिल रहता है ।

बच्चियों के साथ इस दुर्व्यवहार के अनेक कारण हैं–

1. लिंग भेद : लिंग भेद इसका सबसे बड़ा कारण है । समाज लड़कियों को वह मक़ाम नहीं देता जिसकी वह अधिकारिणी हैं । मानव प्रवृत्ति है कि वह कमज़ोर को सम्मान नहीं देता और उस पर अत्याचार करना पसन्द करता है । लड़कियां शारीरिक रूप से निर्बल होती हैं, प्राय: आर्थिक रूप से सहायक नहीं होतीं और पुरुष प्रधान समाज के शोषण का शिकार होती हैं ।

2. दहेज प्रथा : भारतीय समाज में दहेज के अभिशाप के कारण भी माता-पिता एवं समाज लड़कियों को पसन्द नहीं करते । एक दम्पत्ति की यदि कई लड़कियां हों तो वह दुखी और खिन्न रहते हैं, क्योंकि दहेज प्रथा के कारण लड़कियों के विवाह में अनेक अड़चनें आती हैं । पिता की आर्थिक स्थिति अच्छी न हो तो कभी लड़कियां और कभी पिता आत्महत्या के कगार तक पहुंच जाते हैं । यह भी एक कारण है लड़कियों के जन्म को ही नकार दिये जाने का ।

3. परिवार नियोजन : परिवार नियोजन की योजना ने कन्या भ्रूण हत्या को बढ़ावा दिया है । इस समाज में हर दम्पत्ति की यह इच्छा होती है कि उसके घर लड़के का जन्म हो । लड़के का जन्म माता-पिता को गर्व का अनुभव कराता है और समाज में उनका सम्मान बढ़ जाता है, जबकि लड़की के जन्म पर हीन भावना उत्पन्न होती है । यदि पहली संतान बेटी हो तो पुत्र पाने की इच्छा अति प्रबल हो उठती है, दम्पत्ति भ्रूण का लिंग जानने के लिए उत्सुक हो उठते हैं । ग़ैर-क़ानूनी तौर पर टेस्ट कराते हैं । यदि भ्रूण लड़की का है तो गर्भपात करा दिया जाता है और इस तरह न जाने कितनी बच्चियों की हत्या कर दी जाती है ।

4. सुरक्षा : आज समाज में लड़कियों की सुरक्षा एक गंभीर समस्या बनी हुई है । विशेष रूप से जिस तरह छोटी-छोटी बच्चियों के बलात्कार और उनकी हत्या के मामले सामने आ रहे हैं वह किसी भी माता-पिता का दिल

दहला देने के लिए काफ़ी है । इन हालात में एक दम्पत्ति की यह सोच बनती है कि उसके घर लड़की जन्म न ले । यह सोच उन्हें विवश करती है कि मां की कोख में ही बच्ची की हत्या कर दी जाए ।

कन्या भ्रूण हत्या के कारण लड़कों की तुलना में लड़कियों की संख्या लगातार घटती जाती है । आंकड़ों के अनुसार लड़कियों की संख्या का गिरता ग्राफ़ यह दर्शाता है कि यह सिलसिला अगर यूं ही जारी रहा तो देश में यह असंतुलन घोर संकट बन खड़ा होगा ।

इस्लाम से पहले अरब देश में भी कमोबेश यही स्थिति पायी जाती थी । बच्चियों को घृणा की दृष्टि से देखा जाता था । किसी कन्या का जन्म पिता के सर को लज्जा से झुका देने के लिए काफ़ी था । इसी कारण उनके यहां यह प्रथा प्रचलित थी कि नवजात शिशु यदि कन्या है तो उसे जीवित गड्ढ़े में फेंक देते और गड्ढ़े में मिट्टी भर देते थे । कुरआन लोगों की इस विकृत मानसिकता का वर्णन करते हुए कहता है–

''जब इनमें से किसी को बेटी के पैदा होने की शुभ सूचना दी जाती है तो उसके चेहरे पर कलौंस छा जाती है और वह बस ख़ून का-सा घूंट पीकर रह जाता है । लोगों से छुपता फिरता है कि इस बुरी ख़बर के पश्चात क्या किसी को मुंह दिखाये । सोचता है कि अपमानपूर्वक बेटी को लिए रहे या मिट्टी में दबा दे ?'' (16:58,59)

आज हम एक ऐसे प्रगतिशील समाज में रहते हैं जहां चारों ओर उन्नति के नारे हैं । नारी सशक्तिकरण (Women Empowerment) की आवाज़ उठायी जाती है, वहीं दूसरी ओर एक कन्या को इस दुनिया में आंख खोलने की अनुमति नहीं दी जाती । हालांकि इस सिलसिले में कई बड़े क़ानून बनाए गये हैं, रैलियां निकाली गयीं हैं, सेमिनार भी आयोजित किये जाते रहे हैं, किन्तु यह कुप्रथा रुकने का नाम नहीं लेती ।

सीरत की किताबों में एक ऐसे व्यक्ति का उल्लेख मिलता है जिसने अपनी फूल-सी बच्ची को, जिससे वह स्नेह भी रखता था, केवल इसलिए ज़िंदा दफ़न कर दिया क्योंकि उसे लड़की का पिता कहलाना पसन्द नहीं था ।

क़ुरआन इन्सान की इस विकृत मानसिकता की घोर निंदा करता है और उन्हें यह याद दिलाता है कि परलोक में ईश्वर तुम्हारे कर्मों का हिसाब लेगा । जीवन और मृत्यु का मालिक ईश्वर है । किसी व्यक्ति को किसी की हत्या का अधिकार नहीं दिया जा सकता चाहे वह मां की कोख में पलने वाला भ्रूण ही क्यों न हो ? इस्लाम नारी को भी जीवित रहने का वैसा ही अधिकार देता है जैसा एक पुरुष को ।

कन्या की हत्या करने वालों को क़ुरआन याद दिलाता है कि उनका यह दुष्कर्म उन्हें परलोक में अल्लाह के प्रकोप का भागी बनाएगा ।

''और जब जीवित गाड़ी हुई लड़की से पूछा जाएगा कि वह किस क़सूर में मारी गयी ?'' (81:8,9)

ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने लोगों की इस विकृत मानसिकता को सुधारा । उनकी चेतना को जगाया । बच्चियों से स्नेह व प्रेम के व्यवहार की शिक्षा दी । बच्चियों के पालन-पोषण, उनकी शिक्षा-दीक्षा और वयस्क हो जाने पर उनके विवाह की प्रेरणा दी ।

नबी (सल्ल॰) ने फ़रमाया, ''जिसने तीन लड़कियों की परवरिश की और उनके साथ अच्छा व्यवहार किया तो उसके लिए जन्नत है ।'' (अबू दाऊद)

अल्लाह ने नबी (सल्ल॰) को चार बेटियां अता की थीं । आप (सल्ल॰) अपनी बेटियों से बहुत स्नेह रखते । आप (सल्ल॰) ने अपनी सभी बेटियों के साथ अच्छा व्यवहार किया और उनकी अच्छी परवरिश की ।

नबी (सल्ल॰) की शिक्षा और तर्बियत के कारण लोगों की सोच बदल गयी । वह लोग जो बेटियों को ज़िंदा दफ़न कर देते थे, बेटियों से स्नेह रखने लगे । वह, जिनके हृदय बेटी के जन्म की ख़बर सुनकर घृणा से भर जाते थे, बेटी के जन्म पर खुश होकर अल्लाह का शुक्र अदा करने लगे ।

समय की मांग है कि बच्चियों के प्रति इस घृणा का अंत हो और उन्हें सम्मानित जीवन जीने का अधिकार दिया जाए । मानव प्रवृत्ति के विकार का निदान हो । जिन कारणों से बच्चियों की हत्या मां की कोख में होती है या नवजात कन्याएं मौत के घाट उतार दी जाती हैं, उन समस्याओं को सुलझाया जाए । इस गंभीर समस्या का निदान तभी संभव है जब मानव के भीतर ईशभय हो । परलोक में उसे अपने कर्मों का जवाब देना है इसका एहसास हो । जब हृदय ईशभय से ख़ाली हो जाते हैं तो अन्तर्रात्मा सो जाती है और अपराध आसान हो जाते हैं ।

'हे राम !' 'जय श्रीराम' तक

■ वेदव्यास

पिछले कई वर्षों से हमारे संवैधानिक लोकतंत्र में संसदीय बहुमत के जनादेश का बुख़ार चढ़ा हुआ है । जो कल तक संसद की चौखट पर मत्था टेक रहे थे वे आज नया भारत बनाने की जल्दी में लोकसभा से लेकर राज्यसभा तक एक दिन में दो-दो संविधान संशोधन विधेयक ध्वनिमत से पारित कर रहे हैं । संसद में हां पक्ष जीता ! हां पक्ष जीता ! ना पक्ष हारा ! ना पक्ष हारा ! की ऐसी धूम मची है कि लोकतंत्र हताश और निराश नज़र आ रहा है ।

बहुमत को जम्मू-कश्मीर में धारा 370 और 35-ए को समाप्त करने का उन्माद बढ़ा हुआ है तो सरकार और संघ परिवार पूर्वी भारत के असम राज्य में राष्ट्रीय नागरिकता रजिस्टर खोलकर बैठा है और बंगाली मुसलमानों से उनके दादा-पड़दादाओं के भारत के मूल निवासी होने के सबूत मांग रहा है । संसद में रातों-रात सूचना का अधिकार क़ानून, आदिवासियों के लिए बना जंगल अधिकार का क़ानून, राष्ट्रीय सुरक्षा (एन०आई०ए०) क़ानून, आतंकवाद विरोधी, यू०ए०पी०ए० क़ानून, चिकित्सा परिषद (एम०सी०आई०) क़ानून आदि बदले जा रहे हैं और हर बात पर ये आरोप भी लगाए जा रहे हैं कि पिछले 70 साल में कांग्रेस ने जो गंदगी फैलायी है, उसे पहले साफ़ करना ज़रूरी है ।

जनादेश के बहुमत का हमारे लोकतंत्र में कुछ ऐसा भय और आंतक फैला हुआ है कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का गला घोंटते हुए लेखक, पत्रकार, बुद्धिजीवी और मानवाधिकार कार्यकर्ताओं को शहरी नक्सलवादी मानकर प्रताड़ित किया जा रहा है । और तो और बारी-बारी से चुनाव आयोग, रिज़र्व बैंक, महिला आयोग, सूचना आयोग, महालेखाकार, नेहरू मेमोरियल चल ट्रस्ट और जलियांवाला बाग़ ट्रस्ट आदि का सरकारीकरण हो रहा है। जिधर देखो हमारे लोकतंत्र में हे राम से लेकर जय श्रीराम ! तक की हिंसक यात्रा चल रही है, क्योंकि बहुमत के पास सरकार है, संसद है, पुलिस-फ़ौज-सैन्य बल है, जबकि जनता के पास अब केवल-बेरोज़गारी, आत्महत्या, भ्रष्टाचार, कालेधन का चक्रव्यूह, मंदी का बाज़ार, अशिक्षा और कुपोषण ही जीवन में शेष बचा है ।

उत्तर प्रदेश, झारखंड, बिहार, असम, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र और उत्तराखंड जैसे राज्यों में जारी इस भीड़ की हिंसा का ही ये परिणाम है कि पिछले 10 साल में लिंचिंग (भीड़ की हिंसा) की घटनाओं में 75 प्रतिशत अल्पसंख्यक मुसलमान ही मारे गये हैं और अकेले 2018 में ही जय श्रीराम के नाम पर 20 प्रतिशत हत्याएं अधिक हुई हैं । यहां हम राजस्थान सरकार को इस बात के लिए धन्यवाद देंगे कि उसने पूरे देश में एक मिसाल पेश करते हुए लिंचिंग के ख़िलाफ़ कड़ा क़ानून बनाया है, जिसमें व्यक्ति और भीड़ को भी आजीवन कारावास तक का प्रावधान किया है ।

हमारे लोकतंत्र में आज़ादी की हालत आज इतनी ख़राब हो गयी है कि पिछले दिनों देश के 49 नामचीन बुद्धिजीवियों, लेखकों, पत्रकारों, फ़िल्म निर्माता-निर्देशकों ने प्रधानमंत्री को एक साझा पत्र लिखकर बढ़ती लिंचिंग की घटनाओं तथा असहिष्णुता से बढ़ती सांप्रदाय-नफ़रत को रोकने की मांग की तो इसके जवाब में सरकार तो चुप रही पर उनके 62 तथाकथित बुद्धिजीवी-कलाकारों ने, सवाल करने वालों को ही राष्ट्र विरोधी बताकर इस देश की क़ानून व्यवस्था का ही मज़ाक़ बना दिया और हिंसा और नफ़रत की राजनीति को भी हिंदू-मुसलमान में बांट दिया ।

लोकतंत्र में सूर्यास्त का ये समय इतना चुनौतीपूर्ण है कि हर एक किसी दूसरे को ये कह रहा है कि भाइयों-बहनों आप पहले देश की चिंता करो क्योंकि हमारा राष्ट्रवाद-पड़ोसी के आतंकवाद से पीड़ित है । यही कारण है कि ग़रीब अब गांधी की खोज कर रहा है तो कोई सेठ-साहूकार किसी सरकार की तलाश में है । आज कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक और असम से गुजरात तक जय श्रीराम ने घर-घर में एक ऐसी रामकथा का पाठ शुरू कर दिया है कि अधिकारों का युग बीत रहा है तो लोकतंत्र में संविधान संशोधनों की आंधी आ रही है और 2024 के चुनाव की तैयारी चल रही है । अत: पूरे देश में भय, नफ़रत और असहिष्णुता का सैनिक उदय हो रहा है । (विविधा फ़ीचर्स)

''जब आसमान फट जाएगा, और जब तारे बिखर जाएंगे, और जब समुद्र फाड़ दिए जाएंगे, और जब क़ब्रें खोल दी जाएंगी, उस समय प्रत्येक व्यक्ति को उसका अगला-पिछला सब किया-धरा मालूम हो जाएगा ।''

(क़ुरआन, 82:1-5)

A WELL WISHER

ARARIA (BIHAR)

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया, ''अल्लाह के साथ किसी को शरीक करना, अपने मां-बाप की अवमानना करना या उन्हें चोट या दुख पहुंचाना, किसी की हत्या करना और झूठी गवाही देना, बड़े गुनाह हैं ।''

(बुख़ारी)

A WELL WISHER

ARARIA (BIHAR)

भारतीय उपमहाद्वीप पर संभावित ख़तरे

❖ मुहम्मद असलम ख़ान

हिमालय, हिंदूकुश के बर्फीले पहाड़, उसके माथे का झूमर महान ग्लेशियर इस शताब्दी के अंत तक पिघल कर समाप्त हो जाएंगे । बढ़ती हुई गर्मी और बढ़ते तापमान उपमहाद्वीप पर अनदेखे संकट के दरवाज़े खोल देंगे । जिसके नतीजे में भयंकर बाढ़ आएगी और उसके बाद बर्फ़ से वंचित होने के कारण नदियों में पानी का बहाव भी रुक जाएगा और उन नदियों के बहाव के दम तोड़ने से चीन और भारत के लहराते मैदान वीरान हो जाएंगे । हरियाली समाप्त हो जाएगी, फ़सलें नष्ट हो जाएंगी ।

हिंदूकुश का पूर्वी सिरा उत्तर में कराकोरम श्रृंखला से जा मिलता है । हिंदूकुश ऐतिहासिक तौर पर बुद्ध मत के मानने वालों का पवित्र स्थान समझा जाता है । बामियान बुद्धा की निशानी भी इसी श्रृंखला की कड़ी मानी जाती है । यह क्षेत्र महत्वपूर्ण धर्मों का घराना और महत्वपूर्ण व्यापारिक संबंधों और यात्रियों का मार्ग रहा है । हमलावरों और योद्धाओं का मार्ग भी यही रहा है ।

हिमालय ज़मीन पर सबसे ऊंची चोटियों के आधार पर जाना जाता है । दुनिया की सबसे ऊंची चोटी माउंट एवरेस्ट और के-2 भी इसी श्रृंखला में शामिल है । हिमालय की पहाड़ी श्रृंखला पश्चिम और उत्तर-पश्चिम से होती हुई पूर्व और पूर्वोत्तर तक चली जाती है, जो 2400 किलो मीटर की एक कमान की आकृति बनाती है । उसके पश्चिमी ओर नांगा पर्वत की ऊंची चोटियां खड़ी हैं, जो दक्षिण और पूर्व के साथ बनने वाले में सिंधु नदी के मोड़ पर स्थित है । पूर्व में निमचारा बरुआ की ओर यरलिंग सांगपोया यार्लिंग रांगबो नदी बह रही है । जो पश्चिमी तिब्बत के आंगसी ग्लेशियर से निकलती है । यह नदी ब्रह्मपुत्र का ऊपरी बहाव कहलाती है । उत्तर पश्चिम में यह कराकोरम और हिंदूकुश की पहाड़ी श्रृंखला से जुड़ी है । उत्तर में तिब्बत की पठारी इसे अलग करती है, जहां इंडस सांगपो सर्चर की घाटी है । दक्षिण की ओर हिमालय का एक केंद्र बनता है जो इंडो गंगेटिक प्लेन कहलाता है । यह पूर्व में अरुणाचल प्रदेश और पश्चिम में पाकिस्तान से जा मिलता है । हिमालय के निवासियों की संख्या 5 करोड़ 27 लाख है, जिसमें पांच देश नेपाल, भारत, भूटान, चीन और पाकिस्तान शामिल है । दुनिया की बड़ी नदियां सिंधु, गंगा, सांगपो, ब्रह्मपुत्र हैं । हिमालय संस्कृत का शब्द है, जिसका अर्थ है 'बर्फ़ का घर'। वैज्ञानिकों का कहना है कि हिंदूकुश और हिमालय के बर्फ़ से ढके बड़े-बड़े पहाड़ एंटार्कटिका और आर्कटिक क्षेत्रों के बाद थर्ड पोल कहलाते हैं, जहां दुनिया की सबसे ऊंची चोटी स्थित है ।

हिंदूकुश 800 किलोमीटर लंबी पहाड़ी श्रृंखला है, जो अफ़ग़ानिस्तान और पाकिस्तान की सीमा के क़रीब स्थित है । यह अफ़ग़ानिस्तान से उत्तरी पाकिस्तान तक फैली हुई है । पश्चिमी हिस्से में यह हिमालय पहाड़ से जा मिलती है उत्तर में यह आमु नदी की घाटी को दक्षिण में सिंधु नदी की घाटी से अलग कर देती है । यहां भी सबसे ऊंची पहाड़ी चोटियां मौजूद हैं, जिनमें तिरिच मीर की 7708 मीटर ऊंची चोटी स्थित है । यह चतराल ज़िला में है । पामीर पहाड़ी चोटी की श्रृंखला पाकिस्तान, चीन और अफ़ग़ानिस्तान को मिलाता है ।

ANSARI STONE KOTA

Deals in :
ALL TYPES OF SAND STONE
(RED, BLUE, BROWN ETC.)

MACHINE CUT & HAND CUT SAND STONE


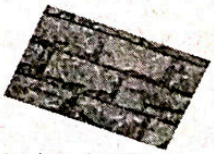

KOTA STONE

Address :
RAM NAGAR NEW STONE MANDI
KOTA RAJASTHAN

Mobile : 9829039190, WhatsApp : 9660853702

इस पहाड़ी शृंखला की बर्बादी की भविष्यवाणी करने वाली रिपोर्ट के लेखकों का नेतृत्व करने वाले फिलिप वेस्टर का कहना है कि एक ऐसे पर्यावरण संकट से हमारा सामना है, जिसका सामना पहले कभी नहीं किया गया । पहाड़ों की विकास के अंतर्राष्ट्रीय केंद्र 'इंटरनेशनल सेंटर फॉर इंटीग्रेटेड माउंटेन डेवलपमेंट' से जुड़े वैज्ञानिक वेस्टर के अनुसार विश्व स्तर पर बढ़ती गर्मी इन जमी हुई बर्फ़ से लदी पहाड़ी चोटियों में परिवर्तन ला रही है । जिसके नतीजे में एक सदी से भी कम समय में 8 देश पथरीली भूमि में बदल जाएंगे ।

यह रिपोर्ट गहन अध्ययन और बड़ी मेहनत के बाद तैयार की गयी है । यह रिपोर्ट 210 लोगों ने मिलकर लिखी है । इसमें बताया गया है कि इस क्षेत्र की एक तिहाई बर्फ़ 2100 ई॰ तक पिघल जाएगी । रिपोर्ट के अनुसार अगर पेरिस पर्यावरण संधि 2015 ई॰, के तहत सभी देश पर्यावरण की गर्मी कम करने के लिए अपना पूरा ज़ोर भी लगाएं तब भी इस प्रक्रिया को रोकना संभव नहीं । अगर ये सारे देश बर्फ़ पिघलने की प्रक्रिया को रोकने के लिए हाथ पर हाथ धरे बैठे रहते हैं और ग्रीन हाउस गैसों को रोकने की कोशिश नहीं करते तो फिर इस अवधि में दो-तिहाई बर्फ़ पिघल जाएगी। वेस्टर के अनुसार यह सबसे अधिक चिंता का विषय है ।

यह रिपोर्ट नेपाल की राजधानी काठमांडू में जारी की गयी । 1970 ई॰ से अब तक इन पहाड़ों की बर्फ़ की तरह में कमी आ चुकी है और इसके कई भागों में लगातार कमी देखने में आ रही है । बर्फ़ पिघलने से समुंदरों का जल स्तर बढ़ जाएगा । लेकिन जल स्तर में कितनी वृद्धि होगी यह बताना अभी संभव नहीं ।

यह पूरा क्षेत्र 3500 किलोमीटर या 2175 मील पर फैला हुआ है । इस फैलाव में अफ़ग़ानिस्तान, बंगलादेश, भूटान, चीन, भारत, म्यांमार, नेपाल और पाकिस्तान आते हैं । इन सब से मिलकर यह क्षेत्र बनता है । बर्फ़ पिघलने से जो नदियां प्रभावित होंगी उनमें यांग्री, मीकांग, सिंधु और गंगा शामिल हैं । अधिकतर किसान इन्हीं नदियों पर अपनी फ़सलों की सिंचाई के लिए आश्रित हैं । 25 करोड़ लोग पहाड़ों में रहते हैं और एक अरब 65 करोड़ लोग नदियों से बनने वाले मैदानी भाग में रहते हैं । नदियों के बहाव में परिवर्तन से पनबिजली का उत्पादन भी प्रभावित होगा और पहाड़ों में होने वाला भूस्खलन भी बढ़ जाएगा । इससे भूमि के कटाव में वृद्धि होने से कई स्तर की समस्याएं बढ़ेगी ।

ग्लेशियर से पिघलने वाली बर्फ़ नदियों में पानी के बहाव का कारण बनती है इस बहाव में अन्य और स्रोतों से भी पानी आ मिलता है । इनमें झरने, दलदल और भूमिगत जल भी शामिल हैं । रिपोर्ट के लेखकों के अनुसार विभिन्न द्वीपों में बसे लोग सबसे अधिक प्रभावित हो सकते हैं, क्योंकि समुद्र के जल स्तर में वृद्धि से उनके द्वीपों को नुक़सान पहुंचने की आशंका है । भूटान से संबंध रखने वाली रिपोर्ट के लेखक दाशुरेंजी ने कहा कि केवल द्वीपों पर रहने वाले ही सबसे अधिक प्रभावित नहीं होंगे, बल्कि पूरे पहाड़ी क्षेत्र के बसने वाले ही इसकी चपेट में हैं । पूरी दुनिया मौसमों की और पर्यावरण की उलट-पुलट की चपेट में है । उसके प्रभाव पूरी दुनिया में महसूस किये जा रहे हैं ।

ब्रिटिश अख़बार में प्रकाशित होने वाली एक अध्ययन में भविष्यवाणी की गयी है कि आने वाले 5 साल अत्यंत गर्म होंगे । पर्यावरण परिवर्तन के कारण मौसम गर्म होता जा रहा है, जिससे तूफ़ान झक्कर और धूल भरी आंधी और बगोले जन्म लेंगे । इन विशेषज्ञों के अनुसार दुनिया भर का तापमान बढ़ रहा है । विगत एक हज़ार वर्षों में दुनिया ने हिम काल से उष्मा काल का सफ़र तय किया है । विगत 11 हज़ार वर्षों में मौसम के परिवर्तन ने मानव जीवन को धरती पर फलने-फूलने का अवसर प्रदान किया है । अरबों टन ग्रीनहाउस गैसेस पर्यावरण में शामिल हो चुकी हैं, जिसमें अधिकतर ग्रीनहाउस गैसेस में वृद्धि गत शताब्दी में हुई है । इन ग्रीन हाउस गैसेस ने पर्यावरण परिवर्तन में बड़ी भूमिका निभाई है ।

25 yrs. Service (Regd.)
AL KAUSAR HOLY HERBAL
HOSPITAL & RESERCH CENTRE
(A minority Unit of Islamic Medicine Under Art.30 (1) Const. of India)
Founder: **Al-Hajj Dr. ABDUR RASHEED**
Ph.D. (HOLISTIC HERBAL)
Medicine of Hazrat Mohammad (S.A.W)
By faith of ALLAH
Shyamganj Road, B.Deoghar - 814112
(Jharkhand) India
Kidney, Heart, Liver, Pancreas, Uterus, disorders, Pain Control, Asthama, Child Birth (Cardio, Uro, Nephro, Neuro, Gastroe, Gynae, Hemato, Diabeto Intercentral cardio, Bronco etc.)
Recharge your body, mind, psyco, soul, desire heart way of "Islamic medicine". Further treatment require or not feels within 7 to 19 days
(Rooms available)
Enquiry: 9955725769, E-mail: alkausarreached@gmail.com
Bank of India, Deoghar Branch A/c-446110100000871
IFS Code No. BKID 0004461

सत्तावादी पूंजीवाद की लोकप्रियता

❖ मुज़फ़्फ़र एजाज़

केअमेरिका ने चीन पर आरोप लगाया है कि वह सत्तावादी पूंजीवाद को लोकप्रिय बनाने की कोशिश कर रहा है । अमेरिकी ख़ुफ़िया एजेंसियों की विश्व संकट के विश्लेषण पर आधारित रिपोर्ट में डायरेक्टर नेशनल इंटेलिजेंस डॉन कोट्स ने कहा है कि अमेरिका को सुपर पावर की प्रतियोगिता में अब चीन की वैचारिक युद्ध का भी सामना है । रिपोर्ट में चेतावनी दी गयी है कि चीन विश्व स्तर पर सत्तावादी पूंजीवाद को लोकप्रिय बनाने की कोशिश कर रहा है । जबकि यह पश्चिम की स्वतंत्र लोकतंत्र के विपरीत है यह रिपोर्ट मात्र एक रिपोर्ट नहीं, बल्कि ठेठ अमेरिकी और पश्चिमी नीतियों के अनुसार इस रिपोर्ट के साथ विश्लेषकों का मनचाहा विश्लेषण भी शामिल किया गया है और इसे एक ऐसा रंग देने की कोशिश की गयी है जो अमेरिका के भविष्य के इरादों में सहयोगी साबित हो । इस रिपोर्ट में चीन को अमेरिका का वैचारिक विरोधी ठहराया गया है और पहले ही बता दिया गया है कि इसके नतीजे में अमेरिका के चीन विरोधी स्टैंड में तीव्रता पैदा होने की संभावना बहुत अधिक है ।

चीन जो कुछ कर रहा है वह कोई विचारधारा नहीं है । वह विश्व अर्थव्यवस्था पर अधिक से अधिक नियंत्रण प्राप्ति की कोशिश है । यही कोशिश और उस पर अमल अमेरिका भी करता है, ब्रिटेन और सोवियत यूनियन भी करते हैं, जर्मनी और फ्रांस ने भी यही काम किया है । यह कोई विचारधारा नहीं लेकिन भविष्य में चीन के विरुद्ध शीत युद्ध के मैदान दूसरे तीसरे देशों में सजाने के लिए ऐसी रिपोर्ट पेश की गयी है, ताकि दुनिया भर में वैचारिक युद्ध के नाम पर अमेरिकी टांग फंसाने का औचित्य मौजूद रहे । इसे चीन विरोधी पक्ष में तीव्रता ठहराया गया है । यह आरंभिक रिपोर्ट अमेरिकी रिकॉर्ड का हिस्सा रहेगी और किसी भी समय आवश्यकता अनुसार इस्तेमाल की जाएगी । इसका कोई दूसरा हिस्सा भी होगा जो बाद में जारी किया जाएगा ।

इस रिपोर्ट को चुनने का मक़सद यह है कि यह सारा ड्रामा पश्चिमी पूंजीवादियों ही का है । पूंजीवाद को वे सत्तावादी पूंजीवाद कह रहे हैं । दूसरा शायद लोकतांत्रिक पूंजीवाद होगा ।

लेकिन सच्चाई यह है कि अमेरिका में भी यही व्यवस्था स्थापित है, जिसके ख़तरे से उनका डायरेक्टर इंटेलिजेंस अवगत कर रहा है । अगर सत्तावादी पूंजीवाद कहें तो इसका अर्थ यह है कि ऐसा पूंजीवाद जो सत्ता के ज़रिए थोपा जाए । लेकिन दुनिया में जहां-जहां कथित पश्चिमी लोकतंत्र है उसके ज़रिए पूंजीवाद को तानाशाही तरीक़े से ही थोपा जाता है । ऐसे हालात पैदा किये जाते हैं कि लोग इस पूंजीवाद को स्वीकार करने पर मजबूर हो जाएं ।

चीन जो कुछ कर रहा है, वही अमेरिका ने भी किया है । विश्व बैंक और आई॰एम॰एफ़॰ की मदद से दुनिया को क़र्ज़ के जाल में जकड़ा, फिर उन देशों में सरकारों का परिवर्तन और अपने मनचाहे क़ानूनों को लागू करने की कोशिश । अब चीन यही काम कर रहा है । उसके द्वारा क़र्जों का दिया जाना एक जाल है । चीन विकास योजनाओं के साथ विभिन्न देशों में दाख़िल हो रहा है । उसे अमेरिका के लिए चैलेंज कहा जा रहा है । दरअस्ल काम एक ही है रास्ते अलग हैं ।

अमेरिका ने युद्ध और कारोबार का रास्ता अपनाया और शक्ति के माध्यम से सत्तावादी पूंजीवाद को थोपा, जबकि चीन का सिद्धांत यह रहा है कि पैसा फेंक तमाशा देख । दुनिया का कोई भी देश हो, चीन वहां विकास योजनाएं लेकर पहुंचता है । भारी क़र्ज़ों का बोझ देशों पर लादता है, उसके लिए भ्रष्ट शासकों की जेब गर्म करता है और वही सत्तावादी पूंजीवाद लागू करता है । अब तक अमेरिका सत्ता की रस्साकशी में तेज़ी लाकर सत्ता परिवर्तन कराता था, अब यह काम चीन करेगा ।

जहां तक 'सत्तावादी पूंजीवाद' और 'पश्चिम का स्वतंत्र लोकतंत्र' की शब्दावली का उल्लेख है, तो वास्तव में ये दोनों एक ही हैं । इसका उदाहरण अमेरिका में यूं है कि अमेरीकियों की बड़ी संख्या को वहां एक सीमा से अधिक कमाने का अवसर नहीं दिया जाता । कथित स्वतंत्र पश्चिमी लोकतंत्र चलाने वाले बड़ी सुंदरता से इस व्यवस्था को

नियंत्रित करते हैं । वहां रहने की जगह और नौकरी करने की जगह के बीच लंबी दूरी होती है । एक मामूली वेतन भोगी अमेरिकी 8 या 9 बजे की नौकरी पर पहुंचने के लिए 6 बजे घर से निकलता है । उसके पास जो गाड़ी मौजूद है, वह इस काम के लिए इस्तेमाल नहीं की जा सकती, क्योंकि आने-जाने में ही उसकी तनख़्वाह ख़त्म हो जाएगी । अत: वह ट्रेन का सहारा लेता है । इसके लिए उसे भागम-भाग स्टेशन पहुंचना होता है । 7 बजे तक वह स्टेशन पहुंचकर अगले कुछ मिनटों में अपनी वांछित ट्रेन में बैठता है । फिर घर से लाया हुआ बर्गर स्टेशन से ख़रीदी हुई कॉफी के घूंट लेता है वह अपनी बची हुई नींद पूरी करता है ।

इस तरह अपने दफ़्तर पहुंचता है, सारा दिन इस स्वतंत्र लोकतांत्रिक पूंजीवाद की सेवा करता है और शाम को 4 या 5 बजे और कभी विशेष हालात में 6 बजे दफ़्तर निकलता है । घर पहुंचते-पहुंचते थक कर चूर हो जाता है । फ्रीज से फ्रीज किया हुआ बर्गर निकलता है कॉफी बनाता है, अमेरिकी स्टाइल में कपड़े बदलता है और बिस्तर पर लेट कर टी॰वी॰ खोलता है । इस हालत में खा-पीकर थोड़ी देर फुटबॉल या रगबी देखते हुए सो जाता है । बीच में कोई योजनाबद्ध "बड़ी ख़बर" देख लेता है कि मुसलमान आतंकवादियों ने धमाका कर दिया । एक मोटी-सी गाली मुसलमानों को देता है और अगली सुबह स्वतंत्र पश्चिमी लोकतंत्र की सेवा पर जाने के लिए सो जाता है ।

अमेरिका के 50 से 70 प्रतिशत नागरिक यही करते हैं। 10 प्रतिशत कोट पैंट और टाई वाले हैं, 10 प्रतिशत के लगभग डॉक्टर आदि हैं या फिर बिजनेस करने वाले हैं । 2-3 प्रतिशत को छूट दे दी गयी है कि वे बिल गेट्स आदि बनें और उन्हें भी एक हद तक सम्पत्ति बनाने की अनुमति है । उनसे टैक्स की राशि स्वतंत्र पश्चिमी लोकतंत्र की सत्तावादी व्यवस्था विभिन्न योजनाओं पर ख़र्च कराती है । यह है स्वतंत्र पश्चिमी लोकतंत्र ।

अब इस पर विचार करना चाहिए कि चीन क्या कर रहा है और उसके क्या प्रतिकूल प्रभाव होंगे । विशेष रूप से अमेरिका ब्रिटेन सोवियत यूनियन के अनुभवों की रोशनी में देखें और चीन की विचारधारा को देखें तो ज़्यादा भयंकर तस्वीर सामने आती है । अमेरिका तो अपने उद्देश्यों के लिए उसे विचारधारा कह रहा है, लेकिन चीन का दृष्टिकोण तो यह है कि दुनिया में कोई धर्म नहीं । वह सबसे पहले धर्म पर हमला करेगा । यह कैसे होगा उसकी संभावनाएं अभी से नज़र आ रही हैं ।

अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने इरशाद फ़रमाया– "ऐसी कोई जगह नहीं जहां दज्जाल की पहुंच नहीं होगी, सिर्फ़ मक्का और मदीना को छोड़कर ।"

(बुख़ारी, मुस्लिम)

A WELL WISHER

HAZARIBAGH

सुहागन

❖ अबू इबराहीम

शादी की पार्टी में बहुत भीड़-भाड़ थी । औरतें और लड़कियां भी भारी संख्या में थीं । चमकीले और भड़कीले लिबास, बदन पर सजे आभूषण, ठहाके और गपशप, पार्टी की शोभा बढ़ा रहे थे । एक वृद्ध महिला को केन्द्रीय स्थान प्राप्त था, इसलिए कि बहुत-सी लड़कियां उन्हें घेरे हुए थीं और उनकी बातें बहुत श्रद्धा के साथ सुन रही थीं ।

मेरी सहेली शकुंतला मेरा हाथ पकड़कर मुझे उन्हीं महिला की ओर ले गयी ।

"यह सुचित्रा मैम हैं, इन्होंने मुझे कॉलेज में पढ़ाया है, अभी कुछ महीने पहले रिटायर हुई हैं ।" यह सब बताते हुए वह मैम तक पहुंच चुकी थी । वृद्धा ने हमारी ओर देखा उनके होंठों पर मुस्कराहट फैल गयी ।

"शकुन्तला ! आओ, कहां रह गयी थीं ?"

शकुन्तला ने मेरा परिचय कराना आवश्यक समझा, "यह मेरी सहेली लुब्ना है, हमारे पड़ोस में रहती है, जरनलिज़्म का कोर्स कर रही है । एक अख़बार में काम भी करती है ।"

शकुन्तला ने मेरे बारे में सब कुछ बता दिया तो मैंने सोचा कि मैं भी मैम का परिचय प्राप्त कर लूं । मैंने सवाल किया, "रिटायरमेंट के बाद आपकी व्यस्तताएं क्या हैं ?"

सुचित्रा मैम ने संतोषपूर्ण ढंग से जवाब दिया, "घर पर कुछ बच्चियां आ जाती हैं, उन्हें पढ़ा देती हूं । इस प्रकार मेरा कुछ समय कट जाता है, तन्हाई दूर हो जाती है ।"

"तन्हाई ?" मैंने आश्चर्य से पूछा, "आपके पति? आपके बच्चे ?" मैम की आयु को देखते हुए मुझे उनसे इस जवाब की आशा थी कि 'पति का देहांत हो गया है और बच्चे दूसरे शहरों में सेटल हो गये हैं,' लेकिन उनके जवाब ने तो मुझे चौंका दिया ।

"मेरे बच्चे नहीं हैं, शादी के कुछ दिनों के बाद ही पति घर छोड़कर चले गये थे ।" उन्होंने जैसे रहस्योद्घाटन किया । मेरे आश्चर्य की सीमा न रही, पूछे बिना न रह सकी, "लेकिन आख़िर क्यों ?"

मैम का चेहरा बिलकुल सपाट था । उन्होंने बिना किसी प्रकार का भाव प्रदर्शन किये जवाब दिया, "वे एक धार्मिक संस्था से जुड़ गये थे । उन्होंने अपना जीवन उसके लिए समर्पित कर दिया था । उसके बाद उन्होंने घर की ओर पलटकर नहीं देखा, कभी मेरी सुध नहीं ली ।"

मेरा आश्चर्य बढ़ता जा रहा था । मेरे अन्दर की पत्रकारिता सुलभ जिज्ञासा जाग उठी थी । मेरे ज़ेहन में बहुत-से सवाल उठने लगे थे, जिनके जवाब मुझे दरकार थे । "फिर आपने पति के बिना जीवन कैसे बिताया ?" आख़िरकार मैंने पूछ ही लिया ।

यह सुनकर सुचित्रा मैम की आंखों में आंसू तैरने लगे । उनकी निगाहें कहीं बहुत दूर देख रही थीं । वे शून्य में घूरते हुए बोलीं, "मेरी शादी को पचास वर्ष होने को हैं । पति छोड़कर चले गये तो मैं उनकी राह तकती रही । मैंने सोचा कि वे देर-सवेर लौटकर आएंगे, उन्हें मेरी याद ज़रूर सताएगी, लेकिन वे नहीं आये । निराश होकर मैंने एक गर्ल्स कॉलेज में नौकरी कर ली । इस तरह मेरा समय गुज़रने लगा । मुझे बहुत-सी लड़कियां मिल गयीं, जो मुझसे सगी बेटियों की तरह प्यार करती थीं और मुझ पर जान छिड़कती थीं ।"

मेरी सहेली के चेहरे से लग रहा था कि उसे मेरा इस प्रकार सवाल पूछना अच्छा नहीं लग रहा है । वह मुझे और सवाल पूछने से रोकना चाहती थी, मगर मैं कहां मानने वाली थी । मैंने अगला सवाल किया, "अगर आपके पति आपको साथ रखना नहीं चाहते थे तो उन्होंने आपको तलाक़ क्यों नहीं दे दी ?"

मैम के चेहरे पर बेचैनी के भाव लहराए । उन्होंने जवाब दिया, "हमारे धर्म में तलाक़ को पसन्द नहीं किया जाता । पतिदेव को भगवान समान समझा जाता है । हमारे यहां कन्या दान की जाती है । हमें बचपन ही से यह पढ़ाया जाता है कि लड़की ब्याह कर जिस घर में जाए उसकी अर्थी उसी घर से निकलनी चाहिए । अगर पति-पत्नी में संबंध मधुर न हों तो तलाक़ के बिना वे पूरा जीवन अलग रहते हुए गुज़ार

देते हैं ।"

मेरे दिमाग़ में सवालात का तूफ़ान बरपा था, क्या पति भगवान है और पत्नी उसकी दासी है ? क्या शादी जन्म-जन्म का साथ है कि जिससे एक बार हो गयी, हमेशा के लिए हो गयी ? क्या लड़की की हैसियत तुच्छ माल की-सी है, जो उसे पति के चरणों में दान किया जाता है ? क्या पति को छूट है कि वह घर से बाहर जाकर जहां चाहे रंगरलियां मनाए और पति घर में क़ैदी की-सी ज़िन्दगी गुज़ारे ? अगर पति-पत्नी में किसी वजह से मनमुटाव हो जाए और एक साथ जीवन बिताना उनके लिए संभव न रहे तो क्या उनके अलग होने का कोई रास्ता नहीं ? अगर तलाक़ द्वारा स्त्री को अत्याचारी पति से छुटकारा मिल जाए, जिसके बाद पुनर्विवाह कर नया जीवन आरंभ करने का अवसर मिल जाए तो यह उसके प्रति अत्याचार है ?

ये और ऐसे बहुत-से सवाल मेरे दिमाग़ में उठ रहे थे, लेकिन शादी की ख़ुशियों भरी पार्टी के रंग में भंग डालना मुझे अच्छा नहीं लगा । इसलिए मैंने केवल एक आख़िरी सवाल किया, "अच्छा यह बताइए, पुरुष स्त्री को तलाक़ भी न दे और उसके साथ भी न रहे, यह अच्छा है, या यह कि स्त्री को तलाक़ दे दी जाए और उस स्त्री का पुनर्विवाह हो जाए ?"

यह सुनना था कि सुचित्रा मैम का चेहरा तमतमाने लगा, उनकी आंखों से आंसुओं की झड़ी लग गयी । उन्होंने कांपते स्वर में कहा, "स्त्री को लटकाकर रखने से हज़ार गुना अच्छा यह है कि उसे तलाक़ देकर आज़ाद कर दिया जाए। यह तलाक़ उसके लिए ज़ुल्म नहीं, बल्कि रहम है । कोई उस बीस-बाईस वर्ष की लड़की से पूछे जिसकी शादी हुए अभी कुछ ही दिन हुए हों कि अचानक उसका पति उससे मुंह मोड़ ले, फिर जीते-जी उसकी सुध न ले कि उस पर क्या बीती ? किसी को क्या पता कि ऐसी औरत का एक-एक पल कैसे कटता है ? इससे तो अच्छा था कि उसे मौत आ जाती । इस प्रकार उसे हर पल घुट-घुटकर जीने से तो छुटकारा मिल जाता । यह औरत कहने को तो सुहागन है, लेकिन उसकी हालत किसी विधवा से भी बदतर है ।"

ख़ुशी की उस पार्टी में ज़रा देरे के लिए बोझिल-सा सन्नाटा छा गया था, इसलिए मैंने वहां से खिसक लेना ही उचित समझा, बड़ी मुश्किल से कुछ कौर गले से उतारे और अपनी सहेली शकुन्तला का हाथ पकड़कर बाहर आ गयी ।

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया– "जब तुम दूध पियो तो कहो, "ऐ अल्लाह इसमें हमारे लिए बरकत दे, क्योंकि यह भोजन और पानी दोनों है ।"

(तिरमिज़ी)

A WELL WISHER

PUNJAB

जो तटस्थ हैं समय लिखेगा उनका भी अपराध

❖ सुभाष गाताडे

अगर 'गांधी स्मृति' को लेकर हमारे बढ़ते स्मृतिलोप के प्रसंग की ओर फिर लौटें तो क्या यह कहना वाजिब होगा कि इसमें हमें हिंसा/जनसंहार की घटनाओं को लेकर भारतीय समाज की अपनी गहरी बेरुख़ी/असम्पृक्तता दिखती है, जो बड़े-बड़े जनसंहारों को भी जज्ब करती आयी है । उल्टे ऐसी हिंसा के अंजामकर्ताओं को हम गौरवान्वित करते आये हैं, हृदय सम्राट के तौर पर नवाज़ते आये हैं और कभी-कभी तो सत्ता की बागडोर भी सौंपते आये हैं ।

आज़ादी के बाद दलितों के पहले जनसंहार कहे गये किझेवनमनी का जनसंहार इसकी नज़ीर रहा है जिसमें दलित परिवारों के लगभग चालीस लोगों को–जिनमें मुख्यत: महिलाएं एवं बच्चे शामिल थे–भूस्वामियों ने ज़िंदा जला दिया था । (1969) तमिलनाडु के तंजावूर ज़िले में उन दिनों कम्युनिस्ट पार्टी की अगुआई में खेत मज़दूरों का आन्दोलन चल रहा था, जिसका दमन करने के लिए भूस्वामियों ने यह क़दम उठाया था । इस कांड में अदालत का फ़ैसला विचलित करने वाला था ? अदालत ने सारे अपराधियों को बाइज़्ज़त बरी किया था और यह तर्क दिया था कि 'इस बात पर यक़ीन नहीं किया जा सकता कि ऊंची जाति के ये लोग पैदल बस्ती तक गये होंगे ।'

उधर दलित-आदिवासी अत्याचार के ऐसे तमाम कांडों की फ़ेहरिस्त पेश की जा सकती है जिसमें हम पाते हैं कि तमाम सबूतों, गवाहों के बावजूद अदालत ने कोई तकनीकी कारण दिखाकर दलितों-आदिवासियों के उत्पीड़कों को बचा लिया । जनता के ख़िलाफ़ अपराधों के मामलों में न्याय करने में भारतीय अपराध न्याय व्यवस्था की क्षमता पर अक्सर प्रश्नचिन्ह खड़ा होता है ।

आज़ादी के बाद के दौर में हज़ारों दंगे हुए हैं और इतना ही नहीं प्रोफ़ेसर पाल आर॰ ब्रास का अध्ययन यही बताता है कि हमारे देश में 'संस्थागत दंगा प्रणालियों' विकसित हुई हैं जो कभी भी दंगे कराने में 'सक्षम' हैं । आम तौर पर यही देखने में आता है कि 'दैनंदिन आधार पर नज़र आ रही इन जनहत्याओं' के बावजूद अभी भी दंगों के अस्ली मास्टर माइंड/योजना बनाने वाले शायद ही पकड़े गये हैं और विभिन्न न्याय आयोगों की रिपोर्टों के बावजूद अपने पद पर रहकर लापरवाही करने वाले पुलिस या प्रशासकीय अधिकारियों पर किसी भी क़िस्म की कार्रवाई शायद ही हुई है ।

क्षेपक के तौर पर एक प्रसंग को और याद किया जा सकता है 30 जनवरी 2014 को महात्मा गांधी की हत्या के 66 साल पूरे होने के अवसर पर देश भर में कार्यक्रमों का आयोजन हो रहा था, उस दिन गांधी के हत्यारे नथुराम गोडसे की 'आवाज़' में एक आडियो वॉट्स अप पर मोबाइल के ज़रिये लोगों तक पहुंचाया गया था । इस मैसेज में उस हत्यारे का महिमामंडन करने की और निरपराधों को मारने की अपनी कार्रवाई को औचित्य प्रदान करने की कोशिश दिखायी दे रही थी ।

एक अग्रणी अख़बार ने बताया था कि ऐसा मैसेज उन लोगों के मोबाइल तक पहुंच चुका था, जो एक 'बड़ी पार्टी से ताल्लुक़ रखते हैं और वही लोग इसे आगे भेज रहे हैं ।' मैसेज की अन्तर्वस्तु गोडसे के स्पष्टत: महिमामंडन की दिख रही थी, जिसमें आज़ादी के आन्दोलन के कर्णधार महात्मा गांधी की हत्या जैसे इन्सान-दुश्मन कार्रवाई को औचित्य प्रदान करने की कोशिश की गयी थी । इतना ही नहीं एक तो इस हत्या के पीछे जो लंबी-चौड़ी साज़िश चली थी, उसे भी दफ़नाने का तथा इस हत्या को देश को बचाने के लिए उठाये गये क़दम के तौर पर प्रस्तुत करने की कोशिश की गयी थी ।

क्या हमारी यह बेरुख़ी इस वजह से उपजी है क्योंकि इस हत्या को औचित्य प्रदान करने में कहीं न कहीं हम ख़ुद शामिल रहते आये हैं जो विभिन्न रूपों में अभिव्यक्त होती रही है । 'आज़ादी तक तो सबको साथ ले चलने की बात ठीक थी, मगर आज़ादी के बाद ख़ास समुदाय की हिमायत क्यों की जाए', 'गांधी महान शख़्स रहे हैं, हमारी आज़ादी

के आन्दोलन के अगुआ रहे हैं, मगर 55 करोड़ का हठ करके उन्होंने कुछ लोगों को नाराज़ तो किया था' गोडसे के मानवद्रोही कारनामे का औचित्य प्रदान करने वाले या उसमें कुछ तर्क ढूंढ़ने वाले लोग सार्वजनिक जीवन में भी रहते आये हैं ।

एक तरीक़ा इस मानवद्रोही कारनामे को लेकर तटस्थ दिखने का होता हैं, जो निश्चित ही कहीं न कहीं हत्या को औचित्य प्रदान करता प्रतीत होता है ।

मिसाल के तौर पर एक अग्रणी न्यूज़पोर्टल के जाने माने स्तंभकार का तर्क यह रहा है कि गांधी की हत्या की बहस के संदर्भ में हमारे लिए यह ज़रूरी है कि हम 'अच्छे और बुरे की बाइनरी/द्विविधता' से परे जाएं । उनकी दलील रफ़्ता-रफ़्ता सार्वजनिक अवधारणा और सापेक्षतावाद की तरफ़ बढ़ती है–

''अगर किसी को गांधी के महिमामंडन का अधिकार है, तो निश्चित ही बाक़ियों को उनकी आलोचना करने का अधिकार है या उनका जो हश्र हुआ उसकी प्रशंसा करने का अधिकार है ? अगर आज हम रावण/राम नहीं/ की कहानी के काल्पनिक पक्ष को बयां करते हुए किताबें लिख सकते हैं तो निश्चित ही हम उन लोगों के विचारों के साथ भी जी सकते हैं जो गोडसे को पूरी तरह ख़राब नहीं मानते थे ।''

स्तंभकार/संपादक महोदय यह भी जोड़ते हैं कि–''गोडसे के बारे में सबसे ग़लत बाता थी कि उसने महात्मा से बहस करने के बजाय और भारत की जनता को अपनी तरफ़ तोड़ने के बजाय उन्हें गोलियों से ख़त्म कर दिया । मगर वह ऐसा समय था जब जनता गांधी की दीवानी थी और वह दूसरों की बात सुनने के लिए तैयार नहीं थी । गोडसे के विचार गांधी की लोकप्रियता के आगे टिक नहीं सकते थे और इसी निराशा ने उसे हत्या की तरफ़ ढकेला ।''

संघ के एक सुप्रीमो थे राजेन्द्र सिंह उन्हें जब पूछा गया कि गांधी के हत्यारे गोडसे के बारे में वह क्या सोचते हैं तो उनका जवाब था–

''गोडसे अखंड भारत के दर्शन से प्रेरित था । उसके मंतव्य अच्छे थे पर उसने अच्छे उद्देश्य के लिए ग़लत मेथड इस्तेमाल किया ।

क्या यह कहा जाना वाजिब होगा कि नैतिक सापेक्षतावाद का यही वह जड़मूल चिंतन है जो किसी 'महाभारत' में अपने ही आत्मीयों के ख़िलाफ़ अस्त्र उठाने के लिए विवश किसी 'अर्जुन' के द्वंद्वों से रूबरू होने के बजाय उसे यह समझा देता है कि यह आसन्न हिंसा दरअस्ल हिंसा है ही नहीं !

गांधी स्मृति से हमारी दूरी महज़ भौतिक नहीं है बल्कि मानसिक भी है ।

लाज़िम है कि हम इतना तो जानते हैं 30 जनवरी को गोडसे की गोली से गांधी मारे गये, जिसे आज़ाद भारत की पहली आतंकवादी कार्रवाई के तौर पर जाना जाता है और हमें अधिक से अधिक इतना याद रहता है कि उसके पहले 20 जनवरी को गांधी को मारने का प्रयास उसी आतंकी मोडयूल ने किया था, जब उन्होंने बिड़ला हाउस पर बम फेंका था और जिस असफल कार्रवाई में मुब्तिला मदनलाल पाहवा इसमें पकड़ा गया था ।

'संसद मार्ग पर स्थित पुलिस स्टेशन के अपने सेल में मदनलाल अब अपने कुख्यात होने की क़ीमत अदा करता दिख रहा था । थके-मांदे उसने उन तीन पुलिसकर्मियों के सामने सच्चाई को उगलना शुरू किया, जो पिछले दो घंटे से उससे पूछताछ कर रहे थे । ...उसने क़बूला कि वह कोई पागल पंजाबी शरणार्थी नहीं है जो अकेले ही इस मुहिम में जुटा था बल्कि एक हत्यारों के समूह का हिस्सा है । उसने इस साज़िश में शामिल लोगों की संख्या भी बतायी–सात । उन्होंने गांधी को मारने की योजना इसलिए बनायी क्योंकि 'वह शरणार्थियों पर दबाव डाल रहे थे कि वह मस्जिदों को ख़ाली कर दे, वह पाकिस्तान को उसके रुपये देने के लिए ज़िम्मेदार है और हर तरीक़े से मुसलमानों की मदद करते रहते हैं...।

अधिकतर पढ़े-लिखे लोग भी इस हक़ीक़त से परिचित ही नहीं रहते हैं कि तीस के दशक के मध्य से ही जब आज़ादी का आन्दोलन अपने उरूज़ पर था तभी से हिन्दुत्ववादी जमाअतें गांधी हत्या के षड्यंत्र में मुब्तिला थीं और उन्हें मारने की एक दो नहीं बल्कि छह कोशिशें हुई थीं, जिनमें से दो कोशिशों में नाथुराम गोडसे खुद शामिल था ।

फिर स्वतंत्रता सेनानी भिलारे गुरुजी को कौन जानेगा जिन्होंने गोडसे की एक ऐसी ही कोशिश को विफल किया था, जब वह छूरा लेकर गांधी को मारने दौड़ा था ।

स्विस बैंक और स्विट्ज़रलैंड की जनता

नाम तो आपने सुना ही होगा 'स्विट्जरलैंड' ।

ऐसा देश जहां अधिकतर शादीशुदा जोड़े अपना हनीमून मनाने के ख़्वाब देखते हैं ।

बर्फ़ीली वादियों से ढका यह देश सुंदरता की अद्भुत कृति है । हरियाली हो या बर्फ़, आंखे जिधर भी जाएं पलक झपकाना भूल जाएं ।

दुनिया के सबसे सम्पन्न देशों में से है स्विट्ज़रलैंड! आइये सुनते हैं इस सम्पन्न देश की एक रोचक कहानी–

आज से लगभग 50 साल पहले स्विट्ज़रलैंड में एक प्राइवेट बैंक की स्थापना हुई जिसका नाम था 'स्विस बैंक'।

'उस बैंक के नियम दुनिया की अन्य बैंकों से भिन्न थे।

स्विस बैंक अपने ग्राहकों से उसके पैसे के रख-रखाव और गोपनीयता की क़ीमत वसूल करता था और साथ ही गोपनीयता की गारंटी देता था ।

न ग्राहक से पूछना की पैसा कहां से आया ? न कोई और सवाल न कोई बाध्यता ।

साल भर में उस बैंक की ख्याति विश्व भर में फैल गयी । यह बैंक चोर, बेईमान नेता, माफ़िया, तस्कर और बड़े व्यावसायी, सबकी पहली पसन्द बन गया ।

बैंक का एक ही नियम था । खाताधारक को रिचार्ज कार्ड की तरह एक नम्बर दिया जाता, साथ ही एक पासवर्ड भी दिया जाता था, बस ।

जिसके पास वह नम्बर होगा बैंक उसी को जानता था । न डिटेल मांगा जाता, न आगे-पीछे की पूछताछ होती।

लेकिन ! बैंक का एक नियम और था कि अगर सात साल तक कोई लेन-देन नहीं हुआ या खाते को सात साल तक नहीं छेड़ा गया तो बैंक खाता सीज कर लेगा और रक़म पर अधिकार जमा लेगा । यानी सात वर्ष तक लेन-देन न होने की सूरत में रक़म बैंक की हो जाएगी ।

अब रोज़ दुनिया भर में न जाने कितने माफ़िया मारे जाते हैं । नेता पकड़े जाते हैं । कितने तस्कर पकड़े या मारे जाते है, कितनों को उम्रक़ैद होती है ।

ऐसी स्थिति में न जाने कितने ऐसे खाते थे जो बैंक में सीज़ हो चुके थे ।



सन 2000 की नयी सदी के अवसर पर बैंक ने ऐसे खातों को खोला तो उनमें मिला कालाधन पूरी दुनिया के 40 प्रतिशत काले धन के बराबर था ।

पूरी दुनिया का लगभग आधा कालाधन ।

ये रक़म हमारी कल्पना से बाहर हैं ।

शायद बैंक भी नहीं समझ पा रहा था कि क्या किया जाए इस रक़म का । क्या करें, क्या करें । ये सोचते-सोचते बैंक ने एक घोषणा की और पूरे स्विट्ज़रलैंड के नागरिकों से राय मांगी की इस रक़म का क्या किया जाए ।

साथ ही बैंक ने कहा कि देश के नागरिक चाहें तो ये रक़म बैंक उनमें बांट सकता है । इससे प्रत्येक नागरिक को एक करोड़ डॉलर की रक़म मिल सकती है ।

सरकार की तरफ़ से 15 दिन चले सर्वे में 99.2 प्रतिशत लोगों की राय थी कि इस रक़म को देश की सुंदरता बढ़ाने में और विदेशी पर्यटकों की सुख सुविधाओं और विकास में ख़र्च किया जाए ।

सर्वे के नतीजे हम भारतीयों के लिए चौंकाने वाले हैं । लेकिन स्विट्ज़रलैंड की जनता के लिए ये साधारण बात थी । उन्होंने हराम के पैसों को नकार दिया ।

चौंकाने वाला काम दूसरे दिन हुआ ।

25 जनवरी 2000 को स्विट्ज़रलैंड की जनता बैनर लेकर सरकारी सर्वे चैनल के बाहर खड़ी थी ।

उनका कहना था जो 0.8 प्रतिशत लोग मुफ़्त की दौलत हथियाना चाहते हैं, उनके नाम सार्वजनिक किये जाएं। ये समाज पर बोझ और देश के लिए कलंक हैं ।

जब सरकार ने मुफ़्त की मांग करने वालों को दंडित करने का आश्वासन दिया, तब जनता शांत हुई ।

कैसी थी दुनिया की पहली पेंसिल?

दोस्तों क्या आप जानते हैं कि आपकी पढ़ाई की साथी आपकी पेंसिल का सबसे पहला रूप कैसा था ? दुनिया की पहली पेंसिल ग्रेफाइट छड़ों का एक गुच्छा मात्र थी जिन्हें एक डोरी से बांधा गया था। इसके बाद किसी ने सोचा कि ग्रेफाइट छड़ को एक लकड़ी की खोखली छड़ के अंदर रखना चाहिए।

जोसेफ रिचेंडॉरफर पहले व्यक्ति थे जिन्होंने पेंसिल के टॉप पर रबर लगाने के बारे में सोचा। ताकि लिखते वक़्त हुई ग़लतियों को आसानी से ठीक किया जा सके।

क्या आप जानते हैं कि आपकी एक पेंसिल से आप 35 मील लंबी लाइन खींच सकते हैं या अंग्रेज़ी के 50,000 शब्द लिख सकते हैं।

मछली ले सकती है आपकी जान

यूं तो मछली में वे सभी आवश्यक अमीनो अम्ल होते हैं जो किसी भी मनुष्य के जीने के लिए आवश्यक होते हैं।

लेकिन अगर सिर्फ़ मछली को ही अपने आहार में शामिल करें तो यह आपकी जान के लिए घातक हो सकता है।

क्योंकि मछली में विटामिन 'सी' नहीं होता और विटामिन 'सी' मनुष्य की रोग प्रतिरोधक क्षमता के लिए प्रमुख रूप से ज़िम्मेदार होता है।

जनरल नॉलेज : पक्षियों के बारे में

- पक्षियों के कंकाल का भार उनके पंखों से कम होता है।
- एक मुर्ग़े के शरीर में 75 प्रतिशत पानी होता है।
- शुतुरमुर्ग़ की आंख का आकार उसके दिमाग़ से बड़ा होता है।
- शुतुरमुर्ग़ के अंडे का भार साढ़े तीन पाउंड होता है।
- कोकाटूस और मकाऊ सबसे बड़े तोते हैं ये 75 साल तक जीते हैं।
- विश्व भर में तोते की 328 प्रजातियां पायी जाती हैं।
- चॉकलेट्स तोते के लिए ज़हर समान होती हैं।
- हमिंग बर्ड अकेली ऐसी पक्षी है जो विपरीत दिशा में उड़ सकती है।
- हमिंग बर्ड का दिल एक मिनट में 615 बार धड़कता है।
- उल्लुओं के दांत नहीं होते हैं।
- मादा उल्लू नर उल्लू से आकार और भार में बड़ी होती है।
- बाज के पंख एक हवाई जहाज़ के पंख से ज़्यादा शक्तिशाली होते हैं।
- उत्तेजित होने पर टर्कि अपने सिर का रंग बदलती है।
- कबूतर पराबैंगनी किरणों को देखने में सक्षम हैं।
- हम सामान्यत: पक्षियों के झुंड को वी अक्षर के आकार में उड़ते हुए देखते हैं। ऐसा करने से उन्हें ऊर्जा बचाने में सहायता मिलती है।
- कीवी विश्व का अकेला ऐसा पक्षी है जिसके पंख नहीं होते।
- आर्कियोप्टेरिक्स सबसे पुराना पक्षी है।
- ऑस्ट्रेलियाई पेलिकन की चोंच सारे पक्षियों में सबसे बड़ी है।
- बाज की नज़र बहुत पैनी होती है, वह एक मील की ऊंचाई से चूहे की स्थिति को सही-सही देख सकता है।
- कौवे अन्य जंतुओं की आवाज़ की नक़ल करने में सक्षम होते हैं।
- सूटी टर्न ऐसा पक्षी है, जो लगातार 3-4 घंटे उड़ सकता है।

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि०), D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट प्रेस, 2035, क़ासिम जान स्ट्रीट, बल्लीमारान, दिल्ली-110006 से मुद्रित। फ़ोन : 011-26949430, 09818799223

संपादक : डॉ० मुहम्मद अहमद

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णत: प्रतिबंधित है।

KANTI

Current A/c. No. :0990839195

IFS Code : IDIB000J029

Indian Bank, Jamia Millia Islamia branch

New Delhi 110025

कृपया पैसा जमा करने के बाद फोन न. 011-26949430, मोबाइल न. 9818799223 या ई मेल : managerkantidelhi@gmail.com पर अवश्य सूचित करें।



BISMILLA FISHERIES

Near Zuari Acid Tank, Vasco-da-Gama, GOA

Ph. : 0832-Off. : 518634/513240/518786, Res. : 514587, Mobile : 9822123919

Posted on 20-21 September 2019
October 2019
Posted Delhi RMS Delhi-110006
E-mail: kantihindimonthly@yahoo.com
Publishing Date: 18.09.2019
Total pages 52 with Cover

कान्ति

हिन्दी भाषियों की साहित्यिक पत्रिका
NEW DELHI-110025

RNI 53372/91
DL(S)-05/3147/2018-2020
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U (SE)-73/2018-2020

بسم الله الرحمن الرحيم

"हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि॰) से उल्लिखित है कि अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने फ़रमाया–"क़यामत के दिन मेरे साथ रहने का सबसे ज़्यादा हक़दार वह होगा, जो मुझ पर सबसे ज़्यादा दुरूद भेजेगा।"
(तिरमिज़ी)

ICON INTERNATIONAL

TOPSIA, KOLKATA